इटली की लोक कथाऐं–2

अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title : Italy Ki Lok Kathayen-2 (Folktales of Italy-2)
Cover Page picture: Colosseum, Rome, Italy
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोक कथाऐं–2

इटली देश यूरोप महाद्वीप के दक्षिण पश्चिम की तरफ भूमध्य सागर के उत्तरी तट पर स्थित है। पुराने समय में यह एक बहुत ही शक्तिशाली राज्य था। रोमन साम्राज्य अपने समय का एक बहुत ही मशहूर राज्य रहा है। उसकी सभ्यता भी बहुत पुरानी है – करीब **3000** साल पुरानी। इसका रोम शहर **753** बी सी में बसाया हुआ बताया जाता है पर यह इटली की राजधानी **1871** में बना था। इटली में कुछ शहर बहुत मशहूर हैं – रोम, पिसा, फ्लौरैन्स, वेनिस आदि। यहाँ की टाइबर नदी बहुत मशहूर है। यूरोप में लोग केवल लन्दन, पेरिस और रोम शहर ही घूमने जाते हैं।

रोम में रोम का कोलोज़ियम और वैटिकन सिटी में वहाँ का अजायबघर सबसे ज़्यादा देखे जाते हैं। पिसा में पिसा की झुकती हुई मीनार संसार के आदमी द्वारा बनाये गये आठ आश्चर्यों में से एक है। इटली का वेनिस शहर नहरों में बसा हुआ एक शहर[1] है। इस शहर में अधिकतर लोग इधर से उधर केवल नावों से ही आते जाते हैं। यहाँ कोई कार नहीं है कोई सड़क पर चलने वाला यातायात का साधन नहीं है, केवल नावें हैं और नहरें हैं। शायद तुम्हें मालूम नहीं होगा कि असल में वेनिस शहर कोई शहर नहीं है बल्कि **118** द्वीपों को पुलों से जोड़ कर बनाया गया जमीन का एक टुकड़ा है इसलिये ये नहरें भी नहरें नहीं हैं बल्कि समुद्र का पानी है और वह समुद्र का पानी नहर में बहता जैसा लगता है।

इटली का रोम कैसे बसा? कहते हैं कि रोम को बसाने वाला वहाँ का पहला राजा रोमुलस था। रोमुलस और रेमस दो जुड़वाँ भाई थे जो एक मादा भेड़िया का दूध पी कर बड़े हुए थे। दोनों ने मिल कर एक शहर बसाने का विचार किया पर बाद में एक बहस में रोमुलस ने रेमस को मार दिया और उसने खुद राजा बन कर **7** अप्रैल **753** बीसी को रोम की स्थापना की। इटली के रोम शहर में संसार का मशहूर सबसे बड़ा कोलोज़ियम[2] है जहाँ **5000** लोग बैठ सकते हैं। पुराने समय में यहाँ लोगों को सजाऐं दी जाती थीं।

इटली के अन्दर वैटीकन सिटी है जो ईसाई धर्म के कैथोलिक लोगों का घर है पर यह एक अपना अलग ही देश है। वहाँ इसके अपने सिक्के और नोट हैं। इसकी अपनी सेना है। पोप इस देश का राजा है। इसका अजायबघर बहुत मशहूर है। यह संसार का सबसे छोटा देश है क्षेत्र में भी और जनसंख्या में भी – **842** आदमी केवल **4** वर्ग मील के क्षेत्र में बसे हुए।

इटली की बहुत सारी लोक कथाऐं हैं। इटली की सबसे पहली लोक कथाऐं **1353** में लिखी गयी थीं दूसरी **1550** में और तीसरी **1634** में लिखी गयी थी।[3] इतालो कैलवीनो[4] का लोक कथाओं का यह संग्रह जिसमें से हमने ये लोक कथाऐं ली हैं इटैलियन भाषा में **1956** में संकलित कर के प्रकाशित किया गया था। इनका सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद **1962** में छापा गया। उसके बाद सिलविया मल्कही[5] ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1975** में प्रकाशित किया। फिर मार्टिन ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1980** में किया। ये लोक कथाएँ हम मार्टिन की पुस्तक से ले कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये यहाँ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी।

---

[1] City of Canals

[2] Colosseum

[3] There are three the earliest, main and very famous books from Italy – Decamerone (1353 – first translation by John Payne published in 1886), Nights of Straparola (1550), Pentamerone (1634),

[4] "Italian Folktales" by Italo Calvino, 1965. This book was translated by George Martin. San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 300 p.

[5] Sylvia Mulcahy

इतालो ने इस पुस्तक में दो सौ लोक कथाऐं संकलित की हैं। हमने उन दो सौ लोक कथाओं में से एक सौ पच्चीस लोक कथाऐं चुनी हैं। फिर भी क्योंकि वे बहुत सारी लोक कथाऐं हैं इसलिये वे सब पढ़ने की आसानी के लिये एक ही पुस्तक में नहीं दी जा रही हैं। ये सब लोक कथाऐं पुस्तक में लिखी हुए क्रम से ही यहाँ दी गयीं हैं। इस पुस्तक के पहले संकलन यानी "इटली की लोक कथाऐं–1" में इतालो की पुस्तक की **1–23** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं। इस दूसरे भाग में उसकी **24–57** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी जा रही हैं।

आशा है कि इटली की ये सब कथाऐं आप सबको बहुत मजेदार लगेंगी।

1 तीन मकान[6]

एक बार एक बहुत ही गरीब स्त्री थी। उसकी तीन बेटियाँ थीं। जब वह मरने वाली थी तो उसने अपनी तीनों बेटियों को अपने पास बुलाया और बोली — "मेरी प्यारी बेटियों, अब मेरे मरने में ज़्यादा देर नहीं है। मैं तुम लोगों को अकेला छोड़ कर जा रही हूँ।

जब मैं मर जाऊँ तो तुम अपने चाचाओं को बुला लेना और उनसे कहना कि वे तुम्हारे रहने के लिये एक एक छोटा घर बनवा दें। तुम लोग उनमें रह सकती हो। एक दूसरे के साथ आपस में प्यार से रहना तो आराम से और सुरक्षित रहोगी।"

इतना कह कर उसने आखिरी साँस ली और मर गयी। उसकी तीनों बेटियाँ बहुत ज़ोर से रो पड़ीं।

अपनी माँ का अन्तिम संस्कार कर के फिर वे उस घर से बाहर चली गयीं जहाँ उनको उनका एक चाचा मिला जो चटाइयाँ बुनता था।

सबसे बड़ी लड़की कैथरीन[7] बोली — "चाचा जी, चाचा जी, हमारी माँ अभी अभी मर गयी है। आप तो बहुत रहमदिल हैं क्या आप मेरे लिये अपने बचे हुए भूसे से एक मकान बना देंगे?"

[6] The Three Cottages. Tale No 24. A folktale from Italy from its Mantua area.
[7] Catherine – the name of the eldest sister

सो उनके उस चटाई बुनने वाले चाचा ने बचे हुए भूसे से उसके लिये एक मकान बना दिया और वह उस मकान में रहने चली गयी।

दूसरी दोनों बहिनें और आगे चलीं तो उनको उनका एक और चाचा मिला जो बढ़ई था। बीच वाली बहिन जूलिया[8] ने उससे कहा — "चाचा जी, चाचा जी, हमारी माँ अभी अभी मर गयी है। आप तो बहुत रहमदिल हैं क्या आप मेरे लिये एक लकड़ी का मकान बना देंगे?"

उस बढई ने उस लड़की के लिये लकड़ी का एक घर बना दिया और वह लड़की उस लकड़ी के मकान में रहने चली गयी।

अब केवल सबसे छोटी बेटी मरीटा[9] बच रही थी। वह आगे बढ़ी तो उसको भी उनके एक चाचा मिले। उनके यह चाचा लुहार थे।

उसने उनसे कहा — "चाचा जी, चाचा जी, हमारी माँ अभी अभी मर गयी है। आप तो बहुत रहमदिल हैं क्या आप मेरे लिये एक लोहे का मकान बना देंगे?"

सो उस लुहार ने उसके लिये एक लोहे का मकान बना दिया और वह उस लोहे के मकान में रहने चली गयी। अब तीनों अपने अपने मकान में आराम से रहने लगीं।

[8] Julia – the name of the second sister.

[9] Marietta – the name of the youngest sister.

एक दिन एक शाम को एक भेड़िया बाहर निकला। वह कैथरीन के घर की तरफ गया और उसका दरवाजा खटखटाया।

कैथरीन ने पूछा — "कौन है?"

"मैं एक बहुत छोटी सी चीज़ हूँ। मैं बहुत भीग गया हूँ। मुझे बहुत ठंड लग रही है मुझे अन्दर आने दो।"

"भाग जाओ यहाँ से। तुम तो भेड़िये हो और मुझे खाना चाहते हो।"

भेड़िये ने उस भूसे के मकान की दीवार को एक धक्का दिया और उस मकान के अन्दर घुस गया और कैथरीन को खा लिया।

अगले दिन दोनों छोटी बहिनें कैथरीन से मिलने गयीं तो उन्होंने देखा कि उसके मकान के भूसे को पीछे धकेला गया है और वह मकान तो खाली है।

"उफ़ कितनी बुरी बात है। हमारी बड़ी बहिन को जरूर ही भेड़िये ने खा लिया है।"

शाम को वह भेड़िया फिर से वापस आया और बीच वाली बहिन जूलिया के घर गया। वहाँ जा कर उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया।

जूलिया ने पूछा — "कौन है?"

"एक छोटी सी चीज़ जो रास्ता भूल गयी है। मेहरबानी कर के मुझे अपने घर में शरण दो।"

“नहीं, तुम तो भेड़िये हो और अबकी बार तो तुम मुझे खा ही जाओगे।”

भेड़िये ने उस लकड़ी के मकान को एक हल्का सा धक्का दिया तो उसका दरवाजा खुल गया। उस मकान में घुस कर उसने जूलिया को भी तुरन्त ही खा लिया।

अगली सुबह जब मरीटा जूलिया के घर गयी तो उसको पता चला कि उसको भी भेड़िया खा गया है। उसने अपने आपसे कहा — “उफ़, भेड़िये ने उसे भी खा लिया। बेचारी मैं, अब मैं तो दुनियाँ में अकेली रह गयी।”

शाम को वह भेड़िया मरीटा के घर गया और उसका दरवाजा खटखटाया।

मरीटा ने पूछा — “कौन है?”

“एक छोटी सी चीज़ जो ठंड के मारे अधजमा हो गया हूं और मरा जा रहा हूँ।”

मरीटा बोली — “तुम भाग जाओ यहाँ से। तुमने मेरी दो बहिनों को तो खा लिया है और अब तुम मुझे भी खाना चाहते हो। मुझे सब पता है।”

भेड़िये ने उसके मकान के दरवाजे में भी धक्का मारा पर वह दरवाजा तो उसके बाकी लोहे के घर की तरह से मजबूत था सो वह दरवाजा तो उससे नहीं टूटा पर उससे उसका कन्धा जरूर टूट गया।

चीखता चिल्लाता वह लोहार के घर की तरफ दौड़ा गया और उससे बोला — "मेरा कन्धा ठीक करो।"

लोहार बोला — "मैं लोहा ठीक करता हूँ हड्डियाँ नहीं।"

भेड़िये ने बहस की — "पर मेरी हड्डियाँ तो लोहे से टूटी हैं इसलिये अब ये तुम्हीं को ठीक करनी हैं।"

यह सुन कर लोहार ने अपना हथौड़ा और कीलें उठायीं और भेड़िये का कन्धा जोड़ दिया।

अपना कन्धा ठीक करा कर भेड़िया मरीटा के पास वापस लौटा और बन्द दरवाजे में से ही पुकारा — "ओह प्यारी मरीटा, तुमने मेरा कन्धा तोड़ दिया कोई बात नहीं पर मैं तुमको अभी भी उतना ही प्यार करता हूँ।

अगर तुम कल सबेरे मेरे साथ चलोगी तो मैं तुमको मटर के बागीचे में ले चलूँगा जो यहाँ से पास में ही है।"

"ठीक है जब तुम तैयार हो जाओ तब मेरे पास आ जाना।"

पर वह लड़की बहुत होशियार थी। उसको पता था कि वह भेड़िया केवल उसको घर से बाहर निकालने की कोशिश कर रहा था ताकि उसकी बहिनों की तरह से वह उसको भी खा सके।

अगले दिन वह सुबह जल्दी ही उठ गयी और अपने आप अकेली ही मटर के बागीचे में चली गयी। वहाँ से उसने बहुत सारी मटर तोड़ीं और उनको अपने ऐप्रन में भर कर घर आ गयी।

घर आ कर उसने उन मटरों के छिलकों को तो अपनी खिड़की से बाहर फेंक दिया और मटरों को पकने के लिये रख दिया।

भेड़िया उसके पास सुबह नौ बजे आया और बोला — "ओ प्यारी मरीटा, चलो मटर के बागीचे चलें।"

मरीटा बोली — "नहीं, ओ बेवकूफ नहीं, मुझे नहीं जाना। मैंने तो मटर पहले ही तोड़ ली हैं। क्या तुमको मेरी मटर के छिलके खिड़की के नीचे पड़े दिखायी नहीं दे रहे? ज़रा एक लम्बी साँस खींच कर तो देखो तो तुमको उनके पकने की खुशबू भी आयेगी और फिर तुम होंठ चाटते रह जाओगे।"

भेड़िया यह सुन कर अपना सा मुँह ले कर रह गया पर फिर भी बोला — "ओह कोई बात नहीं। मैं कल सुबह फिर आऊँगा तब हम लोग लूपिन[10] तोड़ने चलेंगे।"

"ठीक है कल मैं तुम्हारा सुबह नौ बजे इन्तजार करूँगी।"

पर इस बार भी वह जल्दी उठी और लूपिन के बगीचे में जा कर ऐप्रन भर कर लूपिन तोड़ लायी। लूपिन ला कर उसने उनको भी पकाने के लिये रख दिया।

[10] Lupin – a plant of pea family found throughout the Mediterranean and especially on the prairies of Western North America. Many are grown as ornamentals in the US, while some are useful as cover or forage crops. Pods grow on this plant and peas like seeds come out of those on breaking them. Read more about it at http://www.lupins.org/products/

जब भेड़िया सुबह नौ बजे आया और मरीटा को लूपिन तोड़ने के लिये बुलाया तो उसने उसको अपनी खिड़की के नीचे पड़े उनके छिलके दिखा दिये।

इस बार भेड़िये को गुस्सा आ गया उसने सोचा कि वह उस लड़की से अपनी इस बेइज़्ज़ती का बदला जरूर लेगा पर प्रगट में उसने उससे कहा — "ओ शरारती लड़की, तूने मुझे बेवकूफ बनाया और देख मैं तो तुझे कितना पसन्द करता हूँ।

ऐसा करते हैं कल तू सुबह तैयार रहना मैं तुझको अपनी जानी पहचानी जगह ले चलूँगा। वहाँ हम लोगों को बहुत ही अच्छे काशीफल मिलेंगे। फिर हम उनकी एक बढ़िया दावत करेंगे।"

मरीटा बोली — "ओह यह तो बड़ा अच्छा है। मैं यकीनन आऊँगी।" सो हर बार की तरह से अगली सुबह भी मरीटा दिन निकलने से पहले ही काशीफल के बागीचे की तरफ भाग गयी।

पर इस बार उस भेड़िये ने भी नौ बजे का इन्तजार नहीं किया। वह भी नौ बजे से पहले ही पहले काशीफल के बागीचे में मरीटा को खाने जा पहुँचा।

जैसे ही मरीटा ने भेड़िये को दूर से देखा तो उसने जल्दी से एक काशीफल का गूदा निकाल कर उसको खोखला किया और उसके अन्दर दुबक कर बैठ गयी। क्योंकि उसके पास छिपने की या कहीं भागने की और कोई जगह ही नहीं थी।

वह भेड़िया आदमी के माँस की बू को सूँघते हुए और सब काशीफलों को सूँघते सूँघते इधर उधर घूमता रहा पर मरीटा का उसे कहीं पता नहीं चल पा रहा था।

फिर उसने सोचा कि हो सकता है मरीटा मुझसे पहले ही घर पहुँच गयी हो तो अब मैं अपनी ही काशीफल की दावत कर लूँगा। सो उसने काशीफलों को दाँये से बाँये से खाना शुरू किया।

जब वह भेड़िया मरीटा के काशीफल के पास आया तो मरीटा काँप उठी कि अब तो वह भेड़िया उस काशीफल के साथ साथ उसके अन्दर की मरीटा को भी खा लेगा।

तभी भेड़िया मरीटा के काशीफल की तरफ आ गया और बोला — "मैं इस बड़े काशीफल को मरीटा के घर ले चलता हूँ और इसको उसे भेंट में दे दूँगा। इससे वह मेरी दोस्त हो जायेगी।"

सो उसने उसी काशिफल में अपने दाँत गड़ाये जिसमें मरीटा बैठी थी और उसको ले कर मरीटा के लोहे के मकान की तरफ भाग लिया। वहाँ जा कर उसने वह काशीफल उसके मकान की खिड़की की तरफ फेंक दिया।

और चिल्लाया — "मरीटा, ओ मेरी प्यारी मरीटा। देख मैं तेरे लिये कितनी सुन्दर भेंट लाया हूँ।"

उधर मरीटा सुरक्षित रूप से उस काशीफल में से बाहर निकल आयी और उसने घर में अन्दर घुस कर अपनी खिड़की बन्द कर ली और अन्दर से ही भेड़िये की तरफ देख देख कर मुँह बनाने लगी।

फिर बोली — "धन्यवाद मेरे दोस्त, मैं तो काशीफल में ही छिपी थी। अच्छा हुआ जो तुम मुझे मेरे घर तक मुझे उठा कर ले आये।" भेड़िये ने जब यह सुना तो वह अपना सिर चट्टान पर पटकने लगा।

उस रात बहुत बर्फ पड़ी। मरीटा आग के पास बैठी उसकी गर्मी ले रही थी कि उसने चिमनी में कुछ शोर सुना। उसने सोचा कि लगता है कि यह तो भेड़िया मुझे खाने आ रहा है।

सो उसने एक बड़े से बर्तन में पानी भरा और आग के ऊपर उसको उबलने के लिये लटका दिया।

धीरे धीरे भेड़िया चिमनी में नीचे उतरा और फिर वहाँ से उस जगह कूदा जहाँ उसने सोचा कि मरीटा बैठी होगी।

पर यह क्या? वह तो मरीटा के ऊपर नहीं बल्कि उबलते पानी के बर्तन के ऊपर गिर गया था। वह वहीं उस उबलते पानी में जल कर मर गया।

इस तरह से चालाक मरीटा अपने आपको दुश्मन से बचा पायी और फिर सारी ज़िन्दगी शान्ति से रही।

2 किसान ज्योतिषी[11]

एक बार एक राजा की बड़ी कीमती अँगूठी खो गयी। उसने उसको सब जगह ढूँढ लिया पर वह उसे कहीं भी नहीं मिली।

सो उसने ऐलान करवा दिया कि अगर कोई ज्योतिषी यह बतायेगा कि उसकी अँगूठी कहाँ है तो वह उसको ज़िन्दगी भर के लिये मालामाल कर देगा।

अब वहाँ एक किसान भी रहता था जिसका नाम था गैम्बारा[12]। वह बहुत ही गरीब था। उसके पास बिल्कुल भी पैसे नहीं थे। वह पढ़ा लिखा भी नहीं था।

उसने सोचा — "क्या ज्योतिषी बनने का बहाना करना बहुत मुश्किल होगा? मुझे लगता है कि कम से कम मुझे ज्योतिषी बनने की कोशिश तो करनी चाहिये।" यही सोच कर वह राजा के पास चला।

वहाँ जा कर उसने राजा को बताया कि वह एक ज्योतिषी था और राजा की अँगूठी का पता बताने के लिये आया था। तो राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उसका कहा मान गया। उसने उसको एक कमरा दे दिया ताकि वहाँ वह शान्ति से बैठ कर पढ़ लिख कर उसकी अँगूठी का पता बता सके।

---

[11] The Peasant Astrologer. Tale No 25. A folktale from Italy from its Mantua area.

[12] Gambara – the name of the peasant

उस कमरे में सिवाय एक चारपाई, एक मेज पर रखी बहुत बड़ी ज्योतिष की किताब, कागज, कलम और दवात के अलावा और कुछ नहीं था।

गैम्बारा मेज पर बैठ गया और बिना एक भी शब्द समझे बूझे उस किताब के पन्ने पलटने लगा। कभी कभी वह उस किताब पर कलम से कुछ निशान भी बनाता जाता था।

वह क्योंकि पढ़ना लिखना तो जानता नहीं था इसलिये उसने उस किताब पर जो निशान बनाये थे वे तो बस निशान ही थे उनका कोई मतलब तो था नहीं। उसको ज्योतिष जानने का कुछ न कुछ तो बहाना करना ही था।

जब राजा के नौकर उसका दोपहर का और शाम का खाना ले कर आते थे तो जिस तरीके से वह किताब खोल कर रखता था और उस पर निशान बनाता था उससे उनको लगता था कि वह एक बहुत बड़ा ज्योतिषी था।

उधर गैम्बारा के मन में भी चोर था क्योंकि वह ज्योतिषी तो था नहीं सो वह भी जब वे उसके कमरे में आते थे कनखियों से उनकी तरफ देखता रहता था कि कहीं उनको उसका राज़ पता न चल जाये।

असल में ये ही वे नौकर थे जिन्होंने राजा की अँगूठी चुरायी थी सो जब भी गैम्बारा उनकी तरफ देखता तो उनको यह लगता कि वह उनको शक की निगाहों से देख रहा है जबकि वह तो उनको

साधारण तरीके से ही उनकी तरफ देखता था क्योंकि उसको तो कुछ पता ही नहीं था – न तो ज्योतिष का और न ही चोरों का।

और उन नौकरों को यह लग रहा था कि गैम्बारा अपनी विद्या में बहुत होशियार है सो डर के मारे वे बेचारे ठीक से उसके आगे झुक भी नहीं सकते थे। उनको हमेशा ही यह लगता रहता कि कब वह अपनी ज्योतिष विद्या से उनको पहचान न जाये।

वे बेचारे "ओ ज्योतिषी, आपकी छोटी से छोटी इच्छा भी हमारे लिये आपका हुक्म है।" कह कर डर के मारे जल्दी से वहाँ से चले जाते।

अब गैम्बारा काई ज्योतिषी तो था नहीं और पढ़ा लिखा भी नहीं था पर किसान था इसलिये चालाक था। उसको कुछ शक हो गया कि ये नौकर अँगूठी के बारे में जरूर कुछ जानते हैं तभी ये लोग इस तरीके से बर्ताव कर रहे हैं सो उसने उनके लिये एक जाल बिछाया।

एक दिन जब उनमें से एक नौकर उसके लिये दोपहर का खाना ले कर आया तो वह अपनी चारपाई के नीचे छिप गया। नौकर जब उसके कमरे के अन्दर आया तो उसने कमरे में किसी को नहीं देखा।

गैम्बारा चारपाई के नीचे से ज़ोर से चिल्लाया — "यह उनमें से एक है। यह उनमें से एक है।" यह सुनते ही नौकर ने खाने की थाली नीचे रखी और डर के मारे भाग गया।

अब दूसरा नौकर आया तो उसने भी कुछ ऐसी ही आवाज सुनी जैसे वह जमीन के नीचे से आ रही हो — "यह उनमें से दूसरा है। यह उनमें से दूसरा है।" यह सुनते ही वह दूसरा नौकर भी भाग गया।

फिर तीसरा नौकर कमरे में आया तो वह चिल्लाया — "यह उनमें से तीसरा है। यह उनमें से तीसरा है।" यह सुन कर वह नौकर भी भाग गया।

अब तीनों नौकरों ने आपस में बात की — "लगता है कि इस ज्योतिषी को हमारी चोरी के बारे में पता चल गया है। अब अगर यह ज्योतिषी राजा को हमारे बारे में बता देता है तो हमारी तो नौकरी ही खत्म।"

सो उन लोगों ने उस ज्योतिषी के पास जाने का निश्चय किया और अपनी चोरी की बात मान लेने का फैसला किया। वे तीनों उस ज्योतिषी के पास गये।

उन्होंने शुरू किया — "हम लोग गरीब आदमी हैं। जो कुछ भी आपने मालूम किया है अगर आप वह राजा साहब से कह देंगे तो हम तो कहीं के नहीं रहेंगे। आप सोने से भरा हुआ यह बटुआ ले लीजिये और हमें छोड़ दीजिये।"

गैम्बारा ने वह बटुआ तो उनसे ले लिया और बोला — "मैं तुमको नहीं पकड़वाऊँगा पर इस शर्त पर कि तुम लोग जैसा मैं कहूँ वैसा ही करोगे।" वे चोर राजी हो गये।

गैम्बारा फिर बोला — "तुम ॲगूठी लो और उस टर्की को बाहर खेत में निकाल कर उसको यह ॲगूठी निगलवा दो। उसके बाद तुम सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो मैं देख लूँगा।" नौकरों ने वैसा ही किया।

अगले दिन गैम्बारा राजा के पास गया और बोला कि काफी कुछ पढ़ने के बाद मैं यह जान गया हूँ कि वह ॲगूठी कहाँ है।

राजा खुश हो कर बोला — "कहाँ है?"

"एक टर्की ने उसको निगल लिया है।"

हालाँकि ज्योतिषी की बात पर राजा को विश्वास तो नहीं हुआ कि कोई टर्की मेरी ॲगूठी कैसे निगल सकती है पर फिर भी उसने उस टर्की को अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

वह टर्की राजा के सामने लायी गयी और उसको काटा गया तो उसमें से ॲगूठी निकल आयी।

इसके बदले में राजा ने ज्योतिषी को बहुत सारी दौलत दी और साथ में एक दावत भी दी जिसमें उसने अपने राज्य के और आस पास के राज्यों के बहुत सारे लोग बुलाये थे।

बहुत सारी खाने की चीज़ों में एक गैम्बैरी[13] भी पकायी गयी थी। गैम्बैरी केफ़िश का दूसरा नाम है।

[13] Gamberi is the other name of crayfish, See the picture of crayfish above.

क्रेफ़िश को उस देश में कोई जानता नहीं था। असल में दूसरे देशों को लोग उसको उस देश के राजा के लिये वह भेंट में ले कर आये थे और वहाँ के लोग इस मछली को पहली बार देख रहे थे।

राजा उस किसान से बोला — "तुम तो ज्योतिषी हो तुम बताओ कि इस प्लेट में रखी यह क्या चीज़ है।"

बेचारा किसान जिसने उसको पहले कभी सुना नहीं कभी देखा नहीं था अपने आप में बुदबुदाया — "आह गैम्बारा, गैम्बारा, आज तू मारा गया।"

राजा जो उस ज्योतिषी का असली नाम नहीं जानता था ख़ुशी से चिल्लाया — "बहुत अच्छे, बहुत अच्छे ज्योतिषी। तुमने ठीक जाना। इसका नाम गैम्बैरी ही है। तुमसे बड़ा ज्योतिषी तो इस दुनियाँ में कोई है ही नहीं।"

3 भेड़िया और तीन लड़कियाँ[14]

एक बार तीन लड़कियाँ एक ही शहर में काम करती थीं। एक दिन उनको खबर मिली कि उनकी माँ जो बोरगोफ़ोर्ट[15] में रहती थी बहुत बीमार थी।

सो सबसे बड़ी बहिन ने दो टोकरी में चार शराब की बोतलें रखीं और चार केक रखीं और अपनी माँ को देखने के लिये बोरगोफ़ोर्ट की तरफ रवाना हो गयी।

रास्ते में उसको एक भेड़िया मिला। उसने उससे पूछा — "तुम इतनी जल्दी में कहाँ भागी जा रही हो?"

"मैं बोरगाफ़ोर्ट जा रही हूँ अपनी माँ को देखने के लिये। वह बहुत बीमार है।"

"उन टोकरियों में क्या है?"

"चार बोतलें शराब की और चार केक।"

"उनको मुझे दे दो वरना... अगर मैं सीधी बात कहूँ तो मैं तुमको खा जाऊँगा।" लड़की ने वे सब चीज़ें उसको दे दीं और भागती हुई अपनी बहिनों के घर चली गयी।

---

[14] The Wolf and the Three Girls – a folktale from Italy from its Lake of Garda area.

[15] Borgafort – a place in Italy

उसके बाद बीच वाली बहिन ने अपनी टोकरियाँ भरीं और वह भी अपनी माँ को देखने के लिये बोरगाफ़ोर्ट की तरफ चल दी। रास्ते में उसको भी भेड़िया मिला।

उसने उससे भी वही पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी तुम कहाँ जा रही हो?"

"मैं बोरगाफ़ोर्ट जा रही हूँ अपनी माँ को देखने के लिये। वह बहुत बीमार है।"

"इन टोकरियों में क्या है?"

"चार बोतल शराब है और चार केक हैं।"

"उनको मुझे दे दो वरना... अगर मैं सीधी बात कहूँ तो मैं तुमको खा जाऊँगा।" लड़की ने उसके सामने अपनी टोकरियाँ खाली कर दीं और भागती हुई घर चली गयी।

अब सबसे छोटी बहिन ने कहा — "अब मेरी बारी है। मैं देखती हूँ उस भेड़िये को।"

उसने भी शराब और केक की टोकरियाँ तैयार कीं और बोरगाफ़ोर्ट की तरफ रवाना हो गयी। लो भेड़िया तो रास्ते में ही खड़ा था।

उसने उससे भी पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी कहाँ जा रही हो?"

"मैं बोरगाफ़ोर्ट जा रही हूँ अपनी माँ को देखने के लिये। वह बहुत बीमार है।"

"और इन टोकरियों में क्या है?"

"चार बोतल शराब और चार केक।"

"उनको मुझे दे दो वरना... अगर मैं सीधी बात कहूँ तो मैं तुमको खा जाऊँगा।"

"हाँ हाँ क्यों नहीं। लो अपना मुँह खोलो।"

भेड़िये ने केक खाने के लिये अपना मुँह खोल दिया।

छोटी लड़की ने एक केक उठायी और उसे भेड़िये के खुले हुए मुँह की तरफ फेंक दी। उसने वह केक खास कर के उस भेड़िये के लिये ही बनायी थी और उसे कीलों से भर दिया था।

भेड़िये ने वह केक अपने मुँह में पकड़ ली और जैसे ही उसने उसको काटा उसके मुँह का तलवा कीलों से जख्मी हो गया।

उसने तुरन्त ही वह केक थूक दिया, पीछे की तरफ कूदा और यह चिल्लाते हुए भाग गया — "तुमको इसकी कीमत देनी पड़ेगी ओ लड़की। तुमने मेरे साथ धोखा किया है।"

वह भेड़िया छोटा वाला रास्ता ले कर जो केवल उसी को ही मालूम था आगे आगे भाग गया और उस लड़की से पहले ही बोरगाफ़ोर्ट में उसकी माँ के घर पहुँच गया।

वह उस छोटी लड़की की बीमार माँ के घर में घुस गया और उसकी माँ को खा कर उसके बिस्तर में लेट गया।

वह छोटी लड़की जब अपनी माँ के घर में आयी तो उसने अपनी माँ को एक चादर से आँखों तक ढके लेटे पाया।

वह बोली — “मॉ तुम इतनी काली कैसे हो गयी हो?”

भेड़िया बोला — “मेरे बच्चे, क्योंकि मैं इतनी बीमार जो थी।”

“तुम्हारा सिर भी कितना बड़ा हो गया है मॉ।”

“क्योंकि मुझको चिन्ता बहुत थी, मेरे बच्चे।”

लड़की बोली — “मैं तुम्हारे गले लगना चाहती हूॅ मॉ।”

“हॉ हॉ बेटी क्यों नहीं।”

और जैसे ही वह लड़की अपनी मॉ को गले लगाने के लिये आगे बढ़ी कि भेड़िया उसको भी सारा का सारा खा गया।

अब उस लड़की और उसकी मॉ को अपने पेट में लिये वह भेड़िया वहॉ से घर के बाहर की तरफ भागा। पर गॉव के लोगों ने उसको उस घर में से भागते देख लिया सो उन्होंने सोचा कि “यह भेड़िया इस घर में से क्यों भाग रहा है जरूर दाल में कुछ काला है।

सो वे सब अपनी अपनी कुल्हाड़ियॉ और फावड़े उठा कर उसके पीछे दौड़े।

उन्होंने उस भेड़िये को मार कर और उसका पेट फाड़ कर उस लड़की और उसकी मॉ दोनों को उसके पेट में से बाहर निकाल लिया। वे अभी तक ज़िन्दा थीं।

बाद में उन लड़कियों की मॉ ठीक हो गयी और वह छोटी लड़की अपने घर वापस चली गयी। जा कर उसने अपनी बहिनों से कहा — “देखो मैं सुरक्षित वापस आ गयी।”

4 एक देश जहॉ कोई कभी नहीं मरता[16]

एक दिन एक नौजवान बोला — "ऐसी कहानी जिसमें हर कोई मर जाता है मुझे अच्छी नहीं लगती। मैं किसी ऐसे देश में जाना चाहता हूॅ जहॉ कोई कभी नहीं मरता।"

उसने अपने माता पिता, चाचा ताऊ और सब भाइयों को विदा कहा और फिर घर छोड़ कर ऐसे देश की तलाश में चल दिया जहॉ कोई कभी नहीं मरता। वह कई दिनों और कई महीनों तक चलता रहा।

उसे रास्ते में जो कोई भी मिलता वह उन सबसे पूछता कि क्या वे उसको कोई ऐसी जगह बता सकते हैं जहॉ कोई कभी न मरता हो पर किसी को भी ऐसी किसी जगह का पता नहीं था जहॉ कोई कभी न मरता हो।

एक दिन उसको एक बूढ़ा मिला जिसकी सफेद दाढ़ी उसकी छाती तक आ रही थी। वह पत्थरों से भरी एक गाड़ी खींच रहा था। उस नौजवान ने उससे भी पूछा — "क्या आप मुझे कोई ऐसी जगह बता सकते हैं जहॉ कोई कभी न मरता हो?"

---

[16] The Land Where One Never Dies. Tale No 27. A folktale from Italy from its Verona area.

वह बूढ़ा बोला — "अगर तुम मरना नहीं चाहते तो मेरे साथ रहो। जब तक मैं यह पूरा का पूरा पहाड़ एक एक पत्थर कर के यहाँ से हटा नहीं लूँगा तब तक तुम नहीं मरोगे।"

"ऐसा करने में तुमको कितना समय लगेगा?"

"कम से कम सौ साल तो लग ही जायेंगे।"

"पर उसके बाद तो मुझको मरना ही पड़ेगा न?"

"यकीनन तुमको मरना पड़ेगा। सभी को मरना पड़ता है। क्या सौ साल तुम्हारे लिये काफी नहीं हैं?"

"नहीं, यह जगह मेरे लिये नहीं है। मैं तो कोई ऐसी जगह ढूँढ रहा हूँ जहाँ कोई कभी न मरता हो।"

सो उसने बूढ़े को विदा कहा और आगे चल दिया। कुछ महीने चलने के बाद वह एक जंगल में आ निकला। वहाँ उसको एक और बूढ़ा मिला जिसकी सफेद दाढ़ी पेट तक आ रही थी।

वह एक कुल्हाड़ी से उस बड़े जंगल के पेड़ों की बेकार वाली शाखें काट रहा था। उसको उस जंगल के सारे पेड़ों की इसी प्रकार शाखें काटनी थीं।

उसने उससे भी पूछा — "क्या आप मुझे कोई ऐसी जगह बता सकते हैं जहाँ कोई कभी न मरता हो?"

वह बोला — “क्या तुम मरना नहीं चाहते? अगर ऐसा है तो तुम मेरे साथ रह जाओ। जब तक मैं इस जंगल के ये पेड़ ठीक करता रहूँगा तब तक तुम्हारी जान को कोई खतरा नहीं है।”

“यह काम कितने दिनों में हो जायेगा?”

“लग जायेंगे करीब दो सौ साल।”

“पर इतना समय तो मेरे लिये काफी नहीं है। मुझे तो आप कोई ऐसी जगह बताइये जहॉ कोई कभी न मरता हो।”

“क्या इतना समय तुम्हारे लिये काफी नहीं है? कितना जीना चाहते हो? थक जाओगे जी जी कर।”

“नहीं नहीं, मुझे तो ऐसी ही जगह चाहिये जहॉ कोई कभी न मरता हो।” इतना कह कर वह फिर आगे चल दिया।

कुछ महीने चलने के बाद वह एक समुद्र के किनारे पहुँच गया। वहॉ उसको एक और बूढ़ा मिला जिसकी दाढ़ी घुटनों तक लम्बी थी।

उसने उससे भी पूछा — “क्या आप मुझे कोई ऐसी जगह बता सकते हैं जहॉ कोई कभी न मरता हो?”
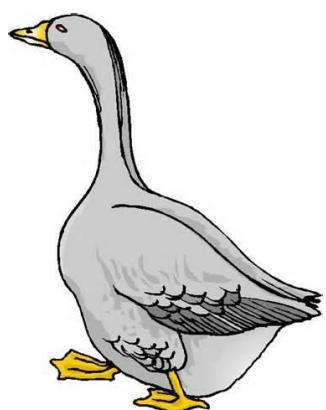
वह बूढ़ा बोला — “अगर तुम मरने से डरते हो तो मेरे साथ रहो। देखो उस बतख को देखो। जब तक वह सारे समुद्र का पानी न पी ले तब तक तुम्हारी ज़िन्दगी को कोई खतरा नहीं।”

"सारे समुद्र का पानी पीने में इसको कितना समय लगेगा?"

"करीब करीब तीन सौ साल।"

"पर उसके बाद तो मुझे मरना ही पड़ेगा न?"

"और इससे ज़्यादा तुम क्या उम्मीद रखते हो? तुम और कितना ज़्यादा जीना चाहते हो? जी नहीं पाओगे।"

"नहीं नहीं, यह जगह मेरे लिये नहीं है। मुझे तो वहाँ जाना है जहाँ कोई कभी न मरता हो।"

सो वह फिर अपने सफर पर चल दिया। एक शाम वह एक बहुत ही शानदार महल के पास आया। वहाँ उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया तो एक बूढ़े ने दरवाजा खोला जिसकी दाढ़ी उसके पैरों तक आ रही थी।

उसने उस नौजवान से पूछा — "ओ नौजवान, तुम क्या खोज रहे हो? मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"मैं एक ऐसी जगह ढूँढ रहा हूँ जहाँ कोई कभी न मरता हो।"

"तो तुम समझ लो कि तुमको वह जगह मिल गयी है। यह वही जगह है जहाँ कोई कभी नहीं मरता।"

यह सुन कर वह आदमी बहुत खुश हुआ कि आखिर उसकी मेहनत सफल हो गयी और उसको ऐसी जगह मिल गयी जहाँ कोई कभी न मरता हो।

वह उस आदमी से बोला — "आखिर इतना चलने के बाद मुझे वह जगह मिल ही गयी जिसकी मुझे तलाश थी। पर क्या आपको यकीन है कि मैं अपने आपको आपके ऊपर थोप नहीं रहा हूँ?"

"ओह नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं। मुझे तुमको अपने साथ रख कर बड़ी खुशी होगी।" कह कर वह बूढ़ा उसको अपने महल के अन्दर ले गया और उसको आराम से ठहराने का इन्तजाम किया।

सो वह नौजवान उस बूढ़े के साथ उस महल में रहने लगा। वह वहाँ पर एक बहुत ही अमीर आदमी की तरह रहता था। साल पर साल बीतते गये। इतनी जल्दी और इतने आराम से उसका समय बीतता चला गया कि उसको समय का पता ही नहीं चला कि कब सदियाँ गुजर गयीं।

एक दिन उसने उस बूढ़े से कहा — "इस धरती पर इससे अच्छी कोई जगह नहीं पर फिर भी मैं अपने परिवार के पास कुछ समय के लिये उनसे मिलने के लिये बस यह देखने के लिये जाना चाहूँगा कि वे लोग कैसे रह रहे हैं। सब लोग ठीक हैं या नहीं।"

बूढ़ा बोला — "तुम किस परिवार की बात कर रहे हो? तुम्हारे आखिरी रिश्तेदार को मरे हुए तो कई सदियाँ गुजर गयीं।"

"पर मैं फिर भी वहाँ जाना चाहूँगा। अपने जन्म की जगह देखने के लिये। हो सकता है कि मुझे वहाँ पर मेरे उस आखिरी रिश्तेदार के कोई बेटे या पोते मिल जायें।"

बूढ़ा बोला — "अगर तुम वहाँ जाने की जिद कर ही रहे हो तो जाओ। तुम मेरी घुड़साल में जाओ और वहाँ से मेरा सफेद वाला घोड़ा उठाओ। यह घोड़ा हवा की चाल से भागता है। वह तुमको तुम्हारी जगह जल्दी ही पहुँचा देगा।

पर मेरी एक बात ध्यान से सुनो। अगर एक बार तुम उस पर सवार हो जाओ तो किसी भी, किसी भी हालत में उस पर से उतरना नहीं वरना तुम वहीं उसी जगह और उसी समय मर जाओगे।"

"ठीक है।" कह कर वह उस बूढ़े की घुड़साल में गया और उसका वह सफेद घोड़ा उठाया जिसकी वह बूढ़ा बात कर रहा था। उसके ऊपर उसने जीन कसी[17] और उस पर बैठ गया। उसके बैठते ही वह घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

वह उस जगह से गुजरा जहाँ उसको वह बतख वाला बूढ़ा मिला था।वहाँ जहाँ पहले समुद्र था अब वहाँ एक बहुत बड़ा घास का मैदान था। उसके किनारे पर हड्डियों का एक छोटा सा ढेर पड़ा था – यह उसी बूढ़े की हड्डियों का ढेर था।

वह नौजवान उस ढेर को देख कर बोला — "देखो तो ज़रा, इस बेचारे बूढ़े की क्या हालत हुई। मैंने अक्लमन्दी का काम किया न, जो मैं यहाँ नहीं रुका नहीं। नहीं तो अब तक तो मैं भी कब का मर चुका होता। चलो आगे चलता हूँ।"

[17] Translated for the word "Saddle". See its picture above.

वह आगे चलता रहा और फिर वह वहाँ आया जहाँ कभी एक बड़ा सा जंगल हुआ करता था। जहाँ उस बूढ़े को अपनी कुल्हाड़ी से हर एक पेड़ की बेकार वाली डंडियाँ काटनी थीं।

वहाँ अब कोई भी पेड़ नहीं रह गया था और वहाँ की जमीन इतनी सूखी और नंगी पड़ी थी जैसे रेगिस्तान।

यह देख कर उस नौजवान के मुँह से निकला — "अरे यह सब यहाँ क्या हो गया। मैं कितना ठीक था कि मैं यहाँ नहीं रुका नहीं तो मैं भी बहुत पहले ही मर गया होता जैसे कि इस जंगल का यह बूढ़ा।"

वह वहाँ से भी गुजरा जहाँ पहले एक बहुत बड़ा पहाड़ खड़ा था जिसमें से एक बूढ़ा एक एक पत्थर उठा कर ले जा रहा था। वहाँ तो अब सारी जमीन ही चौरस हो गयी थी।

उसको देख कर उसके मुँह से निकला — "अच्छा हुआ जो मैं यहाँ भी नहीं रुका। यहाँ भी रुक कर मैंने कुछ अच्छा नहीं किया होता।"

वह नौजवान आगे और आगे चलता गया। आखिर वह अपने शहर पहुँच गया जहाँ उसका जन्म हुआ था और उसके सगे सम्बन्धी रहते थे। पर यह क्या? वह जगह तो इतनी बदल गयी थी कि वह उसको पहचान ही नहीं सका।

न केवल उसका घर ही चला गया था बल्कि वह सड़क भी नहीं थी जिस पर उसका घर था। वहाँ उसने अपने रिश्तेदारों के बारे में

पूछा पर उस नाम के परिवार का तो कभी किसी ने नाम भी नहीं सुना था।

और बस। यहीं उसकी यात्रा का अन्त था। उसने निश्चय किया कि उसको अब तुरन्त ही वापस अपने महल चले जाना चाहिये। सो उसने अपना घोड़ा घुमाया और महल की तरफ चलना शुरू किया।

वह अभी आधे रास्ते ही गया होगा कि उसको एक गाड़ी वाला मिला जिसकी गाड़ी पुराने जूतों से भरी हुई थी और उस गाड़ी को एक बैल खींच रहा था।

गाड़ी वाला उस आदमी को देख कर बोला — "जनाब मेरी यह गाड़ी ज़रा कीचड़ में फॅस गयी है। क्या आप एक मिनट के लिये घोड़े से उतर कर मेरी इस गाड़ी को यहाँ से निकालने में मेरी सहायता करेंगे?

मैं बहुत देर से किसी को अपनी सहायता के लिये देख रहा हूँ पर इधर से मुझे कोई जाता आता ही दिखायी नहीं दिया। बड़ी देर के बाद अब आप मिले हैं इसी लिये मुझे यह प्रार्थना आपसे करनी पड़ी। अगर आप मेरी सहायता करा देंगे तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

नौजवान कुछ सोचता रहा तभी वह गाड़ी वाला फिर बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता कीजिये। जैसा कि आप देख रहे हैं मैं यहाँ पर अकेला हूँ और अब रात भी होने वाली है। अगर अभी

आपने मेरी सहायता नहीं की तो में यहाँ रात भर के लिये अकेला पड़ा रह जाऊँगा।"

उस नौजवान को उस गाड़ी वाले पर दया आ गयी और वह घोड़े पर से उतर गया। उसने अभी अपना केवल एक ही पैर जमीन पर रखा था और दूसरा अभी भी घोड़े पर था कि उस गाड़ी वाले ने उसको उसकी बाँह पकड़ कर खींच लिया।

और बोला — "आखिर मैंने तुमको तुम्हारे घोड़े पर से उतार ही लिया न। क्या तुमको मालूम है कि मैं कौन हूँ? मैं मौत हूँ। इस गाड़ी में तुम इन पुराने जूतों को देख रहे हो न?

ये वही जूते हैं जिनको पहन कर मैं तुमको पकड़ने के लिये तुम्हारे पीछे भागता रहा हूँ। पर तुम आज मेरे हाथ लगे हो जिसके हाथों से अब तक कोई नहीं बच सका।"

जैसे ही उस गाड़ी वाले ने उसको घोड़े से खींचा उसका दूसरा पैर भी जमीन पर आ गया और वह तुरन्त ही मर गया।

सो उस नौजवान को भी मरना ही पड़ा जो बेचारा अपना कितना समय और मेहनत लगा कर एक ऐसी जगह की तलाश कर सका जहाँ कोई कभी नहीं मरता। फिर उसको भी मरना पड़ा जैसे और सब लोग मरते हैं।

5 सेन्ट जोसेफ का भक्त[18]

एक बार एक आदमी था जो सेन्ट जोसेफ[19] का बहुत बड़ा भक्त था। वह केवल सेन्ट जोसेफ को ही मानता था और किसी सेन्ट को नहीं जानता था।

वह अपनी सारी प्रार्थनाएँ सेन्ट जोसेफ के नाम करता था। उसी के लिये मोमबत्ती जलाता था। उसी के नाम का दान देता था। उसी को याद करता था। कहने का मतलब यह है कि वह सेन्ट जोसेफ के अलावा और किसी भी सेन्ट को जानता ही नहीं था।

जब उसके मरने का दिन आया तो वह सेन्ट पीटर के सामने गया। सेन्ट पीटर ने उसको अन्दर लेने से मना कर दिया क्योंकि उसके पास जितनी भी प्रार्थनाएँ थीं जो उसने अपनी ज़िन्दगी में कही थीं वे सब सेन्ट जोसेफ के नाम की थीं।

उसने बताने के लिये कोई अच्छा काम भी नहीं किया था और ऐसे बर्ताव किया था जैसे कि वह कोई बहुत ही बड़ा मालिक था। उसके लिये दूसरे सेन्ट जैसे कहीं कुछ थे ही नहीं।

सेन्ट जोसेफ के भक्त ने सोचा "यह तो मुझे अन्दर आने नहीं दे रहा पर जब मैं यहाँ तक आ ही गया हूँ तो लौटने से पहले मुझे सेन्ट जोसेफ से कम से कम मिल तो लेना ही चाहिये।"

---

[18] The Devotee of St Joseph. Tale No 28. A folktale from Verona, Italy, Europe.

[19] St Joseph is the name of Jesus Christ's father, and Jesus is the ultimate god for all Christians.

सो उसने सेन्ट पीटर से सेन्ट जोसेफ से मिलने की इच्छा प्रगट की कि अगर हो सके तो वह उसको सेन्ट जोसेफ से मिलवा दे। सेन्ट पीटर ने सेन्ट जोसेफ को बुलवाया। सेन्ट जोसेफ आया तो उसने देखा कि वहाँ तो उसका भक्त खड़ा है।

वह बोला — "अरे तुम? बहुत अच्छे। मैं तुमको यहाँ अपने साथ देख कर आज बहुत खुश हूँ। आओ अन्दर आ जाओ।"

वह आदमी बोला — "मै अन्दर नहीं आ सकता क्योंकि यह सेन्ट पीटर मुझे आने नहीं दे रहे।"

"पर यह तुमको अन्दर क्यों नहीं आने दे रहे?"

"क्योंकि इनका कहना है कि मैंने केवल आपको ही पूजा है और किसी दूसरे सेन्ट को नहीं।"

"पर मैं तो तुमको अन्दर बुला रहा हूँ। इससे क्या फर्क पड़ता है कि तुमने किसी और सेन्ट को पूजा है या नहीं। जब मैं तुमको अन्दर बुला रहा हूँ तो तुम अन्दर आ जाओ। सब सेन्ट एक जैसे हैं।"

पर सेन्ट पीटर उसको अन्दर आने से रोकते ही रहे। इस बात पर सेन्ट पीटर और सेन्ट जोसेफ दोनों सेन्ट में बहुत ज़ोर की लड़ाई हो गयी।

अन्त में सेन्ट जोसेफ ने सेन्ट पीटर ने कहा — "या तो तुम मेरे इस भक्त को अन्दर आने दो या फिर मैं अपनी पत्नी और अपने बेटे को अपने साथ ले कर यह स्वर्ग कहीं और ले जा रहा हूँ।"

अब सेन्ट जोसेफ की पत्नी तो "आवर लेडी"[20] थी और उसका बेटा "लौर्ड"[21] था। और यह सब तो सेन्ट पीटर को बिल्कुल भी मान्य नहीं था।

सो यह सुन कर सेन्ट पीटर ने इसी में अपनी अक्लमन्दी समझी कि वह सेन्ट जोसेफ के भक्त को अन्दर आने दे। और उसने उसको अन्दर आने दिया।

[20] Our Lady – Mary, the Mother of Jesus

[21] Lord – Jesus himself

6 तीन बुढ़ियें[22]

एक बार तीन बहिनें थीं और तीनों जवान थीं। उनमें से एक की उम्र सड़सठ साल थी, दूसरी की पिचहत्तर साल थी और तीसरी पिच्यानवै साल की थी।

इन लड़कियों के घर में एक सुन्दर सी छोटी सी बालकनी थी जिसके बिल्कुल बीचोबीच एक बड़ा सा छेद था जिसमें से वे सड़क पर आते जाते लोगों को देख सकती थीं।

एक बार उस पिच्यानवै साल वाली लड़की ने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान को सड़क पर आते हुए देखा तो जैसे ही वह उसकी बालकनी के नीचे से गुजरा तो उसने अपना खुशबूदार बढ़िया रूमाल उठाया और उसको नीचे फेंक दिया।

उस नौजवान ने उस रूमाल को उठा लिया, उसकी खुशबू महसूस की और सोचा कि यह रूमाल जरूर ही किसी बहुत सुन्दर लड़की का होगा।

पहले तो वह थोड़ी दूर आगे चला गया पर फिर वापस आया और उस घर का दरवाजा खटखटाया जिसकी बालकनी से वह रूमाल नीचे गिरा था।

[22] Three Crones. Tale No 29. A folktale from Italy from its Mantua area.

उन तीनों बहिनों में से एक बहिन ने दरवाजा खोला तो उस नौजवान ने उससे पूछा — "क्या आप मुझे बतायेंगी कि यहॉ कोई जवान लड़की रहती है क्या?"

"हॉ हॉ, और एक ही नहीं है तीन तीन हैं।"

वह नौजवान वह रूमाल दिखाते हुए बोला — "क्या आप मुझे उस लड़की के पास ले चलेंगी जिसका यह रूमाल है?"

"नहीं, यह तो मुमकिन नहीं है। क्योंकि यह हमारे घर का नियम है कि शादी से पहले लड़की नहीं देखी जा सकती।"

वह नौजवान उस लड़की की सुन्दरता को सोच सोच कर पहले से ही बहुत उत्साहित था सो वह बोला — "यह कोई बड़ी बात नहीं है। मैं उससे उसको बिना देखे ही शादी कर लूँगा। अभी तो मैं यह खबर अपनी मॉ को बताने जा रहा हूँ कि मैंने एक सुन्दर सी लड़की ढूँढ ली है जिससे मैं शादी करने जा रहा हूँ।"

इतना कह कर वह तुरन्त ही वहॉ से चला गया। वह घर पहुँचा और जा कर सारा किस्सा अपनी मॉ को बताया। तो मॉ बोली — "बेटा, अपना ख्याल रखना। उनको तुम अपने आपको धोखा मत देने देना। कुछ करने से पहले सोच लेना।"

नौजवान बोला — "मॉ, वे लोग कुछ ज़्यादा नहीं मॉग रहे हैं। और अब तो मैंने उनको जबान भी दे दी है। और एक राजा को अपनी बात तो रखनी ही चाहिये।"

अब यह नौजवान इत्तफाक से एक राजा था। माँ से बात कर के वह लौट कर फिर दुलहिन के घर आया और फिर से उसके घर का दरवाजा खटखटाया।

फिर से पहले वाली बुढ़िया ही बाहर निकल कर आयी तो राजा ने उससे पूछा — "क्या आप उसकी दादी हैं?"

"तुमने ठीक जाना। मैं उसकी दादी ही हूँ।"

"अगर आप उसकी दादी हैं तो मेरे ऊपर एक मेहरबानी कीजिये। मुझे उस लड़की की कम से कम एक उँगली ही दिखा दीजिये।"

"नहीं, अभी नहीं। इसके लिये तुमको कल आना पड़ेगा।"

नौजवान राजा ने उसको गुड बाई कहा और वहाँ से चला आया। जैसे ही वह नौजवान चला गया उन बुढ़ियों ने एक दस्ताने की उँगली की नकली उँगली बनायी और उस पर एक नकली नाखून लगा दिया।

नौजवान राजा भी घर चला तो गया पर उस उँगली को देखने की उत्सुकता में वह रात भर सोया नहीं। अगले दिन आखिर सूरज निकला तो वह जल्दी से तैयार हो कर फिर अपनी दुलहिन के घर की तरफ दौड़ा।

दरवाजा खटखटाने पर फिर उसी बुढ़िया ने दरवाजा खोला तो नौजवान बोला — "दादी माँ, मैं अपनी दुलहिन की उँगली देखने आया हूँ।"

“हॉ हॉ, अभी लो। तुम इस चाभी वाले छेद में से उसे देख सकते हो।”

दुलहिन ने वह नकली उॅगली उस छेद में से बाहर कर दी। नौजवान ने उस उॅगली को चूमा और हीरे की एक अॅगूठी उसको पहना दी।

प्यार में पागल उसने उस बुढ़िया से कहा — “मुझे उससे अभी शादी करनी है दादी मॉ। मैं अब और इन्तजार नहीं कर सकता।”

“अगर तुम चाहो तो तुम उससे कल ही शादी कर सकते हो।”

“बहुत बढ़िया। मैं उससे कल ही शादी कर लूॅगा। यह एक राजा का वायदा है।”

वे तीनों बुढ़ियें खुद भी बहुत अमीर थीं सो रात भर में ही उन्होंने शादी का छोटे से छोटा सब सामान इकट्ठा कर लिया। अगले दिन दुलहिन की दोनों बहिनों ने दुलहिन को सजा दिया।

राजा भी अगले दिन आ गया और बोला — “दादी मॉ मैं आ गया।”

“ज़रा ठहरो, हम उसको तुम्हारे पास अभी लाते हैं।”

उसके बाद दुलहिन अपनी दोनों बहिनों की बॉहों में बॉहें डाल कर सात परदों से ढकी वहॉ आ गयी।

उसकी बहिनों ने राजा से कहा — “याद रखना, तुम उसके चेहरे को तब तक मत देखना जब तक तुम अपने कमरे में न पहुॅच जाओ।”

फिर वे सब चर्च चले गये और वहाँ उनकी शादी हो गयी। उसके बाद राजा दुलहिन को शाम के खाने के लिये ले जाना चाहता था पर उन बुढ़ियों ने मना कर दिया।

उन्होंने कहा — "दुलहिन को ऐसी बेवकूफियाँ अच्छी नहीं लगतीं। वह वहाँ नहीं जायेगी।"

सुन कर राजा बेचारा चुप रह गया।

तो अब तो वह बस रात का इन्तजार कर रहा था जब वह अपनी दुलहिन के साथ अपने कमरे में अकेला होगा और उसका सुन्दर चेहरा देखेगा।

आखिर वह समय भी आया जब वे बुढ़ियें उसकी दुलहिन को उसके कमरे में ले गयीं पर उन्होंने राजा को अन्दर नहीं घुसने दिया। उसको कमरे के बाहर ही खड़े रखा।

कुछ देर बाद ही उन्होंने उसको अन्दर जाने दिया। अन्दर जा कर उसने देखा कि दुलहिन तो चादर से ढकी लेटी हुई थी और उसकी दोनों बुढ़िया बहिनें कमरे में कुछ कुछ करती इधर उधर घूम रही थीं।

राजा ने अपने कपड़े बदले और वे बुढ़ियें लैम्प ले कर कमरे से बाहर चली गयीं। पर राजा अपनी जेब में एक मोमबत्ती ले कर आया था सो उसने वह मोमबत्ती निकाली और जला ली।

उस मोमबत्ती की रोशनी में उसने देखा कि वहाँ तो झुर्रियों से भरे हुए चेहरे वाली एक बुढ़िया थी।

उस बुढ़िया को देख कर एक पल के लिये तो वह सन्न रह गया और डर के मारे हिल भी नहीं सका। फिर गुस्से में आ कर उसने अपनी पत्नी को पकड़ा और हवा में घुमा कर खिड़की से बाहर फेंक दिया।

इत्तफाक से खिड़की के नीचे बेलों से ढकी हुई कुछ डंडियाँ[23] खड़ी थीं। गिरते समय उस बुढ़िया की स्कर्ट उनकी एक डंडी में अटक गयी और वह नीचे गिरने की बजाय हवा में ही लटकी रह गयी।

इत्तफाक से उस रात तीन परियाँ बागीचे में घूम रही थीं कि वे उस डंडी के नीचे से गुजरीं तो उनको वह झूलती हुई बुढ़िया दिखायी दे गयी।

यह नजारा देख कर तो उन तीनों परियों की हँसी छूट गयी। और वे तब तक हँसती रही जब तक उनके पेट में हँसते हँसते बल नहीं पड़ गये।

जब उनकी हँसी कुछ रुकी तो एक परी बोली — "अब जब कि हम उसकी इस हालत पर इतना हँस चुके हैं तो अब हमें इसकी कुछ सहायता भी करनी चाहिये।"

---

[23] Translated for the word "Trellis". Trellis is a structure that supports climbing plants. See the picture of one of its kind above.

दूसरी परी बोली — "हॉ यह तो ठीक है। हमको इसकी कुछ सहायता तो जरूर ही करनी चाहिये।"

पहली परी बोली — "मैं इसको दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की बना दूँगी।"

दूसरी परी बोली — "मैं भी। कि इसको दुनियॉ में सबसे सुन्दर पति मिले और वह इसको ज़िन्दगी भर दिल से प्यार करे।"

तीसरी परी बोली — "मैं भी। कि यह ज़िन्दगी भर बहुत ही भली औरत बन कर रहे।"

और उसके बाद वे परियॉ वहॉ से चली गयीं।

अगले दिन जब राजा सो कर उठा तो वह पिछली बातों को याद करने लगा। यह यकीन करने के लिये कि कल वाली बातें सब सच थीं सपना नहीं थीं उसने अपनी खिड़की खोली और देखा कि जिस बुढ़िया को उसने कल रात खिड़की से बाहर फेंका था वह वहॉ है कि नहीं।

पर उसको तो यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस डंडी पर तो दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की बैठी हुई थी। उसने अपना सिर पीट लिया — "ओह, यह मैंने क्या किया?"

उसको तो यह समझ ही नहीं आ रहा था कि वह उसको उस डंडी से ऊपर कैसे खींचे। लेकिन फिर उसने बिस्तर की एक चादर ली और उसका एक सिरा उस लड़की की तरफ फेंक दिया।

उस लड़की ने वह सिरा पकड़ लिया और राजा ने उस चादर का दूसरा सिरा पकड़ कर उसे अपने कमरे में खींच लिया।

एक बार उसको फिर अपने पास देख कर राजा बहुत खुश हुआ और उसने उससे माफी माँगी। उस लड़की ने तुरन्त ही उसको माफ कर दिया और फिर वे आपस में बहुत अच्छे दोस्त बन गये।

कुछ देर बाद किसी ने दरवाजा खटखटाया तो राजा बोला — "शायद दादी माँ होगी। अन्दर आ जाओ, अन्दर आ जाओ दादी माँ।"

बुढ़िया अन्दर घुसी और उसने बिस्तर की तरफ देखा तो देखा कि वहाँ तो उसकी पिच्यानवै साल की बुढ़िया बहिन की बजाय एक बहुत ही सुन्दर लड़की बैठी हुई है।

वह लड़की उससे ऐसे बोली जैसे कुछ हुआ ही न हो — "क्लैमेन्टाइन[24], ज़रा मेरी कौफ़ी तो बना लाना।"

लड़की की बुढ़िया बहिन ने अपने मुँह से निकलने वाली आश्चर्य भरी चीख को रोकने के लिये अपना हाथ अपने मुँह पर रख लिया। फिर यह दिखाते हुए कि सब कुछ साधारण था वह वहाँ से चली गयी और अपनी बड़ी बहिन के लिये कौफ़ी ले आयी।

पर जैसे ही राजा ने अपने काम के लिये घर छोड़ा वह उसकी पत्नी के पास दौड़ी गयी और उससे पूछा — "यह कैसे हुआ? तुम इतनी सुन्दर जवान लड़की कैसे बन गयी?"

[24] Clamentine – the name of the second sister

पत्नी ने अपने मुँह पर उँगली रख कर उसको चुप करते हुए कहा — "श श श श। ज़रा धीरे बोल। मैंने क्या किया यह मैं तुझे अभी बताती हूँ। यह सब मैंने अपने आपको एकसार करवाया[25]।"

"एकसार करवाया? एकसार करवाया? किसने तुमको एकसार किया? और तुमने किससे अपने आपको एकसार करवाया? मैं भी अपने आपको ऐसे ही एकसार करवाना चाहती हूँ।"

"बढ़ई से। मैंने बढ़ई से अपने आपको एकसार करवाया।"

वह बुढ़िया बढ़ई की दूकान पर भागी गयी और बोली — "ओ बढ़ई, ओ बढ़ई, क्या तुम मुझे भी अच्छी तरह से एकसार कर दोगे जैसे तुमने मेरी बड़ी बहिन को किया?"

बढ़ई चिल्लाया — "ओह मेरे भगवान। तुम तो पहले से ही मरी हुई लकड़ी हो। अगर मैने तुमको एकसार किया तो तुम तो स्वर्ग पहुँच जाओगी।"

"तुम इस बात को ज़रा भी न सोचो कि मैं कहाँ पहुँचूँगी बस तुम मुझे एकसार कर दो।"

"क्या कहा तुमने? क्या मैं यह ज़रा भी न सोचूँ कि तुम कहाँ पहुँचोगी? अरे अगर मैंने तुमको मार दिया तो फिर मेरा क्या होगा? मैं तो मर ही जाऊँगा न।"

[25] To plain – to make the surface flat

"तुम चिन्ता न करो। मैं तुमको बताती हूँ कि तुम क्या करो। यह तुम एक थेलर[26] लो और जैसा मैं कहती हूँ तुम वैसा ही करो।" जब बढ़ई ने थेलर का नाम सुना तो उसने अपना विचार बदल दिया।

उसने उससे थेलर लिया और उससे कहा — "तुम यहाँ मेरी काम करने वाली मेज पर लेट जाओ और मैं तुम्हें उसी तरह से एकसार कर दूँगा जैसे तुम चाहोगी।"

यह कह कर वह उसका जबड़ा एकसार करने के लिये बढ़ा तो बुढ़िया की तो चीख ही निकल गयी। तो बढ़ई बोला — "अगर तुम इस तरह चीखोगी तो मैं कोई काम नहीं कर पाऊँगा।"

वह पलट गयी तो बढ़ई ने उसका दूसरा जबड़ा एकसार करना शुरू किया। पर अबकी बार वह बुढ़िया चिल्लायी नहीं। क्योंकि वह मर चुकी थी।

उस तीसरी बुढ़िया के बारे में फिर कुछ और नहीं सुना गया कि वह डूब गयी, या फिर उसका गला चीरा गया, या फिर वह बिस्तर में ही मर गयी – कोई नहीं जानता।

केवल दुलहिन ही अपने जवान राजा के साथ घर भर में बच गयी थी और फिर वे दोनों हमेशा के लिये खुश खुश रहे।

[26] Thaler old large silver coin used throughout Europe for almost four hundred years. Its name lives on in the many currencies called dollar. See its picture above.

7 केंकड़ा राजकुमार[27]

एक बार एक मछियारा था जो कभी इतनी मछली नहीं पकड़ पाता था जिससे वह अपने परिवार का पेट भर सकता। इसलिये वह और उसका परिवार अक्सर ही भूखा रहता था।

एक दिन जब उसने अपना जाल पानी में से खींचा तो उसको अपना जाल इतना भारी लगा कि उसको उसे खींचना मुश्किल हो गया।

पर हिम्मत कर के उसने उसे खींच ही लिया तो उसने उसमें क्या देखा कि उस जाल में एक इतने बड़े साइज़ का केंकड़ा फँसा हुआ था जिसको एक आँख भर कर तो वह देख ही नहीं सकता था।

"ओह आखिर आज कितना बड़ा शिकार हाथ लगा। अब मैं अपने बच्चों के लिये बहुत सारा खाना खरीद सकता हूँ।" उसने उस केंकड़े को अपनी पीठ पर रखा और घर ले गया।

उसने अपनी पत्नी को आग जला कर उसके ऊपर एक पानी भरा बर्तन रखने को कहा क्योंकि वह जल्दी ही बच्चों के लिये खाना ले कर लौटने वाला था और वह खुद उस केंकड़े को ले कर राजा के महल चल दिया।

[27] The Crab Prince. Tale No 30. A folktale from Italy from its Venice area.

वहाँ जा कर वह राजा से बोला — "हुजूर मैं आपसे इसलिये मिलने आया हूँ कि आप मुझसे यह केंकड़ा खरीद लीजिये। मेरी पत्नी ने बर्तन आग पर रख दिया है पर मेरे पास पैसे नहीं हैं जिससे मैं अपने बच्चों के लिये खाना खरीद सकूँ।"

राजा बोला — "पर मैं केंकड़े का क्या करूँगा? क्या तुम उसको किसी और को नहीं बेच सकते?"

तभी राजा की बेटी वहाँ आ गयी और उस केंकड़े को देख कर बोली — "अरे कितना अच्छा केंकड़ा है। पिता जी इसे आप मेरे लिये खरीद दीजिये न। हम इसको अपने मछली वाले तालाब में सुनहरी मछलियों के साथ रख देंगे।"

राजा की बेटी को मछलियाँ बहुत अच्छी लगती थीं। वह उस तालाब के किनारे बैठी बैठी घंटों घंटों उन मछलियों को देखती रहती थी जो उसमें तैरती रहती थीं।

उसका पिता अपनी बेटी की किसी बात को ना नहीं कर पाता था सो उसने उसके लिये वह केंकड़ा खरीद दिया। उस मछियारे ने उसे राजा के मछली के तालाब में डाल दिया।

राजा ने उसको सोने के सिक्कों से भरा एक बटुआ दे दिया जिससे वह अपने बच्चों को एक महीने तक खाना खिला सकता था। केंकड़ा वहीं छोड़ कर वह मछियारा वहाँ से चला गया।

अब राजकुमारी सारा समय वहीं उस मछली वाले तालाब के किनारे ही बैठी रहती और उस केंकड़े को ही देखती रहती। उस केंकड़े को देखते देखते वह थकती ही नहीं थी।

इतनी ज़्यादा देर तक वहाँ बैठे रहने से और उस केंकड़े को बराबर देखते रहने से अब वह उसको और उसके तरीकों को बहुत अच्छी तरह से जान गयी थी। उसने देखा कि वह केंकड़ा दिन के बारह बजे से लेकर दिन के तीन बजे तक गायब हो जाता था, भगवान जाने कहाँ।

एक दिन राजा की बेटी वहाँ उस केंकड़े को देखने के लिये बैठी हुई थी कि उसने दरवाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज सुनी।

उसने अपने छज्जे से नीचे देखा तो एक खानाबदोश वहाँ भीख माँगने के लिये खड़ा हुआ था। राजा की बेटी ने पैसों का एक थैला उसकी तरफ फेंक दिया पर वह वह थैला न लपक सका और वह थैला उसके बराबर से हो कर एक गड्ढे में जा पड़ा।

वह खानाबदोश उस थैले के पीछे पीछे उस गड्ढे तक गया। गड्ढे में पानी था सो वह पानी में कूद पड़ा और तैरना शुरू कर दिया।

वह गड्ढा जमीन के नीचे नीचे एक नहर से राजा के मछली वाले तालाब से जुड़ा हुआ था और वह नहर भी न जाने कहाँ तक जाती थी।

वह आदमी उस मछली वाले तालाब तक पहुँच कर उस नहर में निकल गया और एक बहुत बड़े जमीन के नीचे बने कमरे के बीच में बने एक बहुत छोटे से बेसिन[28] में निकल आया।

उस कमरे में बहुत बढ़िया परदे लटक रहे थे और एक बहुत ही सुन्दर मेज लगी रखी थी। वह आदमी उस बेसिन में से बाहर निकला और एक परदे के पीछे छिप गया।

जब दोपहर के बारह बजे तो उस बेसिन में से एक परी बाहर निकली जो एक केंकड़े के ऊपर बैठी हुई थी। उसने और केंकड़े दोनों ने मिल कर बेसिन का पानी बाहर कमरे में उलीच दिया।

फिर परी ने अपनी जादू की छड़ी से केंकड़े को छुआ तो केंकड़े के खोल से एक बहुत सुन्दर नौजवान निकल आया। वह नौजवान मेज के पास रखी एक कुर्सी पर बैठ गया।

परी ने फिर अपनी जादू की छड़ी मेज पर मारी तो वहाँ स्वादिष्ट खाना आ गया और बोतलों में शराब आ गयी। जब नौजवान ने अपना खाना पीना खत्म कर लिया तो वह फिर अपने केंकड़े वाले खोल में घुस गया।

परी ने केंकड़े के उस खोल को फिर से छुआ तो वह केंकड़ा उस परी को ले कर फिर से बेसिन में कूद गया और उसको ले कर पानी में गायब हो गया।

[28] Basin is a natural or artificial hollow place containing water.

अब वह आदमी परदे के पीछे से निकल आया और बेसिन के पानी में कूद कर फिर से राजा के मछली वाले तालाब में आ गया।

राजा की बेटी अभी भी वहीं बैठी अपनी मछलियों को तैरता देख रही थी। उस आदमी को उस तालाब में से निकलते देख कर उसने उससे पूछा — "अरे तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

वह आदमी बोला — "राजकुमारी जी मैं आपको एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात बताना चाहता हूँ।" फिर वह उस तालाब में से बाहर निकल आया और उसको वह सब कुछ बताया जो वह अभी अभी देख कर आ रहा था।

राजकुमारी बोली — "अच्छा तो अब मेरी समझ में आया कि यह केंकड़ा बारह से तीन बजे के बीच में कहाँ जाता है। ठीक है कल दोपहर को हम दोनों एक साथ वहाँ जायेंगे और देखेंगे।"

सो अगले दिन वे दोनों उस तालाब के पानी में तैर कर उस जमीन के नीचे बनी नहर में तैरे और उस कमरे में बने बेसिन में आ निकले। बेसिन में से निकल कर वे एक परदे के पीछे छिप गये।

दोपहर के ठीक बारह बजे उस बेसिन में से वह परी एक केंकड़े के ऊपर बैठी बाहर निकली। उसने अपनी जादू की छड़ी उस केंकड़े के खोल को छुआयी तो उसमें से एक सुन्दर नौजवान बाहर निकल आया और मेज के पास पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

राजकुमारी को वह केंकड़ा तो पहले से ही अच्छा लगता था पर अब वह उसमें से निकले सुन्दर नौजवान को देख कर उसके प्रेम में पड़ गयी।

अपने पास ही पड़ा केंकड़े का खाली खोल देख कर वह उस खोल के अन्दर छिप गयी। जब वह नौजवान अपना खाना पीना खत्म कर के अपने खोल में वापस आया तो वहाँ एक सुन्दर लड़की को पा कर उसने उससे फुसफुसा कर पूछा — "यह तुमने क्या किया, अगर कहीं परी ने देख लिया तो वह हम दोनों को मार देगी।"

राजा की बेटी ने भी फुसफुसा कर जवाब दिया — "पर मैं तुमको इस जादू से छुड़ाना चाहती हूँ। बस मुझे यह बता दो कि इसके लिये मुझे करना क्या है।"

नौजवान बोला — "यह नामुमकिन है। मुझे इस जादू से वही लड़की बचा सकती है जो मुझे इतना प्यार करती हो जो मेरे साथ मरने के लिये तैयार हो।"

राजा की बेटी बेहिचक बोली — "मैं वह लड़की हूँ। मैं तुमसे प्यार करती हूँ और तुम्हारे लिये मरने के लिये तैयार हूँ।"

जब उस केंकड़े के खोल के अन्दर उन दोनों में ये सब बातें चल रहीं थी तब वह परी उस केंकड़े के खोल पर बैठी और उस नौजवान ने रोज की तरह केंकड़े के पंजे बनाये और उस परी को ले

कर वहाँ से जमीन के अन्दर वाली नहर से हो कर खुले समुद्र में ले गया।

उस परी को ज़रा सा भी शक नहीं हुआ कि उस खोल के अन्दर राजा की बेटी भी छिपी हुई थी।

जब वह परी को उसकी जगह छोड़ कर वापस उस मछलियों वाले तालाब में आ रहा था तो उस नौजवान ने जो एक राजकुमार था राजा की बेटी को जो अभी भी उस केंकड़े के खोल में उसके साथ ही बैठी थी बताया कि वह इस जादू से कैसे आजाद हो सकता था।

उसने कहा — "तुमको समुद्र के किनारे वाली एक चट्टान पर चढ़ना पड़ेगा और वहाँ जा कर कुछ बजाना और गाना गाना पड़ेगा। परी को संगीत बहुत अच्छा लगता है तो जैसे ही वह तुम्हारा गाना सुनेगी वह गाना सुनने के लिये पानी में से बाहर निकल आयेगी।

वह तुमसे कहेगी — "और गाओ ओ सुन्दर लड़की और गाओ। तुम्हारा संगीत तो दिल खुश कर देने वाला है।"

तब तुम जवाब देना — "मैं जरूर गाऊँगी अगर तुम अपने बालों में लगा फूल मुझको दे दो तो।"

जैसे ही तुम अपने हाथ में वह फूल ले लोगी मैं उसके जादू से आजाद हो जाऊँगा क्योंकि वह फूल ही मेरी ज़िन्दगी है।"

इस बीच में वह केंकड़ा मछलियों वाले तालाब में पहुँच चुका था सो उसने राजा की बेटी को उस खोल में से बाहर निकाल दिया।

वह खानाबदोश अपने आप ही उस नहर में से तैर कर बाहर आ गया था। नहर में से निकल कर जब उसको राजा की बेटी कहीं दिखायी नहीं दी तो उसको लगा कि वह तो बड़ी मुश्किल में पड़ गया है। अब वह राजा की बेटी को कहाँ ढूँढे।

फिर उसने देखा कि जल्दी ही वह लड़की मछलियों वाले तालाब में से निकल आयी। उसने उस खानाबदोश को धन्यवाद दिया और उसको बहुत सारा इनाम भी दिया।

उसके बाद वह अपने पिता के पास गयी और उससे कहा कि वह संगीत सीखना चाहती थी। अब क्योंकि राजा उसको किसी भी चीज़ के लिये मना नहीं कर सकता था सो उसने अपने राज्य के सबसे अच्छे संगीतज्ञों और गवैयों को बुलाया और उनको अपनी बेटी को संगीत सिखाने के लिये रख दिया।

जब उसने संगीत सीख लिया तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, अब मैं समुद्र के किनारे वाली चट्टान पर बैठ कर वायलिन बजाना चाहती हूँ।"

"क्या? समुद्र के किनारे चट्टान पर बैठ कर वायलिन बजाना चाहती हो? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?" पर फिर हमेशा की तरह से उसको वहाँ जाने की इजाज़त भी दे दी।

पर उसने उसकी सफेद पोशाक पहने आठ दासियाँ उसके साथ कर दीं और उन सबकी सुरक्षा के लिये उन सबके पीछे कुछ दूरी से कुछ हथियारबन्द सिपाही भी भेज दिये।

राजा की बेटी ने चट्टान पर बैठ कर अपनी आठ दासियों के साथ अपनी वायलिन बजानी शुरू की।

संगीत सुन कर परी लहरों से निकल कर बाहर आयी और उस से बोली — "तुम कितना अच्छा बजाती हो ओ लड़की। बजाओ, बजाओ। तुम्हारा यह संगीत सुन कर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।"

राजा की बेटी बोली — "हाँ हाँ मैं और बजाऊँगी अगर तुम अपने बालों में लगा यह फूल मुझे दे दो क्योंकि मुझे तुम्हारे बालों मे लगा यह फूल बहुत पसन्द है।"

परी बोली — "यह फूल तो मैं तुम्हें दे दूँगी अगर तुम इसको वहाँ से ले सको जहाँ मैं इसको फेंकूँ।"

उसने परी को विश्वास दिलाया — "मैं उसको वहाँ से जरूर उठा लूँगी जहाँ भी तुम इसको फेंकोगी।" और उसने फिर अपना वायलिन बजाना और गाना शुरू कर दिया।

जब उसका गीत खत्म हो गया तब उसने परी से कहा — "अब मुझे फूल दो।"

परी बोली "यह लो।" और यह कह कर उसने वह फूल समुद्र में जितनी दूर हो सकता था फेंक दिया।

राजा की बेटी तुरन्त समुद्र में कूद गयी और उस फूल को लेने के लिये उसकी तरफ लहरों पर तैरने लगी।

उसकी आठ दासियाँ जो अभी भी चट्टान पर खड़ी थीं चिल्लायीं — "राजकुमारी को बचाओ, राजकुमारी को बचाओ।" उनके चेहरों के ऊपर पड़े सफेद परदे अभी भी हवा में हिल रहे थे।

पर राजा की बेटी तैरती रही तैरती रही। कभी वह लहरों में छिप जाती तो कभी उनके ऊपर आ जाती।

कुछ देर बाद उसको कुछ शक सा होने लगा था कि पता नहीं वह उस फूल तक कभी पहुँच भी पायेगी या नहीं कि तभी एक बड़ी सी लहर आयी और वह फूल उसके हाथ में थमा गयी।

उसी समय उसने अपने नीचे से एक आवाज सुनी — "तुमने मेरी ज़िन्दगी मुझे वापस दी है इसलिये मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ। अब तुम डरो नहीं मैं तुम्हारे नीचे ही हूँ। मैं तुमको किनारे तक पहुँचा दूँगा। पर तुम यह बात किसी को बताना नहीं, अपने पिता को भी नहीं।

अब मैं अपने माता पिता के पास जाता हूँ और जा कर उनको यह सब बताता हूँ और फिर चौबीस घंटों के अन्दर अन्दर आ कर मैं तुम्हारे माता पिता से तुम्हारा हाथ माँगता हूँ।"

उस समय क्योंकि तैरते तैरते राजा की बेटी की साँस फूल रही थी इसलिये वह केवल इतना ही कह सकी — "हाँ हाँ मैं समझती हूँ।" इतने में वह केंकड़ा उसको किनारे पर ले आया।

जब वह अपने घर पहुँची तो उसने राजा से केवल इतना ही कहा कि वहाँ वायलिन बजा कर उसको बहुत ही अच्छा लगा।

अगले दिन तीसरे पहर तीन बजे ढोलों की और बाजे बजने की और घोड़ों की टापों की आवाज के साथ एक मेजर महल में दाखिल हुआ और बोला कि वह राजा से मिलना चाहता था।

उसको राजा से मिलने की इजाज़त दे दी गयी और फिर राजकुमार ने राजा से उसकी बेटी का हाथ माँगा। राजकुमार ने राजा को अपनी सारी कहानी भी सुनायी।

राजा उसकी कहानी सुन कर सकते में आ गया क्योंकि अभी तक तो उसको इन सब बातों का कुछ भी पता नहीं था।

उसने अपनी बेटी को बुलाया तो वह भागती हुई चली आयी और आ कर यह कहते हुए राजकुमार की बाँहों में गिर गयी — "यही मेरा दुलहा है पिता जी, यही मेरा दुलहा है।"

राजा ने समझ लिया कि अब वह कुछ भी नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि वह अपनी बेटी की शादी उस राजकुमार के साथ कर दे। और उसने उन दोनों की शादी कर दी।

8 सात साल तक चुप[29]

एक बार एक माता पिता थे जिनके दो बेटे और एक बेटी थी। पिता अक्सर घर से बाहर रहता था क्योंकि उसको अपने काम से बाहर आना जाना पड़ता था।

एक दिन जब वह बाहर गया हुआ था तो उसके दोनों छोटे बेटों ने अपनी माँ से कहा — "माँ, हम अपने पिता जी से मिलने जा रहे हैं।"

उनकी माँ ने कहा — "ठीक है जाओ।"

सो वे अपने पिता से मिलने चल दिये। जब वे जंगल में पहुँचे तो वे वहाँ खेलने के लिये रुक गये। कुछ देर बाद ही उन्होंने देखा कि उनका पिता तो उन्हीं की तरफ आ रहा था।

वे उसकी तरफ भागे और जा कर उसकी टाँगों से लिपट गये "पिता जी, पिता जी।"

पर उनका पिता उस दिन कुछ खराब मूड में था सो बोला — "मुझे परेशान मत करो, जाओ यहाँ से।"

पर बच्चों ने उसकी इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसकी टाँगों से लिपटे ही रहे। पिता जब बहुत परेशान हो गया तो

[29] Silent for Seven Years. Tale No 31. A folktale from Venice, Italy .

वह ज़ोर से बोला — "शैतान तुम दोनों को उठा कर ले जाये तुम लोग सुनते नहीं हो।"

इत्तफाक से शैतान उस समय वहीं से गुजर रहा था सो इससे पहले कि पिता जान पाता कि क्या हो रहा था वह उन दोनों बच्चों को वहाँ से उठा कर ले गया।

पिता बेचारा तो देखता ही रह गया और कुछ जान ही न सका कि क्या हो गया। वह पछताता सा घर आ गया क्योंकि उसको तो आशा ही नहीं थी कि जो वह कहेगा वह इस तरह सच हो जायेगा।

जब माँ ने देखा कि पिता बिना बच्चों के चला आ रहा है तो वह बहुत चिन्ता करने लगी और उसने अपने बच्चों के लिये रोना शुरू कर दिया।

उसके पति ने पहले तो यही कहा कि उसको मालूम नहीं था कि वे कहाँ हैं पर फिर बाद में उसने मान लिया कि उसने उनको शाप दिया और फिर वे उसकी आँखों के सामने से गायब हो गये।

इस पर उनकी छोटी बेटी बोली — "माँ और पिता जी आप दुखी न हों। अगर मेरी अपनी ज़िन्दगी चली भी जाये तो भी मैं अपने भाइयों को ढूँढने जरूर जाऊँगी।"

उसके माता पिता ने उसको उनको ढूँढने जाने के लिये बहुत मना किया पर उसने उनकी एक न सुनी। उसने अपने लिये थोड़ा सा खाना लिया और अपने भाइयों को ढूँढने चल दी।

चलते चलते वह एक महल के सामने आ गयी। उस महल का लोहे का दरवाजा था। वह उसमें से हो कर उस महल के अन्दर चली गयी।

उस महल में एक नौजवान बैठा था। उसने उस नौजवान से पूछा — "क्या तुमने इत्तफाक से मेरे भाइयों को देखा है? उनको एक शैतान उठा कर ले गया है।"

वह नौजवान बोला — "मैं नहीं कह सकता कि मैंने उनको देखा है पर तुम उस दरवाजे से हो कर उस कमरे में चली जाओ। वहॉ चौबीस बिस्तर लगे हुए हैं। वहॉ देख लो अगर तुम्हारे भाई वहॉ हों तो।"

उस लड़की को वहॉ उसके भाई मिल गये। वह तो उनको देख कर बहुत खुश हो गयी। वह बोली — "तो तुम लोग यहॉ हो। मुझे खुशी है कि कम से कम तुम लोग यहॉ सुरक्षित तो हो।"

भाइयों ने कहा — "तुम ज़रा हमको पास से देखो कि क्या हम सुरक्षित हैं?"

बहिन ने उनके बिस्तर के नीचे झॉका तो देखा कि उनके बिस्तरों के नीचे तो बहुत सारी आग जल रही थी। वह डर के मारे चिल्लायी — "ओह भैया, मैं तुम लोगों को बचाने के लिये क्या करूँ?"

वे बोले — "अगर तुम सात साल तक चुप रहो तभी तुम हमको बचा सकती हो। पर इस बीच तुमको बहुत तकलीफें उठानी पड़ेंगी।"

बहिन बोली — "तुम चिन्ता न करो भैया। तुम मेरे ऊपर विश्वास रखो मैं सब देख लूँगी।"

उसने उनको वहीं छोड़ा और वापस उसी कमरे में चली आयी जहाँ वह नौजवान बैठा था। उसने उस लड़की को अपने पास आने का इशारा किया पर उस लड़की ने ना में अपना सिर हिलाया, क्रास का निशान बनाया और वहाँ से चली गयी।

उसके सात सालों का चुप रहना वहीं से शुरू हो चुका था। चलते चलते वह एक जंगल में आ पहुँची। वह बहुत थक गयी थी सो वह एक पेड़ के नीचे लेट गयी और सो गयी।

उसी जंगल में एक राजा शिकार करने के लिये निकला हुआ था। वह उधर से गुजरा और उस बच्ची को सोते हुए देखा तो उसके मुँह से निकला — "ओह कितनी सुन्दर लड़की है।"

उसने उसे जगाया और उससे पूछा कि वह इस जंगल में कैसे आयी। अब वह बोल तो सकती नहीं थी सो उसने अपना केवल सिर हिला कर उसको बताया कि वह वहाँ अपनी मर्जी से नहीं आयी थी।

राजा ने उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ चलना पसन्द करेगी। उसने सिर हिला कर बताया कि हॉ वह उसके साथ जायेगी।

राजा ने सोचा कि वह शायद सुन नहीं सकती होगी सो वह उस से ज़ोर से बोला पर जल्दी ही उसको पता चल गया कि वह तो फुसफुसाहट भी सुन सकती थी।

वह उसको घर ले आया और उसको गाड़ी से बाहर निकाला। घर में अन्दर ला कर उसने अपनी मॉ को बताया कि वह एक न बोलने वाली लड़की को ले आया है। वह जंगल में अकेली सो रही थी और अब वह उससे शादी करना चाहता है।

मॉ बोली — "मैं इस बात के लिये कभी राजी नहीं होऊॅगी कि तुम एक बिना बोलने वाली लड़की से शादी करो।"

वह बीच में ही बोला — "पर यहॉ मैं बताऊॅगा कि क्या करना है इसलिये हमारी शादी होगी।" और उन दोनों की शादी हो गयी।

राजा की मॉ बहुत ही बुरी थी और अपनी बहू को बहुत ही बुरे तरीके से रखती थी पर बहू बेचारी सब कुछ शान्ति से सहती रही। इस बीच में उसको बच्चे की आशा भी हो गयी।

एक दिन राजा की मॉ ने अपने बेटे को कहा कि वह एक शहर में जाये और उस शहर की देखभाल करे जहॉ उसको धोखा दिया जाने वाला था। राजा ने अपनी पत्नी को विदा कहा और उस शहर को चल दिया।

राजा के पीछे रानी ने एक बेटे को जन्म दिया पर राजा की माँ ने दाई[30] की सहायता से उसके बिस्तर में यह दिखाने के लिये एक कुत्ता रखवा दिया कि उसने एक कुत्ते को जन्म दिया है और उसके बेटे को एक बक्से में बन्द कर के महल की छत पर रखवा दिया।

वह बेचारी लड़की परेशान सी इधर उधर देखती रही पर अपने भाइयों की परेशानी याद कर के केवल मन मसोस कर रह गयी। कुछ भी न कह सकी।

राजा की माँ ने अपने बेटे को लिखा कि उसकी पत्नी ने एक कुत्ते को जन्म दिया है।

राजा ने जवाब दिया कि वह अब अपनी पत्नी के बारे में कुछ सुनना नहीं चाहता था। उसने अपने आने से पहले ही अपनी पत्नी के लिये यह भी कहा कि उसको खाने के लिये थोड़ा सा पैसा दे कर घर के बाहर निकाल दिया जाये।

पर राजा की माँ ने एक नौकर के साथ बहू को बाहर भेज दिया और नौकर से कहा कि वह उसको मार कर उसकी लाश समुद्र में फेंक दे और उसके कपड़े वापस ले आये।

जब वे दोनों समुद्र के किनारे पहुँचे तो नौकर ने कहा — "मैम, मेहरबानी कर के आप अपना सिर झुकाइये। मुझे आपको मारने का हुक्म मिला है।

[30] Translated for the word "Midwife" who helps the mother to deliver the child

ऑखों में ऑसू भर कर वह लड़की घुटनों के बल बैठ गयी और अपने हाथ जोड़ दिये।

उस नौकर को दया आ गयी तो उसने बस उसके बाल काट लिये और कपड़े उतार लिये। उसने अपनी कमीज और पैन्ट उसके पहनने के लिये छोड़ दी और वापस आ गया।

अब वह लड़की उस नौकर के कपड़े पहन कर वहॉ समुद्र के किनारे पर अकेली ही इधर उधर घूमती रही। आखिर उसको एक जहाज़ दिखायी दे गया तो उसने उसको इशारा किया।

वह जहाज़ सिपाही ले कर जा रहा था। उन सिपाहियों ने उससे पूछा कि वह कौन था क्योंकि उनको ज़रा सा भी शक नहीं हुआ कि वह कोई लड़की हो सकती थी।

इशारों से उसने उनको बताया कि वह एक नाविक थी उसका जहाज़ टूट गया था और वह उस जहाज़ में से अकेली ही बची थी।

सिपाहियों ने कहा — "अगर तुम नहीं भी बोल सकती हो तो कोई बात नहीं फिर भी तुम लड़ाई में हमारी सहायता कर सकती हो।"

लड़ाई में उस लड़की ने भी तोपें चलायीं। उसकी बहादुरी से खुश हो कर उन लोगों ने उसको तुरन्त ही कौरपोरल बना दिया। जब लड़ाई खत्म हो गयी तो उसने उनसे प्रार्थना की अब उसको छोड़ दिया जाये और उसको छोड़ दिया गया।

जब वह जमीन पर आ गयी तो उसको पता नहीं था कि वह अब कहाँ जाये। घूमते घूमते रात को उसको एक टूटा फूटा घर मिल गया तो वह उसी में चली गयी और वहाँ जा कर छिप गयी।

कुछ देर बाद ही उसको किसी के कदमों के चलने की आवाज सुनायी दी तो उसने बाहर झाँक कर देखा तो तेरह खूनी घर के पिछले दरवाजे से बाहर जा रहे थे।

जब वे उसकी आँखों से काफी दूर चले गये। तो वह घर के पीछे के हिस्से की तरफ गयी। वहाँ उसने तेरह आदमियों के लिये बहुत बढ़िया खाने की एक मेज लगी देखी।

वह मेज के चारों तरफ घूमी और उन सब प्लेटों में से उसने थोड़ा थोड़ा चखा ताकि वे खूनी जब वापस आयें तो उन खूनियों को कोई चीज़ कम न लगे।

फिर वह अपनी छिपने की जगह वापस आ गयी पर वहाँ से चलने से पहले वह एक प्लेट में से अपनी चम्मच निकाल कर बाहर रखना भूल गयी।

जब वे खूनी वापस लौट कर आये तो उनमें से एक ने उस चम्मच को तुरन्त ही देख लिया तो अपने साथियों से बोला — "ऐसा लगता है कि यहाँ कोई आया है।"

दूसरा बोला — "चलो फिर से हम सब थोड़ी देर के लिये बाहर चलते हैं और एक आदमी यहाँ देखभाल करता रहेगा।" सो सब बाहर चले गये और एक आदमी को वहाँ छोड़ गये।

यह सोचते हुए कि अब सब चले गये हैं वह लड़की अपने बिस्तर से उठी। जैसे ही वह बाहर आयी तो उस खूनी ने उसको पकड़ लिया और बोला — "अब मैंने तुझको पकड़ लिया है ओ चोर। ज़रा रुक जा।"

वह लड़की यह देख कर बहुत डर गयी और उसने इशारों से उसको बताया कि वह बोल नहीं सकती थी और वह यहाँ इसलिये चली आयी थी क्योंकि वह रास्ता भूल गयी थी।

यह सुन कर उस खूनी ने उसको तसल्ली दी और फिर खाना खिलाया। दूसरे लोग भी कुछ देर में वहाँ आ गये।

उन्होंने उसकी कहानी सुन कर कहा — "क्योंकि अब तुम यहाँ हो तो हमारे ही साथ रहो वरना हम तुमको मार देंगे।"

उसने हाँ में सिर हिलाया और फिर वह वहीं रहने लगी। पर उन खूनियों ने उसको फिर वहाँ कभी अकेला नहीं छोड़ा।

एक दिन उन खूनियों का सरदार उससे बोला — "कल हम लोग फलाँ राजा के महल पर जायेंगे और उसकी सब कीमती चीज़ें ले कर आयेंगे। तुमको हमारे साथ चलना पड़ेगा।"

जब उसने उस राजा का नाम बताया तो वह तो उसका अपना पति था। सो उसने अपने पति को लिख कर उसके महल में होने वाली चोरी की चेतावनी भेजी और आने वाले खतरे के बारे में बताया।

इसका नतीजा यह हुआ कि जब वे खूनी आधी रात को महल के सामने वाले दरवाजे से घुसने लगे तो वहाँ छिपे हुए सिपाहियों ने निकल कर उनको एक एक कर के मार डाला।

इस मारने में उनका सरदार और पाँच खूनी तो मारे गये पर बाकी बच कर भाग गये। वह उस लड़की को वहीं छोड़ गये जो खूनियों के वेश में थी।

सिपाहियों ने उसको पकड़ लिया और उसके हाथ पैर बाँध कर उसको जेल में डाल दिया। जेल के कमरे से वह लोगों को शहर के चौराहे पर फाँसी चढ़ाने की तैयारी करते देख सकती थी।

यह सब होते होते अब उसके चुप रहने के सात साल पूरे होने को आ रहे थे। केवल एक दिन ही बाकी रह गया था। अपने इशारों से उसने उन लोगों से बहुत प्रार्थना की कि वह उसकी फाँसी की सजा को कल तक के लिये बढ़ा दें।

बस एक दिन और फिर उसकी यह चुप खत्म हो जायेगी। राजा ने इसकी इजाज़त दे दी।

अगले दिन वे उसको फाँसी के तख्ते तक ले चले। जब वह पहली सीढ़ी पर चढ़ी तो उसने उनसे पूछा कि क्या वे उसको तीन बजे फाँसी चढ़ाने की बजाय चार बजे फाँसी चढ़ा सकते हैं। बस वह एक घंटा और चाहती है।

राजा इस बात पर भी राजी हो गया। जब चार बजे का घंटा बजा और वह एक और कदम आगे बढ़ी तो दो लोग राजा के पास

आये, उसको सिर झुकाया और राजा से बात करने की इजाज़त मॉगी।

राजा ने कहा — "बोलो।"

उन्होंने पूछा — "इस नौजवान को आप फॉसी क्यों चढ़ा रहे हैं?"

राजा ने उनको बताया कि वह ऐसा क्यों कर रहा था तो वे बोले — "वह कोई नौजवान नहीं है बल्कि हमारी बहिन है।" और फिर उन्होंने राजा को बताया कि वह सात साल तक चुप क्यों रही और इस सबके बारे में उसने सात साल तक एक शब्द भी क्यों नहीं कहा।

फिर वे अपनी बहिन से बोले — "बोल बहिन बोल। अब हम खतरे से बाहर हैं। हम सुरक्षित हैं।"

फिर उन दोनों ने उसकी हथकड़ी और बेड़ी खोली। सारे शहर के सामने उस लड़की ने कहा — "मैं राजा की पत्नी हूँ और मेरी नीच सास ने मेरे बच्चे को मार दिया।

महल की छत पर जा कर देखो तो तुमको वहॉ इसका सबूत मिल जायेगा। वहॉ एक बक्सा है। उसको खोल कर देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि मैंने एक कुत्ते को जन्म दिया था या एक बेटे को।"

राजा ने तुरन्त ही अपने नौकरों को महल की छत पर वह बक्सा लाने के लिये भेजा। जब वे बक्सा ले कर आये और उसको खोला गया तो उस बक्से में वाकई एक बच्चे का ढॉचा निकला।

इस पर सारा शहर चिल्लाया — "इस लड़की की बजाय रानी और दाई को फॉसी पर चढ़ा दो।"

राजा ने ऐसा ही किया और दोनों बुढ़ियों को फॉसी पर लटका दिया गया। राजा की पत्नी को इज़्ज़त के साथ घर वापस ले आया गया। राजा ने रानी से माफी मॉगी और रानी के दोनों भाइयों को राजा ने अपना प्रधान मन्त्री बना लिया।

उसके बाद सब खुशी खुशी रहने लगे।

9 पोम और पील[31]

एक बार की बात है कि किसी समय में एक बहुत ही भले पति पत्नी रहते थे। उनके कोई बच्चा नहीं था सो उनको एक बेटे की बहुत इच्छा थी।

एक दिन पति कहीं बाहर गया हुआ था कि रास्ते में उसको एक जादूगर मिला। उसने उस जादूगर से कहा — "जादूगर साहब, मुझे एक बेटा चाहिये। मैं एक बेटा पाने के लिये क्या करूँ?"

जादूगर ने उसको एक सेब दिया और कहा — "लो यह सेब लो और इसको अपनी पत्नी को खिला देना और नौ महीने बाद उसको एक बहुत ही अच्छा बेटा हो जायेगा।"

पति उस सेब को ले कर घर वापस आ गया। वह सेब उसने अपनी पत्नी को दे कर कहा — "लो यह सेब खा लो। यह सेब मुझे एक जादूगर ने दिया है और कहा है कि इसको खा कर तुम्हारे एक बेटा हो जायेगा।"

उसकी पत्नी तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गयी। उसने तुरन्त अपनी दासी को बुलाया और उस सेब को छील कर लाने के लिये कहा।

[31] Pom and Peel. Tale No 33. A folktale from Venice, Italy, Europe.

दासी वह सेब छील कर ले आयी। छिला हुआ सेब तो उसने अपनी मालकिन को दे दिया पर उसके छिलके उसने अपने पास रख लिये और उनको उसने खुद खा लिया।

पत्नी को नौ महीने बाद एक बेटा हुआ और उसी दिन उस दासी को भी एक बेटा हुआ। पत्नी का बेटा सफेद रंग का था जैसा कि सेब के गूदे का रंग होता है और दासी का बेटा लाल रंग का था जैसा कि सेब के छिलके का रंग होता है।

पत्नी के बेटे का नाम था पोम और दासी के बेटे का नाम था पील। दोनों बच्चे बड़े होते गये। दोनों बच्चे एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे और भाइयों की तरह से रहते थे।

एक बार वे दोनों बाहर घूम रहे थे तो उन्होंने सुना कि एक जादूगर की बेटी है जो सूरज की तरह चमकीली है पर किसी ने उसको देखा नहीं था क्योंकि वह अपने घर से कभी बाहर ही नहीं निकलती थी। यहाँ तक कि वह कभी खिड़की से भी नहीं झाँकती थी।

पोम और पील के पास एक ताँबे का घोड़ा था जो अन्दर से खोखला था। एक दिन वे दोनों उसमें वायलिन और बिगुल ले कर बैठ गये और क्योंकि वे उस घोड़े को उसके पहियों को अन्दर से घुमा कर चला सकते थे सो वे उस घोड़े में बैठ कर अपनी वायलिन और बिगुल बजाते हुए उस घोड़े को उसके पहियों

को अन्दर से घुमाते हुए चला कर जादूगर के महल की तरफ चल दिये।

जब वे जादूगर के महल के पास पहुँचे तो जादूगर ने बाहर देखा तो उसको एक बहुत ही बढ़िया ताँबे का घोड़ा दिखायी दिया जिसमें से संगीत निकल रहा था।

वह उस घोड़े को अन्दर ले आया और उस आश्चर्यजनक चीज़ दिखाने के लिये अपनी बेटी को अन्दर से बाहर बुलाया। उस संगीत वाले घोड़े को देख कर उसकी बेटी भी बहुत खुश हुई।

पर जैसे ही वह उस घोड़े के साथ अकेली रह गयी पोम और पील दोनों उस घोड़े में से बाहर निकल आये। उनको देख कर वह लड़की डर गयी।

उन्होंने उससे कहा — "तुम डरो नहीं। हमने सुना था कि तुम बहुत सुन्दर हो तो बस हम तो तुमको केवल देखना चाहते थे सो यहाँ इस तरीके से हमने तुम्हें देख लिया।

अब अगर तुम यह चाहती हो कि हम लोग यहाँ से चले जायें तो हम चले जायेंगे पर अगर तुमको हमारा संगीत पसन्द हो और तुम चाहती हो कि हम तुम्हारे लिये वह संगीत बजाते रहें तो हम वह संगीत बजाते रहेंगे। फिर किसी के बिना जाने कि हम यहाँ कभी आये भी थे हम चले जायेंगे।"

लड़की को उनका संगीत अच्छा लगा तो वे वहाँ रुक गये और अपना संगीत उसको सुनाते रहे और फिर कुछ देर बाद तो वह उनको खुद ही जाने नहीं देना चाहती थी।

तो पोम बोला — "अगर तुम हमको यहाँ से नहीं जाने देना चाहतीं तो फिर चलो हमारे साथ। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।"

वह लड़की तैयार हो गयी। वे तीनों उस घोड़े के पेट में छिप गये और वह घोड़ा फिर अपने पहियों पर चलने लगा। वे तीनों वहाँ से चल कर रात काटने के लिये शाम को आ कर एक सराय में ठहर गये।

जैसे ही वे लोग वहाँ से गये वह जादूगर घर लौटा और अपनी बेटी को आवाज लगायी पर कोई नहीं बोला। उसको उसने इधर उधर भी ढूँढा पर जब उसको उसके महल में नहीं पाया तो अपने चौकीदारों से पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्होंने तो उसको महल से बाहर जाते नहीं देखा।

तब उस जादूगर को लगा कि उसके साथ चाल खेली गयी है। यह सोच कर वह बहुत गुस्सा हो गया। वह अपने महल के छज्जे पर गया और अपनी बेटी को तीन शाप दिये।

"उसको तीन घोड़े मिलेंगे, एक सफेद, एक लाल और एक काला। वे सब घोड़े प्यारे होंगे जैसे कि उसने अभी एक घोड़े से

प्यार किया। वह सफेद घोड़े पर चढ़ेगी और यह सफेद घोड़ा उसका किया हुआ सब कुछ बेकार कर देगा।

फिर उसको तीन सुन्दर छोटे छोटे कुत्ते मिलेंगे, एक सफेद, एक लाल और एक काला। वह काले कुत्ते को पसन्द करेगी जैसे कि वह करती है और वह काला कुत्ता भी उसका किया हुआ सब कुछ बेकार कर देगा।

फिर जब वह रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर जायेगी तो उसके कमरे में एक बहुत बड़ा सॉप आयेगा। वह खिड़की के रास्ते से आयेगा और उसको काट कर मार देगा।"

जब वह जादूगर ये तीन शाप अपने छज्जे पर से चिल्ला रहा था तो तीन बूढ़ी परियॉ नीचे सड़क पर से गुजर रहीं थी। उन्होंने ये शाप सुने और वे ये शाप सुनती हुई चलती गयीं और चलती गयीं।

अपनी लम्बी यात्रा के बाद शाम को थक कर वे परियॉ भी इत्तफाक से उसी सराय में रुकीं जिसमें पोम, पील और जादूगर की वह बेटी रुके हुए थे।

जैसे ही वे अन्दर घुसीं तो एक परी बोली — "ज़रा उस जादूगर की बेटी को देखना। अगर उसको अपने पिता के तीनों शापों का पता चल जाये तो वह बेचारी तो ठीक से सो भी नहीं सकेगी।"

उसी सराय में एक बैन्च पर पोम, पील और जादूगर की बेटी भी सो रहे थे। पोम और जादूगर की बेटी तो सो गये थे पर पील को अभी नींद नहीं आयी थी।

पील इतना अक्लमन्द था कि वह एक ऑख खोल कर सोता था इसी लिये उसको पता रहता था कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा है और इसी लिये यह परी भी क्या कह रही थी यह सब भी उसने सुन लिया था।

परी आगे बोली — "अगर उस जादूगर की यह इच्छा है कि उसकी बेटी को तीन घोड़े मिलें – सफेद, लाल और काला और वह सफेद घोड़े पर बैठे जो उसके सारे किये कराये को बेकार कर देगा तो ऐसा ही होगा।"

तो दूसरी परी बोली — "पर अगर कोई दूर का देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो और वह उस सफेद घोड़े का सिर तुरन्त ही काट दे तो उस लड़की को कुछ नहीं होगा।"

इस पर तीसरी परी बोली — "और जो भी इस बात को अपने मुॅह से निकालेगा वह पत्थर बन जायेगा।"

इसके बाद पहली परी फिर बोली — "इसके बाद जादूगर की इच्छा है कि उसकी बेटी को तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते मिलें और वह उन कुत्तों में से उसी कुत्ते को चुने जिसको वह जादूगर उससे चुनवायेगा यानी काले कुत्ते को चुने और वह उसके किये कराये को बेकार कर देगा तो ऐसा ही होगा।"

तो दूसरी परी बोली — "पर अगर कोई दूर देखने वाला आदमी यहाँ मौजूद हो तो वह उस काले कुत्ते का सिर काट देगा और फिर उसको कुछ नहीं होगा।"

तीसरी परी बाली — "और अगर इसके बारे में वह किसी से कुछ भी बोला तो वह पत्थर का बन जायेगा।"

पहली परी फिर बोली — "उसकी तीसरी और आखिरी इच्छा यह है कि जब वह रात को अपने बिस्तर पर सोने जाये तो उसकी खिड़की से एक बहुत बड़ा साँप आयेगा और उसको मार डालेगा। तो यह भी हो कर ही रहेगा।"

तो दूसरी परी फिर बोली — "पर अगर कोई दूर देखने वाला आदमी यहाँ मौजूद हो तो वह उस साँप का सिर काट देगा और फिर उसे कुछ नहीं होगा।"

तीसरी परी बाली — "और अगर इसके बारे में वह एक शब्द भी किसी को बतायेगा तो वह पत्थर का बन जायेगा।"

इस तरह पील को तीनों भयानक भेदों का पता चल गया जिनको अगर वह ठीक से बरतता तो जादूगर की बेटी की जान बचा सकता था और अगर किसी और को बताता तो वह खुद पत्थर का बन जाता।

अगले दिन पोम, पील और वह जादूगर की बेटी तीनों वह सराय छोड़ कर आगे चले जहाँ पोम का पिता उन लोगों के लिये

तीन घोड़े लिये इन्तजार कर रहा था – एक सफेद, एक काला और एक लाल।

जादूगर की बेटी तुरन्त ही कूद कर सफेद घोड़े पर बैठ गयी पर पील भी तेज था। उसने भी तुरन्त ही उस घोड़े का सिर काट दिया।

पोम बोला — "यह तुमने क्या किया पील? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो तुमने उसे मार डाला? वह घोड़ा तो मुझको बहुत ही प्यारा था।"

पील बोला —"मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हारा वह प्यारा घोड़ा मार दिया पर यह सब मैं तुमको अभी नहीं बता सकता।"

जादूगर की बेटी बोली — "पोम, इस पील का दिल तो बहुत ही खराब है। मैं अब इसके साथ नहीं जाऊँगी।"

पर पील ने यह मान लिया कि उसने पागलपन में उस घोड़े को मार डाला था और उसने इस बात के लिये जादूगर की बेटी से माफी भी माँग ली। जादूगर की बेटी ने उसको माफ कर दिया।

पोम के पिता उन सबको ले कर अपने घर पहुँचे तो वहाँ तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते उनका स्वागत करने आये – एक सफेद, एक काला और एक लाल।

जादूगर की बेटी तुरन्त ही काले छोटे कुत्ते को उठाने के लिये झुकी कि पील ने अपनी तलवार से तुरन्त ही उस काले कुत्ते का सिर काट दिया।

जादूगर की बेटी बड़ी ज़ोर से चिल्लायी — "तुम तो बहुत ही पागल और बेरहम आदमी हो पील। दूर हो जाओ मेरी नजरों से। तुमने पहले मेरा घोड़ा मार दिया और अब यह प्यारा सा छोटा सा कुत्ता भी मार दिया।"

उसी समय पोम के माता पिता भी बाहर निकल आये। उन्होंने खुशी खुशी अपने बेटे और बहू का स्वागत किया और बहू को समझाया कि वह एक बार पील को फिर से माफ कर दे।

पर शाम को खाने के समय जबकि सब लोग बहुत खुश थे पील कुछ उदास और अकेला सा बैठा था। कोई उसको उकसा कर अपने साथ बातें करने पर मजबूर भी नहीं कर पा रहा था।

लोगों ने उससे पूछने की कोशिश भी की कि वह उदास सा क्यों था पर उसने सबको यह कह कर टाल दिया था कि कोई खास बात नहीं थी बस वह ज़रा थका हुआ था।

वह दावत से पहले ही यह कह कर उठ कर वहाँ से चला गया कि अपनी थकान की वजह से उसको नींद आ रही थी और वह सोने जा रहा था। पर वह अपने कमरे की बजाय पोम के सोने के कमरे में जा कर उसके पलंग के नीचे छिप गया।

जब पोम और जादूगर की बेटी सोने के लिये अपने कमरे में आये और अपने पलंग पर लेटे तो पील पलंग के नीचे से उनके कमरे की खिड़की पर निगाह जमाये हुए था।

जब पोम और जादूगर की बेटी गहरी नींद सो गये तो पील ने उस कमरे की खिड़की का शीशा टूटने की आवाज सुनी। उसकी ऑखें तो खिड़की की तरफ ही लगी थीं।

उसने देखा कि बहुत बड़ा सॉप उस खिड़की से हो कर कमरे के अन्दर आने की कोशिश रहा था। पील तुरन्त ही पलंग के नीचे से बाहर निकला और अपनी तलवार से उसका सिर काट दिया।

इस शोर से जादूगर की बेटी की ऑख खुल गयी। उस समय उसको वह बड़ा सॉप तो दिखायी नहीं दिया क्योंकि वह तो गायब हो गया था बस केवल पील ही अपने हाथ में नंगी तलवार लिये वहॉ खड़ा दिखायी दिया।

उसको इस तरीके से खड़ा देख कर वह ज़ोर से चिल्लायी — “बचाओ बचाओ। हत्या हत्या। यह पील हमको मारना चाहता है। मैंने उसको दो बार तो माफ कर दिया पर अबकी बार मैं उसको माफ नहीं कर सकती। इस बार तो इस जुर्म के लिये उसको मरना ही पड़ेगा।”

यह सुन कर सब जाग गये और पोम के सोने के कमरे की तरफ भागे। पील को पकड़ कर जेल भेज दिया गया और तीन दिन बाद उसको फॉसी लगाने का दिन निश्चित कर दिया गया।

यह सोच कर कि अब चाहे वह यह भेद किसी को बताये या न बताये उसे तो मरना ही है सो उसने मरने से पहले पोम की पत्नी को

तीन बातें बताने की इजाज़त माँगी। उसको इजाज़त दे दी गयी। पोम की पत्नी उससे मिलने के लिये जेल में आयी।

पील ने उससे कहा — "तुम्हें याद है जब हम तुम्हारे पिता के घर से भाग कर पहली बार एक सराय में रुके थे?"

"हाँ हाँ बिल्कुल याद है।"

"उस समय तुम और तुम्हारा पति तो सो रहे थे पर मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं उस समय जागा हुआ था। उस समय वहाँ तीन परियाँ आयीं और उन्होंने आपस में बात की कि तुम्हारे जादूगर पिता ने तुमको तीन शाप दिये।

पहला शाप तो यह कि तुमको तीन घोड़े मिलेंगे – सफेद, लाल और काला। पर तुम सफेद घोड़े पर चढ़ोगी जो तुम्हारा सब कुछ खत्म कर देगा। पर अगर कोई सफेद घोड़े का गला काट देगा तो तुम बच जाओगी। और जो भी यह बात किसी और से कहेगा तो वह पत्थर का हो जायेगा।"

जैसे ही पील ने अपनी यह बात खत्म की उस बेचारे के पैर और टाँगें संगमरमर की हो गयीं। जादूगर की बेटी समझ गयी। वह रुआँसी हो कर बोली — "पील, बस इतना काफी है और आगे कुछ मत बोलना।"

पर वह आगे बोलता ही गया — "मुझे तो मरना ही है चाहे मैं बोलूँ या न बोलूँ इसलिये मैं बोलने के बाद मरना ज़्यादा पसन्द करूँगा।

उन तीनों परियों ने यह भी कहा कि जादूगर का अपनी बेटी को दूसरा शाप यह था कि फिर उसको तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते मिलेंगे – सफेद, लाल और काला।

पर वह काले कुत्ते को अपनी गोद में उठायेगी जो उसका सब कुछ खत्म कर देगा। पर अगर कोई उस काले कुत्ते को मार देगा तो वह बच जायेगी। और जो भी यह बात किसी और से कहेगा वह पत्थर का हो जायेगा।"

जब पील ने कुत्ते वाला शाप पोम की पत्नी को बताया तो उसका शरीर उसकी गर्दन तक संगमरमर का हो गया। जादूगर की बेटी यह सब सुन कर रो पड़ी।

वह रोते रोते बोली — "पील, मेहरबानी कर के मुझे माफ कर दो। मैं समझ गयी। अब कुछ और मत कहो।"

पर क्योंकि अब पील का गला पत्थर का हो चुका था और उसका जबड़ा भी पत्थर का हो रहा था उसकी आवाज भर्रा रही थी।

उसी भर्रायी हुई आवाज में उसने कहा — "और जो कोई इस बात को अपने मुँह से कहेगा वह पत्थर का हो जायेगा।" और यह कहने के बाद तो वह सिर से पैर तक संगमरमर की मूर्ति ही बन गया।

पील की पत्नी बहुत ज़ोर से रो पड़ी और रो रो कर कहने लगी — "आह यह मैंने क्या किया। मैंने एक ऐसे वफादार आदमी को मार दिया जिसने मेरी जान बचायी।"

फिर कुछ सोच कर उसने अपने आँसू पोंछे और बोली अगर इस आदमी को कोई फिर से ज़िन्दा कर सकता है तो वह हैं मेरे पिता जी खुद।

सो उसने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी — "प्रिय पिता जी, आप मुझे माफ कर दें और मेहरबानी कर के तुरन्त ही यहाँ आ जायें।"

वह जादूगर अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था सो उसकी चिट्ठी मिलते ही वह अपनी बेटी के पास दौड़ा चला आया।

उसकी बेटी ने उसे चूमा और बोली — "पिता जी, मुझे आपसे एक सहायता चाहिये। ज़रा इस बेचारे नौजवान को देखिये। आपके तीन शापों से मेरी रक्षा कर के मेरी जान बचाने के बदले में यह बेचारा सारा का सारा पत्थर का हो गया है। मेहरबानी कर के आप इसको ज़िन्दा कर दीजिये।"

जादूगर बोला — "बेटी तुम्हारे प्यार की खातिर मैं यह भी करूँगा।" उसने अपनी जेब से बालसम[32] के मरहम की एक शीशी निकाली

[32] Balsam (also called Turpentine) is a kind of sweet smelling sap of certain trees and shrubs used for medicinal purposes. It has flowers also – see the picture of its flower above.

और पील के सारे शरीर पर चुपड़ दी। उस मरहम के लगाते ही पील तुरन्त ही ज़िन्दा हो गया।

इस तरह फिर उसे फॉसी के फन्दे की तरफ ले जाने की बजाय वे लोग उसको एक गाड़ी में बिठा कर गाते बजाते और "पील जिन्दाबाद" के नारे लगाते हुए घर ले गये।

इस तरह पील ने जादूगर की बेटी की जान बचायी और जादूगर की बेटी ने पील की जान बचायी।

10 आधा नौजवान[33]

एक बार एक लड़की को बच्चे की आशा हुई तो उसकी पार्सले[34] खाने की इच्छा हुई। उसके घर के बराबर में एक जादूगरनी रहती थी। इस जादूगरनी का पार्सले का एक बहुत बड़ा बागीचा था और उस बागीचे का दरवाजा हमेशा खुला रहता था।

क्योंकि पार्सले वहाँ बहुत पैदा होता था सो उस बागीचे में कोई भी अन्दर आ सकता था और अपने आप पार्सले तोड़ कर ले जा सकता था।

सो वह लड़की भी उस जादूगरनी के बागीचे में पार्सले तोड़ने के लिये चली गयी। उसकी पार्सले खाने की इच्छा इतनी ज़्यादा थी कि वह उस जादूगरनी के बागीचे का करीब करीब आधा पार्सले खा गयी।

जब वह जादूगरनी वापस आयी तो उसने देखा कि उसके बागीचे से तो आधा पार्सले गायब हो चुका था। उसने सोचा कि वह अगले दिन अपने पार्सले के खेत पर नजर रखेगी कि उसका इतना सारा पार्सले कौन ले गया।

---

[33] Cloven Youth. Tale No 34. A folktale from Venice, Italy, Europe.

[34] Parsley is a kind of herb, looks like green coriander leaves (cilanthro). It is most used in Italian dishes both as fresh and dried herbs. See its picture above.

वह लड़की वहाँ बचा हुआ पार्सले खाने के लिये अगले दिन भी गयी। उसने मुश्किल से उस बागीचे के पार्सले का आखिरी पौधा खाया होगा कि वह जादूगरनी वहाँ आ गयी और बोली — "आहा, तो वह तुम हो जो मेरे बागीचे का सारा पार्सले खा गयीं।"

वह लड़की बेचारी डर गयी और गिड़गिड़ाती हुई बोली — "मेहरबानी कर के मुझे जाने दो। मैं एक बच्चे की माँ बनने वाली हूँ। मेरी पार्सले खाने की इच्छा हुई तो मैं यहाँ आ गयी।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है मैं तुमको जाने देती हूँ पर जो भी बच्चा तुमको होगा, चाहे वह लड़का हो या लड़की, जब वह सात साल का हो जायेगा तब वह आधा मेरा होगा और आधा तुम्हारा।"

यह सुन कर वह लड़की बहुत डर गयी सो वह जल्दी से उसको हाँ कर के वहाँ से चली आयी। समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बेटा अपने समय से बड़ा होने लगा।

जब उसका बेटा छह साल का हो गया तो एक दिन सड़क पर उसको वह जादूगरनी मिली। उस बच्चे को देख कर वह बोली — "अपनी माँ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

बच्चा घर आया और अपनी माँ से बोला — "माँ आज मुझे अपनी पड़ोसन मिली थी। वह कह रही थी कि अपनी माँ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

मॉ बोली — "अगर अबकी बार वह तुमको फिर मिले और फिर यह कहे कि "बस अब एक साल ही और बाकी है।" तो तुम कहना कि "तुम पागल हो"।"

जब उस बच्चे के सात साल के होने में तीन महीने बाकी रह गये तो एक दिन उस पड़ोसन ने फिर उस बच्चे से कहा — "अपनी मॉ से कहना कि बस अब केवल तीन महीने ही और बाकी रह गये हैं।"

बच्चे ने घर आ कर अपनी मॉ को अपनी पड़ोसन के शब्द जैसे के तैसे दोहरा दिये। उसकी मॉ ने फिर कहा कि "अगर अबकी बार वह तुमसे ऐसा वैसा कुछ कहे तो तुम उससे कहना कि "मैम तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या"।"

बच्चे ने मॉ के शब्द उस पड़ोसन को बोल दिये तो पड़ोसन बोली — "देखते हैं किसका दिमाग खराब होता है।"

तीन महीने बाद बुढ़िया जादूगरनी उस बच्चे को सड़क पर से उठा कर ले गयी और अपने घर ले जा कर उसे एक मेज पर पीठ के बल लिटा दिया। फिर एक बड़ा सा चाकू उठाया और सिर से ले कर पैर तक उसको दो बराबर हिस्सों में बॉट दिया।

एक हिस्से से उसने कहा — "तुम घर जाओ।" और दूसरे हिस्से से कहा — "तुम मेरे पास रहो।" सो एक हिस्सा अपनी मॉ के पास अपने घर चला गया और दूसरा हिस्सा उसके अपने पास रह गया।

एक हिस्सा जो घर चला गया था अपनी माँ से जा कर बोला — "देखा माँ? उस बुढ़िया ने मेरे साथ क्या किया और तुम कहती थी कि उसका दिमाग खराब हो गया है, वह पागल हो गयी है।"

उसकी माँ ने गुस्से में आ कर अपने हाथ पैर फेंके पर अब वह कर ही क्या सकती थी उसका बेटा तो आधा हो ही चुका था। अब यह आधा लड़का और बड़ा होने लगा पर उसको यही पता नहीं था कि वह आगे चल कर अपनी ज़िन्दगी में क्या करेगा।

आखिर उसने मछियारा बनने का निश्चय किया। एक दिन जब वह ईल मछली[35] पकड़ रहा था तो उसने एक इतनी लम्बी ईल मछली पकड़ी जितना लम्बा वह खुद था।

जब उसने उसे बाहर खींचा तो वह ईल बोली — "तुम मुझे जाने दो और फिर तुम मुझे दोबारा पकड़ना।"

यह सुन कर उस लड़के ने उस मछली को फिर से पानी में फेंक दिया। उस मछली के कहे अनुसार उसने अपना मछली पकड़ने वाला जाल फिर से पानी में डाला और जब फिर से उसे खींचा तो अबकी बार उस जाल में बहुत सारी ईल मछलियाँ थीं।

वह अपनी ईल मछलियों से भरी नाव ले कर किनारे आ गया और उस दिन उसने उनको बेच कर बहुत सारा पैसा कमाया।

[35] Eel fish – a kind of fish like a snake. See its picture above

अगले दिन जब वह मछली पकड़ने गया तो उसके जाल में वही बड़ी ईल मछली फिर से आ गयी। अबकी बार उसने लड़के से कहा — "मुझे जाने दो और छोटी ईल की कसम खा कर जो कुछ भी तुम माँगोगे तुम्हारी वह इच्छा पूरी होगी।" सो उसने उस बड़ी ईल को फिर पानी में छोड़ दिया।

एक दिन जब वह मछली पकड़ने जा रहा था तो वह राजा के महल के पास से गुजरा। महल की खिड़की पर राजा की बेटी अपनी दासियों के साथ बैठी हुई थी।

उसने रास्ते पर जाता एक ऐसा आदमी देखा जो सिर से पैर तक आधा था – आधा शरीर, आधा सिर, एक बाँह, एक टाँग। वह ऐसे अजीब आदमी को देख कर हँस पड़ी।

उसकी हँसी की आवाज सुन कर लड़के ने ऊपर देखा और बोला — "तुम मेरे ऊपर हँस रही हो? छोटी ईल की कसम, राजा की बेटी के मुझसे एक बच्चा होगा।" यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

कुछ समय बाद ही राजा की बेटी को बच्चे की आशा हुई तो राजकुमारी घबरायी।

उसके माता पिता को भी इस बात का पता चल गया तो उन्होंने अपनी बेटी से पूछा — "इसका क्या मतलब है?"

बेटी बोली — "पिता जी, मैं भी आप ही की तरह से इस बात से बिल्कुल अनजान हूँ। मुझे कुछ नहीं मालूम।"

माता पिता बोले — "हमारी यह समझ में नहीं आया कि हमारी तरह तुम इस बात से अनजान कैसे हो? इसका पिता कौन है?"

राजा की बेटी रुऑसी हो कर बोली — "पिता जी, मुझे सचमुच ही कुछ पता नहीं है। मैं इसके बारे में वाकई कुछ भी नहीं जानती।"

उसके माता पिता उससे कई बार पूछते रहे और यह भी कहते रहे कि वह उनको सच सच बता दे। उसकी अगर कोई भी गलती होगी तो वे उसको माफ कर देंगे पर वह अपनी इसी बात पर अड़ी रही कि उसको इस बारे में कुछ पता नहीं है और वह बेकुसूर है।

जब उस लड़की ने कुछ बता कर नहीं दिया तो उन्होंने उसको बुरा भला कहना शुरू किया और उसके साथ बुरा बर्ताव करना शुरू कर दिया।

समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बजाय खुश होने के उस लड़की के माता पिता खूब रोये क्योंकि उनके घर में एक बिना बाप का बेटा पैदा हुआ था।

इस बात की पहेली सुलझाने के लिये उन्होंने एक जादूगर को बुलवाया। जादूगर बोला — "एक साल तक इन्तजार करो जब तक यह एक साल का होता है तब शायद कुछ पता चले।"

एक साल के बाद जादूगर ने कहा — "तुमको इस बच्चे के जन्म पर एक शानदार दावत देनी चाहिये और उसमें सारे कुलीन लोगों को बुलाना चाहिये।

जब वे सब यहाँ आ जायें तो एक सोने का और एक चाँदी का सेब इस बच्चे के हाथ में देना चाहिये।

फिर यह बच्चा उन सेबों को ले कर सबके सामने जाये। यह बच्चा सोने का सेब अपने पिता को दे देगा और चाँदी का सेब अपने नाना को दे देगा।"

सो राजा ने अपने धेवते[36] के लिये दो सेब बनवाये एक सोने का और एक चाँदी का। और फिर उसके जन्म की ख़ुशी में एक बहुत बड़ी शानदार दावत का इन्तजाम किया।

इस दावत में बहुत सारे जाने माने लोगों को बुलाया गया। एक बड़े बन्द कमरे में दीवार के सहारे कुरसियाँ लगवायी गयीं। जब लोग वहाँ आना शुरू हुए तो उनको उन कुरसियों पर बिठाया गया।

जब सब लोग वहाँ आ गये तो बच्चे को उसकी आया के साथ वहाँ लाया गया और उसके हाथ में दो सेब, एक सोने का और एक चाँदी का, दे दिये गये।

बच्चे की आया बच्चे और सेबों को ले कर उस कमरे में चारों तरफ घूमने लगी। चारों तरफ घूम कर वह बच्चा राजा के दिये हुए सेबों के साथ वापस आ गया और उसने चाँदी का सेब ला कर राजा को दे दिया।

[36] Grandson – daughter's son is called Dhevataa or Navaasaa

राजा बोला — "मैं इतना तो अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं तुम्हारा नाना हूँ पर मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारा पिता कौन है।" बच्चे को उस कमरे में कई बार चक्कर लगवाया पर वह बिना किसी को सेब दिये हुए ही राजा के पास वापस आ गया।

वह जादूगर फिर से बुलवाया गया तो उसने कहा कि अबकी बार आप अपने शहर के सब गरीब आदमियों को बुलवाइये। सो राजा ने अबकी बार अपने राज्य के सारे गरीब लोगों के लिये एक दावत का इन्तजाम किया और उसमें उन सबको बुलवाया।

जब उस आधे नौजवान ने यह सुना कि राजा के महल में सब गरीबों के लिये एक दावत हो रही है तो वह अपनी माँ से बोला — "माँ मेरी सबसे अच्छी वाली आधी कमीज, आधी पैन्ट, एक जूता, और मेरी आधी टोपी निकाल दो क्योंकि आज मैं राजा के महल में जा रहा हूँ। आज उन्होंने मुझे वहाँ खाने का न्यौता दिया है।"

माँ ने वैसा ही किया और वह अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर राजा के महल की तरफ चल दिया। कमरा खचाखच भरा था – मछियारे, भिखारी सब तरह के गरीब वहाँ जमा थे। वे सब बैन्चों पर बैठे थे। राजा ने उनके लिये भी बैन्चें दीवार के सहारे सहारे ही लगवा रखी थीं।

जब सब लोग आ गये तो बच्चे की आया बच्चे को ले कर वहाँ आयी। राजा ने बच्चे के हाथ में सोने का सेब दे कर आया को उसको कमरे में चारों तरफ घुमाने के लिये कहा।

आया बच्चे को ले कर चल दी। घुमाते घुमाते वह उस बच्चे से कहती जाती थी — "बेटे, यह सेब अपने पिता को दे दो।"

जैसे ही वह बच्चा उस आधे आदमी के पास पहुँचा तो वह चिल्लाया — "पिता जी यह सेब लीजिये।"

सारे गरीब आदमी यह सुन कर ज़ोर से हँस पड़े — "हा हा हा हा। ज़रा देखो तो राजा की बेटी पड़ी भी तो किसके प्रेम में पड़ी।"

केवल एक राजा ही था जो उस समय पूरे तरीके से शान्त था। वह बोला — "अगर ऐसा है तो यही मेरी बेटी का पति होगा।" और उसने अपनी बेटी की शादी उस आधे नौजवान के साथ कर दी।
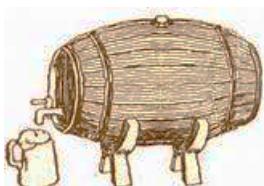
नये शादीशुदा पति पत्नी चर्च से निकले तो उन्होंने सोचा कि उनको वहाँ से ले जाने के लिये कोई बग्घी उनका इन्तजार कर रही होगी पर वहाँ कोई बग्घी तो नहीं, हाँ एक बड़ा सा खाली बैरल[37] रखा था।

राजा ने उस बैरल में उस आधे नौजवान, उसकी पत्नी और उनके बच्चे को रख कर उस बैरल को बन्द कर दिया और उसे समुद्र में फेंक दिया।

[37] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

समुद्र में उस समय तूफान आया हुआ था सो वह बैरल लहरों के ऊपर खूब ऊपर नीचे उछल रहा था। कुछ ही पलों में वह ऑखों से ओझल हो गया। राजा के महल के हर आदमी ने सोचा कि वह बैरल तो अब हमेशा के लिये समुद्र में चला गया।

पर वह बैरल डूबा नहीं था। वह बाहर की तरफ तैरने लगा। आधे नौजवान ने महसूस किया कि राजा की बेटी बहुत डरी हुई थी सो उसने उससे कहा — "प्रिये, क्या तुम चाहती हो कि मैं यह बैरल समुद्र के किनारे ले चलूॅ?"

राजा की बेटी डर से सहमी सी बोली — "हॉ, अगर तुम इस को वहॉ ले जा सकते हो तो।" पर उसके कहने से पहले ही यह हो गया।

"छोटी ईल की कसम, ओ बैरल, समुद्र के किनारे चलो।" और वह बैरल समुद्र के किनारे आ कर लग गया। उस आधे नौजवान ने उस बैरल का तला तोड़ा और वे तीनों उसमें से बाहर निकल आये।

यह खाना खाने का समय था सो वह आधा नौजवान बोला — "छोटी ईल की कसम, हमको खाना चाहिये।" बस तुरन्त ही वहॉ एक मेज लग गयी जिस पर बहुत सारा खाना लगा था।

जब वे पेट भर कर खाना खा चुके तो उस आधे नौजवान ने अपनी पत्नी से पूछा — "क्या तुम मुझसे खुश हो?"

राजा की बेटी बोली — "तुम मुझे तब और ज़्यादा अच्छे लगते जब तुम पूरे होते।"

इस पर उसने अपने आपसे कहा — "छोटी ईल की कसम, क्या मैं पूरा और एक सुन्दर नौजवान बन सकता हूँ?" तुरन्त ही वह आधा नौजवान एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया और एक कुलीन आदमी की तरह दिखायी देने लगा।

उसने राजा की बेटी से फिर पूछा — "अब तो तुम खुश हो न?"

"मैं तब ज़्यादा खुश होती जब तुम एक बढ़िया महल में रह रहे होते। बजाय इसके कि हम समुद्र के इस उजाड़ किनारे पर खड़े हुए हैं।"

उस नौजवान ने फिर कहा — "छोटी ईल की कसम, क्या हम एक बढ़िया महल में रह सकते हैं जिसमें दो सेब के पेड़ लगे हों। एक सेब के पेड़ पर सोने के सेब लगे हों और दूसरे पेड़ पर चाँदी के सेब लगे हों। हमारे पास बहुत सारे दास दासियाँ हों, रसोइये हों और वह सब कुछ हो जो एक महल में होना चाहिये।"

तुरन्त ही वहाँ सब कुछ आ गया – महल, सेब के पेड़, रसोइये, दास, दासियाँ, आदि आदि।

कुछ दिन बाद उस आधे नौजवान ने जो अब आधा नहीं रह गया था बल्कि एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया था सब

राजाओं और कुलीन लोगों को एक दावत का न्यौता भेजा। इसमें उसकी पत्नी के पिता भी शामिल थे।

जब सब लोग उसके घर आये तो उस नौजवान ने उन सबका अपने दरवाजे पर स्वागत किया और कहा — "मैं आप सबको चेतावनी देता हूँ कि कोई भी इन सोने और चाँदी के सेबों को न छुए। अगर आप लोग इनको छुऐंगे भी तो फिर भगवान ही आप की रक्षा करे।"

वे सब बैठ गये और खाने पीने लगे। आधे नौजवान ने चुपके से कहा — "छोटी ईल की कसम, एक सोने का और एक चाँदी का सेब मेरे ससुर जी की जेब में चला जाये।"

ऐसा ही हुआ। एक सोने का और एक चाँदी का सेब उस नौजवान के ससुर की जेब में चला गया।

जब सबने खाना खा लिया तो वह अपने सब मेहमानों को अपने बागीचे में घुमाने के लिये ले गया तो वहाँ पाया कि उसके दो सेब गायब हैं। उस नौजवान ने पूछा — "अरे मेरे दो सेब गायब हैं एक सोने का और एक चाँदी का। किसने लिये हैं मेरे सेब?"

सब बोले "मैंने नहीं लिये", "मैंने नहीं लिये"।

सबकी तलाशी ली गयी पर किसी के पास भी वे सेब नहीं निकले। आधा नौजवान बोला — "मैंने आप सबको पहले ही कहा था कि इन सेबों को छूना नहीं पर अब मैं सब राजाओं की तलाशी लेने के लिये मजबूर हूँ।"

सो वह भीड़ में खड़े हर राजा रानी की तलाशी लेता चल दिया। आखीर में वह अपनी पत्नी के पिता के पास आया और उनकी दोनों जेबों में उसने दो सेब पाये।

वह बोला — "किसी और की तो सेबों को छूने की हिम्मत भी नहीं हुई और आपने दो सेब चुरा लिये? आपको मुझे इन दोनों सेबों का हिसाब देना पड़ेगा।"

राजा ने उसको समझाने की कोशिश करते हुए कहा — "पर मैं इन सेबों के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैंने इनको नहीं चुराया। मैंने तो इनको छुआ भी नहीं। मैं कसम खाता हूँ।"

आधा नौजवान बोला — "पर सारे सबूत तो आपके खिलाफ हैं फिर भी आप कह रहे हैं कि आप बेकुसूर हैं?"

"हाँ मैं यह इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि मैं बेकुसूर हूँ।"

"ठीक। जैसे आप बेकुसूर हैं वैसे ही आपकी बेटी भी तो बेकुसूर हो सकती थी। पर जो बर्ताव आपने उसके साथ किया अगर वैसा ही बर्ताव मैं आपके साथ करूँ तो शायद इसमें कोई अन्याय नहीं होगा।"

उसी समय उसकी पत्नी भी आ गयी और बोली — "अब ऐसा कुछ मत कहना या करना कि मेरे पिता को मेरी वजह से कुछ सहना पड़े। वह अगर मेरे लिये बेरहम थे भी फिर भी वह मेरे पिता हैं और मैं तुमसे उनके ऊपर दया करने की भीख माँगती हूँ।"

आधे नौजवान ने दया कर के राजा को माफ कर दिया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश था जिसको उसने मरा समझ लिया था और साथ में यह जान कर भी बहुत खुश था कि वह बेकुसूर थी।

राजा उन तीनों को फिर अपने घर ले गया। वहॉ वे सब खुशी खुशी रहने लगे। जब तक वे जिये तब तक सब आपस में हिल मिल कर रहे।

11 खुश आदमी की कमीज[38]

एक बार एक राजा था जिसके एक ही बेटा था और किसी के भी बारे में सोचने के लिये बस वही उसकी दुनियाँ थी।

पर उसका वह बेटा हमेशा उदास रहता था। वह सारा सारा दिन खिड़की में बैठा बैठा खिड़की के बाहर खाली जगह को देखता रहता।

राजा ने पूछा — "बेटे तुमको दुनियाँ में किस चीज़ की कमी है जो तुम इतने उदास रहते हो? तुम्हारे साथ क्या गड़बड़ है? कुछ तो बताओ।"

"पिता जी मुझे खुद कुछ नहीं मालूम।"

"क्या तुमको किसी से प्यार हो गया है? अगर ऐसी कोई खास लड़की है जो तुमको पसन्द है तो तुम मुझे बताओ मैं उसकी शादी तुमसे करा दूँगा। चाहे वह किसी सबसे ज़्यादा ताकतवर राजा की बेटी हो और या फिर सबसे गरीब किसान की बेटी।"

"नहीं पिता जी, मुझे किसी से प्यार व्यार नहीं हुआ है।"

"फिर क्या बात है?"

[38] The Happy Man's Shirt. Tale No 39. A folktale from Italy from its Priuli area.

राजा ने उसको खुश करने की हर मुमकिन कोशिश कर ली पर नाटक, नाच, संगीत सम्मेलन[39] कुछ भी उसको खुश नहीं कर पा रहे थे।

इस तरह से राजकुमार का गुलाबी चेहरा रोज ब रोज पीला पड़ता जा रहा था और साथ में राजा भी दुखी रहता था। आखिरकार राजा ने अपने सारे राज्य में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई उसके बेटे को हॅसा पायेगा उसको भारी इनाम दिया जायेगा।

दुनियॉ के कोने कोने से बहुत पढ़े लिखे लोग आये – डाक्टर प्रोफेसर ज्योतिषी आदि आदि। राजा ने उन सबको अपने बेटे को दिखाया और उनकी सलाह ली। वे सब एक जगह चले गये और सोचने के लिये कुछ समय मॉगा।

कुछ समय बाद वे राजा के पास लौटे और बोले — "राजा साहब हम लोगों ने बहुत सोचा बहुत सोचा। हमने राजकुमार के सितारे भी पढ़े।

उस सबसे हमें ऐसा लगता है कि आपको यह करना चाहिये कि आप किसी ऐसे खुश आदमी को ढूॅढें जो सारी ज़िन्दगी खुश रहा हो। अगर उसकी कमीज आप अपने बेटे की कमीज से बदल दें तो यह मुमकिन है कि वह खुश हो जाये।"

[39] Theater, Balls, Concerts

उसी दिन राजा ने अपने बहुत सारे आदमी एक ऐसा खुश आदमी ढूँढने के लिये दुनियाँ के कोने कोने में भेज दिये जो सारी ज़िन्दगी खुश रहा हो।

एक पादरी राजा के पास लाया गया तो राजा ने उससे पूछा — "क्या आप खुश हैं?"

"जी हाँ राजा साहब।"

"तो क्या आप मेरा पादरी बनना पसन्द करेंगे?"

"जैसा आप चाहें।"

"दूर हो जाओ मेरी आँखों के सामने से। मैं तो किसी ऐसे आदमी की तलाश में हूँ जो जैसा है वह वैसा ही खुश है। ऐसे आदमी की तलाश में नहीं जो अपनी तरक्की की तलाश में हो।"

और इस तरह राजा की तलाश जारी रही। जल्दी ही राजा को उसके एक पड़ोसी राजा के बारे में बताया गया जिसको सब लोगों ने कहा कि वह सच्चे तरीके से एक खुश आदमी था।

उस राजा की एक पत्नी थी जो जितनी सुन्दर थी उतनी ही अच्छी और अक्लमन्द भी थी। उस राजा के कई बच्चे थे। उसने अपने सारे दुश्मनों को जीत लिया था और उसके देश में शान्ति ही शान्ति थी।

उस राजा के बारे में सुन कर राजा को कुछ उम्मीद हुई कि हो सकता है वही ऐसा खुश आदमी हो जिसकी कमीज से वह अपने

बेटे की कमीज से बदल कर अपने बेटे को खुश कर सके सो उसने अपने कुछ आदमी उसकी कमीज लाने के लिये भेजे।

पड़ोसी राजा ने उस राजा के आदमियों का स्वागत किया और बोला — "हॉ मेरे पास वह सब कुछ है जो किसी भी आदमी को खुश रखने को चाहिये पर मुझे यह चिन्ता है कि मुझे एक दिन मरना पड़ेगा और यह सब मैं यहीं छोड़ जाऊँगा। इस चिन्ता में मैं रात को सो भी नहीं सकता।"

राजा के आदमियों ने सोचा कि उनकी अक्लमन्दी इसी में है कि वे इस आदमी की कमीज लिये बिना ही घर लौट जायें।

एक दिन राजा शिकार खेलने गया। वहॉ जा कर उसने एक खरगोश पर अपना तीर मारा पर उस तीर से वह केवल घायल ही हो पाया, मरा नहीं। वह अपनी तीन टॉगों पर लॅगड़ाता हुआ वहॉ से भाग गया।

राजा ने उसका पीछा किया और इस पीछा करने में शिकार करने के लिये जो लोग उसके साथ आये वे पीछे रह गये। जब वह एक खुली जगह आया तो उसने एक आदमी के गाने की आवाज सुनी।

गाने की आवाज सुन कर राजा वहीं रुक गया और अपने मन में सोचने लगा कि यह कौन आदमी हो सकता है जो इस जंगल में इतनी खुशी से गा रहा है।

उस आवाज का पीछा करते करते वह एक अंगूर के बागीचे में पहुँच गया। वहाँ जा कर उसने देखा कि एक नौजवान अंगूर की बेलों की काट छाँट कर रहा है और गाना गा रहा है।

राजा को देखते ही वह बोला — "राजा साहब गुड डे[40]। अभी तो बहुत जल्दी है और आप बाहर निकल आये हैं?"

"खुश रहो बेटा। मैं यहाँ रास्ता भूल गया हूँ। क्या तुम मुझको मेरी राजधानी ले चलोगे? तुम मेरे दोस्त बन कर रहोगे।"

वह नौजवान बोला — "मुझे आपको आपकी राजधानी पहुँचा कर तो बहुत खुशी होगी राजा साहब। पर मैं तो इस बारे में सोचूँगा भी नहीं कि मैं आपका दोस्त हूँ या नहीं। मैं तो पोप[41] की जगह भी नहीं लेना चाहता।"

राजा आश्चर्य से बोला — "क्यों नहीं? तुम जैसा अच्छा आदमी भी. . . ।"

नौजवान ने उसको समझाया — "नहीं नहीं। मैं आपको बताता हूँ कि ऐसा क्यों है। क्योंकि जो कुछ मेरे पास है मैं तो उसी से सन्तुष्ट हूँ। मुझे इससे ज़्यादा और कुछ चाहिये ही नहीं।"

राजा ने सोचा — "आखिर मुझे एक खुश आदमी मिल ही गया। अब मैं इसकी कमीज से अपने बेटे की कमीज बदल कर अपने बेटे को खुश कर लूँगा।"

---

[40] Good Day – a general way of greeting in western countries – means that this day be good to you.
[41] Pope who is the Head of Christian Churches

वह उससे बोला — "सुनो ओ नौजवान। मेरा एक काम करोगे?"

"अपने पूरे दिल के साथ, अगर मैं कर सका तो।"

"तुम ज़रा यहीं रुको मैं अभी आया।" राजा तो अपनी खुशी ही नहीं रोक पा रहा था। वह तुरन्त ही अपने लोगों को लेने के लिये दौड़ गया।

और वहाँ जा कर बोला — "मेरे साथ आओ। मेरा बेटा बच गया, मेरा बेटा बच गया।" और वह उन लोगों को उस नौजवान के पास ले गया और उससे बोला — "मेरे प्यारे बच्चे। मैं तुमको तुम जो चाहोगे वह सब दूँगा पर तुम मुझको अपनी वह दे दो।"

"क्या राजा साहब, मैं आपको अपनी वह क्या दे दूँ?"

"बेटे, मेरा बेटा मर रहा है। उसे केवल तुम ही बचा सकते हो। यहाँ आओ मेरे साथ चलो।"

राजा ने उसको पकड़ा और उसकी जैकेट के बटन खोलने लगा। पर बटन खोलते खोलते वह तुरन्त ही रुक भी गया। उसकी बाँहें उसके दोनों तरफ लटक गयीं और वह खड़ा उसको भौंचक्का सा देखता ही रह गया।

वह तो अपनी जैकेट के नीचे कोई कमीज ही नहीं पहने था।

12 स्वर्ग में एक रात[42]

एक बार की बात है कि एक जगह दो बड़े अच्छे दोस्त रहा करते थे। एक बार उन्होंने आपस में अपने प्रेम की वजह से यह कसम खायी कि जिस किसी की भी शादी पहले होगी वह दूसरे को अपना बैस्टमैन[43] बनने के लिये बुलायेगा चाहे वह धरती के किसी भी कोने में क्यों न हो।

इत्तफाक की बात कि इस कसम को खाने के कुछ दिन बाद ही उनमें से एक दोस्त चल बसा। और फिर दूसरा दोस्त जो ज़िन्दा बचा था उसकी शादी होने वाली थी।

अब उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या करे। वह कैसे अपने दोस्त को अपना बैस्टमैन बनने के लिये बुलाये सो वह चर्च में अपने कनफैशन कराने वाले पादरी[44] के पास गया।

पादरी बोला – "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। पर तुम्हें अपना वायदा तो निभाना ही चाहिये। चाहे वह मर गया है पर तुमको तो उसको बुलाना ही चाहिये।"

---

[42] One Night in Paradise. Tale No 40. A folktale from Friuli, Italy, Europe.

[43] In North America the Bestman is a male attendant to the groom in wedding ceremony; while in Europe he is an "Usher". Normally the groom selects him from among his good friends. It is an honor to be the Bestman

[44] There is a custom in Catholic Church that if you have made any mistake or sin, you have the provision to acknowledge it in the Church before a Priest. Of course both cannot see each other as there is a curtain in between them. It is called confession, confessor and confesion box.

फिर पादरी ने उसको सलाह दी — "तुम ऐसा करो कि तुम उसकी कब्र पर जाओ और उसको वही कहो जो तुमको उससे कहना चाहिये। फिर यह उसकी जिम्मेदारी है कि वह तुम्हारी शादी में तुम्हारा बैस्टमैन बनने के लिये आता है या नहीं।"

उस पादरी की बात मान कर वह अपने दोस्त की कब्र पर गया और बोला — "दोस्त, अब समय आ गया है जब तुम्हें मेरा बैस्टमैन बनना है।"

शादी वाले दोस्त के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसके सामने सामने जमीन हिली और उसमें से उसका दोस्त कूद कर बाहर निकल आया और बोला — "हर हाल में मुझे अपना वायदा निभाना है नहीं तो मुझे परगेटरी[45] में जाना पड़ेगा और पता नहीं मुझे फिर वहाँ कब तक रहना पड़े।"

वहाँ से पहले वे दोनों घर गये और फिर वहाँ से शादी के लिये चर्च गये। शाम को शादी की दावत हुई तो वहाँ उस मरे हुए दोस्त ने सबको बहुत सारी कहानियाँ सुनायीं पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसने उस दूसरी दुनियाँ के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा कि वहाँ उसने वहाँ क्या देखा या क्या किया।

दुलहा उससे कई सवाल पूछना चाहता था पर उससे किसी भी सवाल पूछने की उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ रही थी

[45] In Catholic Christianity, Purgatory is a place or state of suffering where the souls of sinners inhabit before going to Heaven.

दावत खत्म हो जाने के बाद वह मरा हुआ दोस्त उठा और अपने दुलहा दोस्त से बोला — "क्योंकि मैंने तुम्हारे ऊपर यह एहसान किया है कि मैं तुम्हारी शादी में बेस्टमैन बनने के लिये धरती पर आया तो इसके बदले में क्या तुम मेरे साथ वापस कुछ दूर तक चलोगे?"

"ओह क्यों नहीं, क्यों नहीं। यकीनन। पर मैं बहुत दूर तक नहीं जा सकता क्योंकि आज ही तो मेरी शादी हुई है।"

"मुझे मालूम है। तुम जब भी चाहो रास्ते में से लौट सकते हो।"

सो दुलहे ने अपनी दुलहिन से विदा ली और बोला — "मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ अभी वापस आता हूँ।" और वह अपने उस मरे हुए दोस्त के साथ चल दिया।

दोनों बात करते हुए चले जा रहे थे। उन्होंने पहले किसी एक बात के बारे में बात की, फिर दूसरी बात के बारे बात की और फिर बात करते करते वे उस मरे हुए दोस्त की कब्र तक आ गये।

वहाँ उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया। उसी समय ज़िन्दा दोस्त ने सोचा कि अगर मैंने इससे अब नहीं पूछा तो शायद फिर मैं कभी नहीं पूछ पाऊँगा।

सो उसने अपना मन पक्का किया और हिम्मत कर के पूछा — "दोस्त, क्योंकि तुम मर गये हो इसलिये मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ।"

"हॉ हॉ पूछो क्या पूछना चाहते हो।"

"इस दुनियॉ के बाद क्या होता है।"

मरा हुआ दोस्त बोला — "मैं खुद तो तुमको इस बारे में ज़्यादा कुछ नहीं बता सकता पर अगर तुम जानना ही चाहते हो तो तुम खुद ही मेरे साथ स्वर्ग क्यों नहीं चलते?"

तभी वह कब्र खुल गयी और वह ज़िन्दा दोस्त अपने मरे हुए दोस्त के पीछे पीछे उस कब्र में चला गया और वे दोनों स्वर्ग में आ गये।

मरा हुआ दोस्त अपने ज़िन्दा दोस्त को एक बहुत ही सुन्दर क्रिस्टल[46] के महल में ले गया। उस महल के दरवाजे सोने के बने थे। वहॉ देवदूत हार्प बजा रहे थे[47] और खुशकिस्मत आत्माऐं उस संगीत पर नाच रहीं थीं। सेन्ट पीटर वहॉ पर ढोल बजा रहे थे।

वह ज़िन्दा दोस्त तो यह सब शान देख कर भौंचक्का रह गया। उसका तो मुॅह खुला का खुला रह गया। उसको इस बात का पता ही नहीं चलता कि वह वहॉ उस महल को कितनी देर तक देखता रहता अगर उसको बाकी का स्वर्ग न देखना होता।

मरा हुआ दोस्त बोला — "चलो अब मैं तुमको दूसरी जगह दिखाता हूॅ।"

---

[46] Crystal – glass cut in a special fashion so that the light can reflect in various directions…

[47] Translated for the word "Angels" – they were playing Harp. See the picture of Harp above.

कह कर वह अपने दोस्त को एक बागीचे की तरफ ले गया जिसके पेड़ लकड़ी और पत्तों के न हो कर बहुत सारे रंगों की गाने वाली चिड़ियें दिखा रहे थे।

मरा हुआ दोस्त फिर बोला — "जागो मेरे दोस्त जागो। चलो और आगे चलते हैं।"

कह कर वह अपने दोस्त को एक घास के मैदान की तरफ ले गया जहाँ देवदूत[48] प्रेमियों की तरह से खुशी से नाच रहे थे।

मरा हुआ दोस्त फिर बोला — "चलो अब हम एक तारा देखेंगे।" ज़िन्दा दोस्त को तो तारे इतने अच्छे लगते थे कि वह तो तारे हमेशा के लिये देख सकता था। सो वह उसके पीछे पीछे तारा देखने चल दिया।

फिर वहाँ उसने नदियाँ देखीं जिनमें पानी की जगह शराब बह रही थी और उनकी तलियाँ चीज़[49] की बनी हुई थीं।[50]

अचानक वह ज़िन्दा दोस्त चिल्ला पड़ा — "ओ मेरे भगवान, ओ मेरे दोस्त, मुझे तो बहुत देर हो गयी। मुझे तो अपनी दुलहिन के पास वापस लौटना था। वह मेरे बारे में चिन्ता कर रही होगी।"

"क्या तुमने स्वर्ग इतनी जल्दी देख लिया?"

"हाँ काफी तो देख ही लिया है। काश मेरे पास मेरी अपनी इच्छा होती।"

[48] Translated for the word "Angels"

[49] Processed Paneer

[50] Their bottoms were made of cheese – cheese in western world is a processed Indian Paneer.

"अभी तो यहॉ देखने के लिये बहुत कुछ बाकी है।"

"मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा विश्वास है कि यहॉ पर सचमुच ही देखने के लिये काफी कुछ होगा पर अब मुझे वापस जाना चाहिये। मुझे पहले ही काफी देर हो गयी है।"

"ठीक है जैसे तुम्हें अच्छा लगे।" कह कर वह मरा हुआ दोस्त अपने ज़िन्दा दोस्त को कब्र तक वापस छोड़ गया और खुद वहीं गायब हो गया।

ज़िन्दा दोस्त कब्र से बाहर तो आया पर उसको वह कब्रिस्तान पहचान में ही नहीं आया। उसमें तो बहुत सारे पत्थर और मूर्तियॉ लगी हुई थीं और ऊॅचे ऊॅचे पेड़ खड़े थे। यह कब्रिस्तान पहले तो ऐसा नहीं था।

वहॉ से जब वह बाहर निकला तो उसको बहुत ऊॅची ऊॅची इमारतें दिखायी दीं – पर वहॉ तो पहले सादे से पत्थरों के मकान हुआ करते थे जो सड़क के दोनों तरफ लाइन से लगे हुए थे। ये इतनी ऊॅची ऊॅची इमारतें कहॉ से आ गयीं?

सड़कें कार, ट्रक और कई तरह की और गाड़ियों से भरी हुई थीं और आसमान में हवाई जहाज़ उड़ रहे थे।

"अरे मैं धरती के किस हिस्से में आ गया? क्या मैं किसी गलत सड़क पर आ गया? और देखो तो ये लोग किस तरीके के कपड़े पहने हैं?"

उसने सड़क पर चलते हुए एक बूढ़े को रोका और उससे पूछा — "जनाब यह कौन सा शहर है?"

"तुम्हारा मतलब है कि इस शहर का नाम क्या है?"

"जी हॉ इसी शहर का। इस शहर का नाम क्या है? मैं इसे पहचान नहीं पा रहा हूॅ। क्या आप मुझे उस आदमी के घर का पता बता सकते हैं जिसकी अभी कल ही शादी हुई है।"

वह बूढ़ा बोला — "कल? मैं चर्च की देखभाल करने वाला आदमी हूॅ[51] इसलिये मैं यह बात यकीन के साथ कह सकता हूॅ कि कल तो यहॉ कोई शादी नहीं हुई।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? मेरी तो खुद की शादी कल हुई थी और तुम कह रहे हो कि कल यहॉ कोई शादी ही नहीं हुई।"

फिर उसने उस बूढ़े को अपने मरे हुए दोस्त के साथ स्वर्ग जाने का पूरा हाल बताया।

बूढ़ा हॅसा और बोला — "लगता है कि तुमने सपना देखा है। यह तो बहुत पुरानी कहानी है जो यहॉ के बूढ़े अपने पोते पोतियों को सुनाते हैं। कि एक दुलहा अपनी शादी के दिन अपनी नयी दुलहिन को छोड़ कर अपने मरे हुए दोस्त के साथ उसकी कब्र पर चला गया था और फिर वहॉ से कभी वापस नहीं आया। उसकी पत्नी तो बेचारी उसके दुख में रो रो कर ही मर गयी।"

"यह तो हो ही नहीं सकता क्योंकि वह दुलहा तो मैं खुद हूॅ।"

---

[51] I am the Sacristan in the Church.

"सुनो, अब तुम केवल एक काम कर सकते हो। वह यह कि हमारे बिशप से जा कर बात कर लो। वही तुमको बता सकते हैं कि कब क्या हुआ था।"

"बिशप? पर यहाँ इस शहर में तो केवल एक पारिश पादरी[52] ही होता है। यह बिशप कहाँ से आ गया।"

"यह पारिश पादरी क्या? बिशप को तो रहते यहाँ बहुत साल हो गये।" और यह कह कर चर्च की देखभाल करने वाला वह बूढ़ा उसको अपने बिशप के पास ले गया।

वहाँ जा कर उस ज़िन्दा दोस्त ने उस बिशप को अपनी कहानी सुनायी तो उस बिशप को एक घटना की याद आयी जो उसने बचपन में सुनी थी। वह पारिश के कई रजिस्टर ले कर आया और उनमें से एक रजिस्टर के पन्ने पीछे की तरफ पलटने लगा।

पन्ने पलटते हुए वह बोला — "तीस साल पहले, नहीं नहीं पचास साल पहले, नहीं नहीं सौ साल पहले, नहीं नहीं दो सौ साल पहले, नहीं नहीं... ।

वह पन्ने पलटता रहा और ऐसे ही कुछ कुछ बोलता रहा। आखीर में एक पीले से मुड़े तुड़े पन्ने पर लिखे नामों पर उँगली रख कर बोला — "हाँ यह तीन सौ साल पुरानी बात है। एक नौजवान कब्रिस्तान में गायब हो गया था और उसकी पत्नी उसके दुख में रो

[52] Parish Priest – lower grade person than BIshop

रो कर मर गयी थी। यह देखो यह पढ़ो अगर तुमको मेरा यकीन न हो तो।"

"पर यह दुलहा तो मैं खुद ही हूँ।"

"ओह तो वह तुम ही हो जो दूसरी दुनियाँ गये थे। मुझे भी तो कुछ बताओ न उस दूसरी दुनियाँ के बारे में।"

पर यह सुन कर वह ज़िन्दा दोस्त तो एक मरे हुए आदमी की तरह पीला पड़ गया, जमीन में धँस गया और उसके बाद वह स्वर्ग के बारे में उस बिशप से एक शब्द भी कह सकता कि उससे पहले ही वह मर गया।[53]

[53] This story supports two things –
1. That there is an abnormal time gap between this world's time scale and the Other World's time scale because the married man went to Paradise only for one night but it was 300 years when he came back to Earth again.

This phenomenon is supported by two incidents clearly written in Bhaagvat Puraan – one when Brahmaa Jee took Gwaal Baal to his abode and kept them for a year and secondly when King Raivat went to consult Brahmaa Jee for the groom about his daughter's marriage and when he stayed there for a few moments a long time passed on Earth that he could not find anybody who was suggested by him to Brahmaa Jee. Then he married her to Balaraam Jee. Since Balaraam Jee was shorter than Revatee he pressed Revatee a little bit to bring her to his size.
2. That whoever has visted the Other World cannot tell anything about it to a mortal man. He dies before that.

13 जीसस और सेन्ट पीटर फ्रियूली में[54]

जीसस और सेन्ट पीटर की यहाँ छोटी छोटी चार लोक कथाऐं दी जा रही हैं जो इटली के फ्रियूली प्रान्त[55] में बहुत मशहूर हैं।

1 सेन्ट पीटर जीसस[56] से कैसे मिला

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब आदमी था जिसका नाम था पीटर। वह मछली पकड़ कर अपना गुजारा करता था।

एक दिन मछली पकड़ कर जब वह घर पहुँचा तो बहुत थक गया था। उस दिन उसको कोई मछली भी नहीं मिली थी। उसको और भी ज़्यादा बुरा तब लगा जब उस दिन उसकी पत्नी ने उसके लिये शाम का खाना भी नहीं बनाया था।

वह बोली — "आज मैं खाने के लिये सारा दिन इधर उधर तो देखती रही पर बनाने के लिये मुझे कुछ मिला ही नहीं और तुम्हें मालूम है कि हमारे पास पैसे तो हैं नहीं जो मैं कहीं से कुछ खरीद लाती।"

[54] Jesus and St Peter in Friuli. Tale No 41. A folktale from Italy from its Friuli Province.
[55] Friuli, or Friuli-Venezia Giulia, is one of the 20 regions of Italy, and one of five autonomous regions with special statute. Its capital is Trieste. Venice, is not in this region as its name indicates. It has an area of 7,858 km² and about 1.2 million inhabitants. The name of the region was spelled Friuli–Venezia Giulia until 2001.
[56] Translated for the word "Lord".

पीटर बोला — "पर बिना खाना खाये मुझे नींद कैसे आयेगी? जल्दी कर मुझे कुछ खाने के लिये दे।"

"घर में तो आज कुछ भी नहीं है पीटर। अगर तुम चाहो तो हम लोग पास वाले खेत पर जा सकते हैं जहाँ बहुत अच्छी अच्छी बन्द गोभियाँ लगी हुई हैं। वहाँ से हम उनको तोड़ कर ला सकते हैं।"

"पर मैं चोरी करना नहीं चाहता।"

"तब तो हमको आज बिना खाना खाये ही रहना पड़ेगा।"

"क्या कहा तूने? बन्द गोभी? क्या हम दोनों साथ साथ जा कर उनको ला सकते हैं?"

पीटर की पत्नी बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। कोई हम लोगों को देखे नहीं इसके लिये हम ऐसा करेंगे कि एक आदमी एक तरफ से जाये और दूसरा आदमी दूसरी तरफ से।"

पीटर बोला "यह ठीक है।" और दोनों बन्द गोभी लाने के लिये खेत की तरफ चल दिये। पीटर ने एक सड़क ली और उसकी पत्नी ने दूसरी सड़क ली।

जब पीटर खेत की तरफ जा रहा था तो उसे सफेद बालों[57] और भूरी आँखों वाला एक आदमी मिला। वह सड़क के किनारे लकड़ी के एक लट्ठे पर बैठा हुआ था।

[57] Translated for the words "Blond Hair". Blond hair is of white color.

पीटर ने उसको देख कर सोचा "यह अजनबी यहाँ बैठा क्या कर रहा है?"

सो उसने उस अजनबी से पूछा — "ओ भले आदमी, तुम यहाँ बैठे क्या कर रहे हो?"

वह आदमी बोला — "मैं यहाँ लोगों को यह सिखाने के लिये बैठा हुआ हूँ कि कोई बुरा काम नहीं करना चाहिये... ।"

पीटर ने तुरन्त सोचा — "ओ मेरे भगवान, यह तो लगता है कि मुझे ही इशारा कर के यह कह रहा है।"

वह अजनबी आगे बोला — "... और अगर उन्होंने कोई खराब काम किया तो उसके लिये बाद में उनको पछताना पड़ेगा।"

यह बात तो पीटर के दिमाग में ही नहीं घुसी सो वह अजनबी को बीच में ही वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गया पर उस अजनबी के शब्द उसके कानों में बहुत देर तक गूँजते रहे।

खेत पर पहुँचने पर उसको एक स्त्री का साया वहाँ घूमता हुआ दिखायी दिया। वह उस खेत के मालिक की पत्नी का साया था।

पीटर ने उसको देखा तो वह डर गया। वह बोला — "खेत के मालिक की पत्नी का साया? उफ़ मैं तो यहाँ से तुरन्त ही भागता हूँ।"

और बस पीटर वहाँ से तुरन्त ही भाग लिया।

वह पौधों, गड्ढों और हैजैज़[58] को फॉदता हुआ भागा चला जा रहा था। वह भागता भागता सीधा घर पहुँचा। उस अजनबी के शब्द अभी भी उसके कानों में गूँज रहे थे "उसके लिये बाद में उनको पछताना पड़ेगा।"

जैसे ही वह घर में घुसा उसने झाड़ू उठायी और अपनी पत्नी को उससे मारना शुरू कर दिया — "तो तू मुझे एक चोर बनाना चाहती थी, ओ कमीनी औरत।"

पत्नी चिल्लायी — "पीटर, भगवान के लिये मुझे माफ कर दो। क्या तुम्हें पता है कि मैं भी उस खेत से कुछ नहीं चुरा सकी क्योंकि उसी समय खेत का मालिक वहाँ आ गया था और मुझे अपनी जान बचा कर वहाँ से भागना पड़ा।"

"और मुझे उसकी पत्नी ने डराया, ओ कमीनी औरत। तू तो मुझे चोर ही बनाना चाहती थी। मैं यहाँ से जा रहा हूँ और अब जा कर पश्चाताप करूँगा।"

और वह वहाँ से भाग लिया उस अजनबी को ढूँढने के लिये जिसके शब्द अब तक उसके कानों में गूँज रहे थे "उसके लिये बाद में उनको पछताना पड़ेगा।"

---

[58] Hedges are the low walls made by growing special plants, so thick that even a bird cannot pass through it. See its picture above.

उसने जल्दी ही उस अजनबी को पकड़ लिया और जा कर उसको अपनी सारी कहानी कह सुनायी।

अजनबी बोला — "हॉ पीटर यह तुमने ठीक किया कि तुम मेरे पास चले आये। पर मैं तुमको यह बता दूॅ कि वह साया जो तुमने खेत पर देखा था वह साया खेत के मालिक की पत्नी का नहीं था बल्कि वह तुम्हारा अपना ही साया था। और क्योंकि तुम खराब काम करने जा रहे थे इसलिये तुम उस साये को पहचान नहीं सके।

आओ तुम मेरे साथ आओ। तुम तो मेरे सबसे अच्छे दोस्त और मेरा दॉया हाथ हो जाओगे। मैं लौर्ड हूॅ।" और पीटर उस अजनबी के पीछे पीछे चल दिया।

2 बड़े खरगोश का जिगर

एक बार जीसस और सेन्ट पीटर एक खेत में से हो कर जा रहे थे कि एक बड़ा खरगोश[59] सब्जियों के पौधों की एक कतार के पीछे से निकला और जीसस के पैरों के पास आ कर गिर पड़ा।

जीसस बोले — "पीटर जल्दी जल्दी, अपना थैला खोलो और इस बड़े खरगोश को अपने थैले में डालो।"

[59] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit-like animal but is much bigger than a rabbit. See his picture above.

पीटर ने उस बड़े खरगोश को उठाया और अपने थैले में डाल लिया और जीसस से कहा — “हमने बहुत दिनों से अच्छा खाना नहीं खाया है लौर्ड। इस बड़े खरगोश को तो आज हम भून कर खायेंगे।”

“ठीक है पीटर। ले चलो इसको। आज शाम को हम दोनों बहुत अच्छा खाना खायेंगे। और क्योंकि तुम खाना भी बहुत अच्छा बनाते हो इसलिये तुम इस बड़े खरगोश को हमारे लिये बहुत अच्छा ही बनाओगे।”

वहॉ से चलते चलते वे एक शहर में आये। वहॉ एक सराय का साइनबोर्ड देख कर वे उस सराय में अन्दर घुस गये।

“नमस्ते।”

“नमस्ते।”

जीसस सराय के मालिक से बोले — “हमारे लिये आधी बोतल शराब लाओ।”

फिर वह पीटर से बाले — “और पीटर जब तक यह सराय वाला हमारे लिये शराब ले कर आता है इस बीच तुम यह बड़ा खरगोश भून लाओ।”

सेन्ट पीटर तो मास्टर था। उसके पास एक चाकू था जिसको वह हमेशा अपने साथ रखता था। उसने वह चाकू निकाला और उसको एक पत्थर पर घिस कर तेज़ किया। फिर उसने बड़े खरगोश की खाल निकाली, उसे काटा और एक कढ़ाई में डाल दिया।

जैसे जैसे वह बड़ा खरगोश पकना शुरू हुआ तो उसके पकने की खुशबू से सेन्ट पीटर के मुँह में पानी आने लगा।

"ओह कितना बढ़िया और मोटा है यह बड़ा खरगोश। यह तो बहुत ही स्वादिष्ट होगा। कितनी अच्छी खुशबू आ रही है इसमें से। बस ज़रा सा इन्तजार और, फिर मैं इसको खा कर देखता हूँ।

यह लो इसका जिगर तो पक गया है। मैं इसको डबल रोटी के साथ खा कर देखता हूँ। मालिक को इसमें क्या फर्क नजर आयेगा।"

कह कर उसने अपना कॉटा उस बड़े खरगोश के जिगर में घुसाया और उसे खा लिया। खा कर उसने जीसस को बुलाया — "मालिक, बड़ा खरगोश पक गया।"

"ओह, पक गया? तो उसको जल्दी यहाँ ले आओ अब इन्तजार किस बात का है। हम भी तो उसे खा कर देखें।"

एक हाथ से कढ़ाई पकड़े और दूसरे हाथ से अपनी मूँछों पर से चिकनाई साफ करते हुए पीटर जीसस के पास आया। उसने आधा बड़ा खरगोश जीसस की प्लेट में रख दिया और बाकी का आधा अपनी प्लेट में रख लिया।

दोनों ने वह खरगोश खाना शुरू किया तो जीसस ने अपनी प्लेट में चारों तरफ देखना शुरू किया। उनको लगा कि उसमें कोई चीज़ ऐसी है जो उसमें नहीं है।

फिर वह बोले — "पीटर, इसका जिगर कहाँ है?"

“हे भगवान, मुझे नहीं मालूम मालिक कि इसका जिगर कहाँ है। मैंने इस पर तो ध्यान ही नहीं दिया। पर वह तो मेरी प्लेट में भी नहीं है। हो सकता है मालिक कि इस बड़े खरगोश के जिगर ही न हो।”

जीसस फिर से अपना काँटा उठाते हुए मुस्कुरा कर बोले — “हो सकता है पीटर कि इसके जिगर ना ही हो। तुम शायद ठीक ही कह रहे हो।”

पर जीसस से यह सुनने के बाद पीटर के गले से फिर दूसरा कौर नीचे नहीं उतरा। यह देख कर जीसस ने पीटर से पूछा — “क्या बात है पीटर तुमको भूख नहीं है? तुम कुछ खा नहीं रहे। शायद तुम्हारे पेट पर जिगर बैठा हुआ है।”

“क्या? मेरे पेट के ऊपर जिगर बैठा हुआ है?”

“हाँ। पर मैं तुमको गलत बिल्कुल भी नहीं ठहरा रहा हूँ। खाओ खाओ। बड़ा खरगोश बहुत ही स्वादिष्ट बना है।”

“मालिक, बस मैं और नहीं खा सकता। मेरे यहाँ पर कुछ अटका हुआ है। मैं तो बस एक गिलास शराब ही पियूँगा।”

उस रात पीटर की आँख एक पल को भी नहीं झपकी। वह सारी रात जागता ही रहा। सुबह को जब उसकी ज़रा सी आँख लगी भी तो जीसस ने उसको जगा दिया।

“उठो पीटर उठो हमें चलना भी है।”

जीसस चाहते थे कि वे वहाँ से सुबह जल्दी ही चल सकें ताकि दूसरे शहर दोपहर से पहले ही पहुँच जायें। पीटर अभी भी उस बड़े खरगोश के जिगर के बारे में सोच रहा था। वह यह सोच कर डर रहा था कि मालिक को उसके बारे में पता चल गया था।

दोपहर को जब वे दूसरे शहर पहुँचे तो उन्होंने वहाँ आँखें झुकाये हुए दुखी चेहरे देखे। जैसी कि हर शहर की खासियत थी वहाँ उन्होंने कोई खुशी मनाता नहीं देखा।

सेन्ट पीटर आश्चर्य से बोला — "मालिक, यह सब यहाँ क्या हो रहा है? यहाँ कोई खुश दिखायी नहीं दे रहा।"

जीसस बोले — "किसी से पूछो पीटर कि यहाँ क्या हो रहा है। यहाँ के लोग दुखी से क्यों दिखायी दे रहे हैं।"

वहीं से एक सिपाही जा रहा था तो पीटर ने उसको रोक कर पूछा — "क्यों भाई क्या बात है यहाँ सब दुखी से क्यों दिखायी दे रहे है?"

सिपाही ने बताया कि यहाँ के राजा की बेटी की तबियत इतनी खराब है कि सारे डाक्टरों ने उसके इलाज की सारी उम्मीदें छोड़ दी हैं। पर राजा ने सोने के क्राउन से भरा एक थैला उसको देने का वायदा किया है जो उसकी बेटी को ठीक कर देगा।

जीसस पीटर से बोले — "सुनो पीटर, मैं चाहता हूँ कि वह काउन का थैला तुम जीत लो। तुम अपना चाकू लो और राजा के महल चले जाओ। वहाँ जा कर राजा से कहो कि तुम एक बहुत ही बड़े और मशहूर डाक्टर हो।

और जब तुम राजा की बेटी का इलाज करने के लिये उसके साथ अकेले हो तो उसका सिर काट लो। उस सिर को तुम एक घंटे तक पानी में भिगो कर रखो। फिर उसको निकाल कर राजा की बेटी के सिर पर फिर से रख दो। इससे वह ठीक हो जायेगी।"

पीटर सीधा राजा के पास गया और उसने वैसा ही किया जैसा जीसस ने उससे करने के लिये कहा था।

उसने उससे जा कर कहा कि वह एक बहुत ही बड़ा और मशहूर डाक्टर है और उसकी बेटी का इलाज करने आया है। राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ।

राजा उसको अपनी बेटी के कमरे में ले गया तो उसने राजा से उसको उसकी बेटी के कमरे में अकेले छोड़ देने के लिये कहा। राजा उसको वहाँ अकेला छोड़ कर बाहर चला गया।

जैसे ही पीटर राजा की बेटी के साथ अकेला रह गया तो उसने अपना चाकू निकाला और राजा की बेटी का सिर काट लिया। इससे राजा की बेटी का बिस्तर खून से भर गया। उसने उसका सिर पानी की एक बालटी में डाल दिया और वहाँ एक घंटे तक इन्तजार करता रहा।

एक घंटे बाद दरवाजे पर ज़ोर ज़ोर से खटखटाने की आवाज आयी "दरवाजा खोलो।"

पीटर बोला — "ज़रा रुको एक मिनट।" उसने तुरन्त ही सिर पानी में से बाहर निकाला और लड़की के कन्धों पर रखा पर वहाँ तो कुछ भी नहीं हुआ। वह तो वहाँ चिपक ही नहीं रहा था।

इधर पीटर का डर हर पल बढ़ता जा रहा था, उधर दरवाजे पर खटखटाहट की आवाज बढ़ती जा रही थी।

राजा ने हुक्म दिया — "दरवाजा खोलो।"

"उफ़ अब मैं क्या करूँ? मैं क्या करूँ?"

राजा के लोगों ने दरवाजा तोड़ दिया और राजा कमरे के अन्दर आया। बिस्तर पर इतना सारा खून देख कर तो वह चिल्ला पड़ा — "ओ बेरहम, यह तूने क्या किया? तूने मेरी बेटी का खून कर दिया? तुझको तो मैं फाँसी की सजा दे दूँगा।"

फिर वह अपने चौकीदारों से बोला — "इसके हाथ पैर बाँध लो और इसको घसीटते हुए फाँसी के तख्ते तक ले जाओ।"

पीटर राजा से दया की भीख माँगते हुए बोला — "जहाँपनाह, मुझ पर दया करें। मुझे माफ करें।"

"ले जाओ इसको और इसी पल इसको मेरी आँखों के सामने से दूर कर दो।"

राजा के सिपाही तुरन्त ही राजा का हुक्म बजा लाये। उन्होंने पीटर के हाथ पैर बाँधे और उसको सड़क पर घसीटते हुए फाँसी के तख्ते की तरफ ले चले।

जब पीटर को सड़क पर घसीटा जा रहा था तो पीटर ने सोचा कि मालिक ही उसको इस मुसीबत से छुटकारा दिला सकते हैं। बस उसने यह सोचा कि तभी भीड़ में से एक आदमी निकल कर आया। ज़रा सोचो कि वह कौन हो सकता था? वह थे मालिक जीसस।

जीसस को देखते ही पीटर चिल्लाया — "मालिक, मेरी सहायता करो। मुझे बचाओ।"

जीसस ने सिपाहियों से पूछा — "तुम लोग इसको कहाँ ले जा रहे हो?"

"फाँसी के तख्ते पर।"

"क्या किया है इसने?"

"क्या किया है इसने? अरे इसी से पूछो कि क्या किया है इसने। इसने राजा की बेटी की हत्या की है और क्या किया है इसने।"

"ऐसा नहीं है। इसने राजा की बेटी की हत्या नहीं की। इसको जाने दो। बल्कि इसको तो राजा के पास उसका सोने के क्राउन का थैला लेने के लिये ले जाओ। राजा की बेटी मरी नहीं है वह तो ज़िन्दा है और तन्दुरुस्त है। इसी ने तो ठीक किया है उसे।"

यह सुन कर सिपाही तो बहुत आश्चर्य में पड़ गये और तुरन्त ही राजा के पास भागे गये। वहाँ जा कर देखा तो राजकुमारी तो अपने महल के छज्जे पर ठीकठाक खड़ी थी।

पीटर को देखते ही राजा उसके पास दौड़ा आया और सोने के काउन का थैला उसको दे दिया। पीटर हालाँकि उस समय काफी बूढ़ा था पर फिर भी उसने आपमें इतनी ताकत महसूस की कि उसने उस सिक्के के थैले को ऐसे उठा लिया जैसे कि वह कोई पंख हो।

उस थैले को उसने अपने कन्धे पर डाला और उधर की तरफ चल दिया जहाँ जीसस उसका इन्तजार कर रहे थे।

"अब तुमने देखा पीटर?"

"अब आप मुझसे कहने वाले हैं कि मैं कितना बेकार का आदमी हूँ।"

"यह पैसा मुझे दे दो और फिर हम इसको और बार की तरह बाँट लेंगे।"

पीटर ने वह थैला नीचे रख दिया और जीसस ने उसके ढेर बनाने शुरू कर दिये।

"ये पाँच सिक्के मेरे लिये और ये पाँच सिक्के तुम्हारे लिये और ये पाँच सिक्के उस दूसरे के लिये... ।" और वह इसी तरह से सिक्के बाँटते रहे।

पीटर ने कुछ देर तक तो यह बॅटवारा देखा फिर जब यह सब कुछ उसकी समझ में नहीं आया तो उससे रहा नहीं गया तो उसने जीसस से पूछ ही लिया — "मालिक हम तो यहॉ दो ही हैं तो फिर आप यहॉ ये तीन ढेर क्यों बना रहे हैं?"

"क्या पीटर तुम इतनी जल्दी भूल गये? यह एक ढेर मेरे लिये है, यह एक ढेर तुम्हारे लिये है और यह तीसरा ढेर उस तीसरे के लिये है।"

"और यह तीसरा कौन है?"

"जिसने बड़े खरगोश का जिगर खाया।"

पीटर जल्दी से बोला — "लेकिन मालिक वह तो मैंने खाया था।"

जीसस बोले — "तो आखिर मैंने तुमको पकड़ ही लिया। पीटर, तुमने गलती की। जो डर मैंने तुम्हारे दिल में पैदा किया वही तुम्हारी सजा है। मैं अभी तो तुमको माफ करता हूॅ पर आगे ऐसा नहीं करना।"

पीटर ने वायदा किया कि वह ऐसा अब फिर कभी नहीं करेगा।

3 खातिरदारी[60]

एक बार पहाड़ों की सड़कों पर काफी लम्बी यात्रा के बाद एक शाम जीसस और पीटर एक स्त्री के घर के सामने रुके और रात भर रुकने के लिये उससे शरण माँगी।

स्त्री ने उनको ऊपर से नीचे तक देखा और बोली — "मुझे खानाबदोशों के साथ कोई लेना देना नहीं है।"

"पर मैम हम पर दया कीजिये। हम इस समय कहाँ जायेंगे। बस रात भर के लिये हमें ठहरने की जगह दे दीजिये।"

पर उस स्त्री ने उनकी किसी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया और घर का दरवाजा बन्द कर लिया। इस पर पीटर ने मालिक की तरफ दया की नजर से देखा जो पीटर से कह रही थीं "तुम जानते तो हो कि हमें इस स्त्री के साथ क्या करना है।"

पर उसने मालिक की नजर को अनदेखा कर दिया और वे दोनों एक दूसरे घर की तरफ चल दिये जो उनके साथ ज़्यादा मुलायमियत से बर्ताव करता।

यह दूसरा घर कालिख से पुता हुआ था। उसके अन्दर एक स्त्री आग के पास बैठी बैठी सूत कात रही थी।

[60] This story is very similar to a European tale given in the book "Europe Ki Lok Kathayen-1" by Sushma Gupta in Hindi language under the title "Bhikhaaree and Rotee".

वहाँ जा कर उन्होंने कहा — "मैम, मेहरबानी कर के क्या आप हमको रात को रुकने की जगह देंगी। हम आज बहुत लम्बी यात्रा कर के चले आ रहे हैं और अब इससे आगे जाने की हममें ताकत नहीं है।"

"हाँ हाँ क्यों नहीं। जो भगवान की इच्छा। आप जरूर ठहरें। इसके अलावा आप इस समय जायेंगे भी कहाँ। अब तो रात भी हो गयी है। बाहर सब जगह अँधेरा है।

मैं आप लोगों के आराम से ठहरने के लिये जो कुछ भी थोड़ा बहुत इन्तजाम कर सकती हूँ करती हूँ। तब तक आप अन्दर आइये और आग के पास बैठिये और बाहर की इस ठंड में थोड़ी गर्मी लीजिये। आप भूखे भी होंगे।"

पीटर बोला — "आप ठीक कह रही हैं।"

इस बीच उस स्त्री ने जिसका नाम कैटिन[61] था कुछ लकड़ियाँ आग में डालीं और रात का खाना लाने चली गयी।

वह उनके खाने के लिये थोड़ा सा माँस का पानी और बहुत ही मुलायम बीन्स ले आयी। पीटर उनको देख कर बहुत खुश हुआ। वह थोड़ा सा शहद भी ले आयी जो उसने बचा कर रखा हुआ था।

जब उन्होंने खाना खा लिया तो उसने उनको उनके सोने की जगह दिखा दी। वह एक भूसा बिछी हुई जगह थी। पीटर सन्तोष से उस भूसे पर लेटते हुए बोला "यह बहुत अच्छी स्त्री है।"

[61] Catin – name of the woman who sheltered Jesus and Peter

अगले दिन कैटिन से विदा लेते समय जीसस ने उस स्त्री से कहा — "मैम आज सुबह जो कुछ भी काम आप शुरू करेंगी वह आप सारा दिन करती रहेंगी।" और इसके बाद वे चले गये।

उनके जाने के तुरन्त बाद ही वह स्त्री अपना सूत कातने बैठ गयी। जीसस के कहे अनुसार वह सारा दिन सूत कातती रही, कातती रही और कातती रही। सूत की शटल आगे पीछे घूमती रही और उसका सारा घर कपड़े से भर गया।

यहाँ तक कि उसका कपड़ा उसके घर के दरवाजे से, खिड़कियों से और यहाँ तक कि घर की छत से भी बाहर निकलने लगा।

दूसरी तरफ उस स्त्री ने जिसने जीसस और पीटर को अपने घर में नहीं ठहराया था उसका नाम जिआकोमा[62] था। उसने देखा कि उसकी पड़ोसन कैटिन के घर से उसका बुना हुआ कपड़ा तो बाहर तक आ रहा था।

यह देख कर वह अपनी पड़ोसन कैटिन के पास गयी और जब तक उसने अपनी पड़ोसन से उसकी पूरी कहानी नहीं सुन ली उसको चैन नहीं पड़ा।

[62] Giacoma – name of the woman who did not let Jesus and Peter stay in her house

जब उसने सुना कि उसने जिन दो अजनबियों को अपने घर में रुकने के लिये शरण नहीं दी थी उन्होंने ही उसकी पड़ोसन को अमीर बनाया था तो उसने उससे पूछा — "क्या तुमको लगता है कि वे फिर यहाँ वापस आयेंगे?"

"मुझे लगता तो है क्योंकि वे कुछ ऐसा कह रहे थे कि वे केवल नीचे घाटी तक ही जा रहे हैं।"

"ठीक है अगर वे लौट कर आयें तो उनको मेरे घर भेज देना ताकि वे मेरा भी कुछ भला कर सकें।"

"खुशी से।"

अगली सुबह जब जीसस और पीटर उसके घर वापस आये तो कैटिन ने उनसे कहा — "अगर मैं सच कहूँ तो मेरे घर में तो बहुत सारा सामान हो गया। अब मेरे घर में आप लोगों को ठहराने की कहीं जगह ही नहीं है।

आज आप मेरी पड़ोसन जिआकोमा के घर चले जाइये वह आपको आराम से ठहराने की अपनी पूरी कोशिश करेगी।"

पीटर अभी तक उसकी एक बात भी नहीं भूला था। उसने बुरा सा मुँह बनाया और अपने विचार कैटिन को कहने वाला ही था कि जीसस ने उसको कुछ भी कहने से रोक लिया और वे उसकी पड़ोसन के घर चल दिये।

इस बार उस स्त्री ने उनके ठहरने और खाने के लिये बहुत ही बढ़िया इन्तजाम कर के रखा हुआ था।

उसने उनका बड़े प्रेम से स्वागत किया और पूछा — "आपकी यात्रा तो अच्छी रही? आप अन्दर आयें। हम लोग गरीब हैं पर हमारा दिल बड़ा है। आइये आग के पास बैठिये और थोड़ी गरमी लीजिये। मैं आपके लिये अभी शाम का खाना ले कर आती हूँ।"

इस तरह जीसस और पीटर उस रात उस पड़ोसन के घर में सोये। अगली सुबह जब वे जाने के लिये उससे विदा लेने लगे तो वह स्त्री अभी भी उनके सामने झुक रही थी और उनके सामने की जमीन पर झाड़ू लगा रही थी।

उन्होंने उससे भी चलते समय वही कहा जो उन्होंने कैटिन से कहा था कि वह भी उस सुबह जो काम भी शुरू करेगी वह वह सारा दिन करती रहेगी और वे चले गये।

पड़ोसन जिआकोमो अपनी बाँहें चढ़ाती हुई मुस्कुराती हुई बोली — "अब मैं देखती हूँ कि मैं क्या कर सकती हूँ। मैं अपनी उस पड़ोसन से दुगुना कपड़ा बुन कर दिखाऊँगी। पर इससे पहले कि मैं कपड़ा बुनने बैठूँ ताकि मुझे कोई बीच में परेशान न करे मैं ज़रा बड़ा काम[63] कर आऊँ।"

सो वह बाहर चली गयी और अपना बड़ा काम करने लगी। पर यह क्या? वह तो रुक ही नहीं पा रही थी।

---

[63] To relieve herself through evacuation

"हे भगवान, यह मुझे क्या हो गया है। ऐसा कैसे हो रहा है कि मैं इसको रोक ही नहीं पा रही हूँ। मैंने ऐसा तो कुछ नहीं खाया है जो मुझको इतना बीमार बना दे कि मैं रुक ही नहीं पाऊँ। ओ ऊपर वाले, यह सब क्या हो रहा है।"

आधे घंटे बाद उसने वहाँ से उठ कर अपने कपड़ा बुनने की मशीन पर आने की कोशिश की पर उसको फिर से वहीं जाना पड़ गया। वह सारा दिन वहीं बैठी रही। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि उसका "वह" बहुत बड़ी जगह नहीं फैला।

4 कूटू

एक बार शाम के समय तीन पसीने से तर धूल से भरे हुए लोग रास्ता भूल गये। घूमते घूमते वे एक गाँव में आये। उस समय वहाँ के लोग अपने अपने आँगन में अपने खेती की उपज में से दाने निकाल रहे थे। उनकी भूसी अभी भी हवा में उड़ रही थी।

वहीं पर एक स्त्री भी दानों में से भूसा उड़ा रही थी। उन तीनों ने उस स्त्री से पूछा — "मालकिन। क्या आप हमको आज रात भर ठहरने की जगह देंगी?"

वह स्त्री एक विधवा थी। उसने उनको अन्दर बुलाया, खाना खिलाया और कहा कि वे भूसा रखने की जगह में सो सकते थे अगर वे यह वायदा करें कि वे उसको अगले दिन उसका अनाज ठीक करने में सहायता कर देंगे तो। और वे तीनों सोने चले गये।

अगले दिन दिन निकालने के समय जब पीटर ने मुर्गे के बॉग देनी की आवाज सुनी तो बोला — "उठो अब हमें उठना चाहिये। हमने उसका खाना खाया है तो हमें उसका काम भी करना चाहिये।"

जीसस बोले — "चुप रहो और सो जाओ।"

पीटर ने करवट बदली और सो गया। वे वापस सोये ही थे कि वह विधवा हाथ में एक डंडी ले कर वहाँ आयी और बोली — "क्या तुम लोग यह सोचते हो कि तुम लोग मेरा खाना खा पी कर और यहाँ सो कर जजमैन्ट डे[64] तक काम करने से बच जाओगे? चलो उठो मेरे काम में मेरी सहायता कराओ। चलो उठो।"

कह कर उसने पीटर की पीठ पर एक डंडी मारी और वहाँ से तूफान की तरह चली गयी। पीटर अपनी पीठ सहलाता हुआ जीसस से बोला — "आपने देखा कि मैं कितना ठीक था? चलिये अब तो उठिये और काम पर चलिये नहीं तो वह स्त्री हम सबको मारेगी।"

जीसस ने एक बार और कहा — "चुप रहो और सो जाओ।"

"यह तो बहुत अच्छा है। पर अगर वह फिर से वापस आयी तो वह तो मुझे ही मारेगी न।"

[64] Judgment Day – it is the final and eternal judgment by God of the people in every nation resulting in the glorification of some and the punishment of others.

जीसस बोले — "अगर तुम एक स्त्री से डरते हो तो तुम इधर आ जाओ और जौन[65] को उधर सोने दो।"

सो उन्होंने आपस में अपनी जगह बदल ली और वे तीनों फिर से सो गये – पहले जीसस बीच में पीटर और तीसरे नम्बर पर जौन। कुछ देर में वह स्त्री हाथ में अपनी डंडी ले कर फिर वहॉ वापस आयी और चिल्लायी — "अरे तुम लोग अभी तक उठे नहीं?"

न्याय से सबको मारने के लिये अबकी बार उसने बीच वाले आदमी को मारा। यह फिर पीटर था क्योंकि अब वह जौन की जगह लेटा हुआ था।

पीटर कराहता हुआ बोला — "यह क्या बात है कि हमेशा मैं ही पिटता हूँ।"

उसको शान्त करने के लिये जीसस ने अबकी बार उसकी जगह अपनी जगह से बदल ली और उससे कहा कि अब वह सबसे ज़्यादा सुरक्षित जगह पर सोया हुआ था। उसके बाद वे सब फिर सो गये।

जब उन तीनों में से कोई भी उस स्त्री की सहायता के लिये नहीं पहुॅचा तो वह स्त्री फिर से अपनी डंडी ले कर वहॉ आयी और बोली — "तुम लोग तो उठ ही नहीं रहे हो। अबकी बार तुम्हारी बारी है।"

[65] John is the name of another disciple of Jesus. See the names of Jesus' disciples' names in the end of this tale.

और पीटर एक बार फिर से पिट गया क्योंकि वह जीसस की जगह सो रहा था।

अबकी बार वह भूसे में से बाहर निकल आया और बोला — "मालिक को कहने दो जो वह कहते हैं अब मैं यहाँ नहीं रुक रहा।"

कह कर वह बाहर आँगन में भाग गया और जा कर उस स्त्री से उसका काम ले लिया और उससे दूर जा कर उसका काम करने लगा।

कुछ देर बाद जीसस और सेन्ट जौन आये और उन्होंने भी पीटर के साथ काम करवाना शुरू कर दिया। पर जीसस ने दूसरों को चुप रहने का इशारा करते हुए कहा — "मुझे एक जलती हुई लकड़ी चाहिये।"

उनको एक जलती हुई लकड़ी ला कर दे दी गयी। जीसस ने उस लकड़ी से उस काम करने की जगह में चारों तरफ आग लगा दी। सारा भूसा जल कर खाक हो गया।

तुम क्या सोच रहे हो कि सारा अनाज और भूसा या और भी जो कुछ वहाँ पड़ा था वह सब जल कर खाक हो गया और वहाँ आग बुझने के बाद केवल राख ही रह गयी?

नहीं नहीं। ऐसा नहीं था। वहाँ तो अब उसका सब अनाज ठीक से बन गया था। भूसा आदि सब अलग अलग हो गया था और अनाज अलग हो गया था।

उन तीनों ने उस स्त्री के धन्यवाद का भी इन्तजार नहीं किया और वे उसके ऑगन से निकल कर अपने रास्ते चले गये।

पर उस स्त्री ने जो अभी भी मजबूत और लालची थी वहॉ का सारा फर्श साफ किया अनाज के दाने तौले और वहॉ के फर्श में फिर से आग लगा दी पर इस बार तो आग की लपटों ने उसका सारा अनाज पौप कौर्न की तरह से भून कर रख दिया।

वह स्त्री बेचारी रोती हुई उन तीनों खानाबदोशों को पकड़ने के लिये गॉव के बाहर दौड़ गयी। कुछ देर में ही उसने उनको पकड़ लिया और उनके पैरों में गिर पड़ी और अपनी घटना बतायी।

क्योंकि वह सचमुच में ही पछता रही थी इसलिये जीसस ने पीटर से कहा — "जाओ और इस स्त्री का जितना सामान बचा सकते हो उतना सामान बचाओ और इसको दिखादो कि बुराई के बदले अच्छाई कैसे की जाती है।"
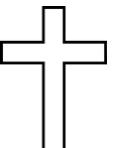
सेन्ट पीटर उसकी काम करने की जगह पहुँचा और वहॉ जा कर उसने क्रास का निशान बनाया। आग बुझ गयी और भुना हुआ अनाज फिर से अनाज के रूप में बदल गया।

जो अनाज काला पड़ गया था या बेशक्ल का हो गया था या टूट गया था या अनाज की तरह दिखायी नहीं देता था वह सारा अनाज पीटर के आशीर्वाद से सब सामान्य अनाज में बदल गया।

बाकी बचे छोटे नुकीले टुकड़े काले कूटू के दानों में बदल गये। धरती पर ये पहले कूटू के दाने थे।

14 जादू की अँगूठी[66]

एक बार एक बहुत ही गरीब लड़का था। उसने अपनी माँ से कहा — "माँ, मैं घर छोड़ कर जा रहा हूँ और बाहर एक नयी दुनियाँ में जा रहा हूँ। इस शहर में मुझे कोई प्यार नहीं करता और अगर मैं यहाँ रहा तो मैं बिल्कुल बेकार हो जाऊँगा।

इसलिये मैं बाहर जा रहा हूँ और वहीं जा कर अपनी किस्मत आजमाऊँगा। हो सकता है कि इस बीच तुम्हारे दिन भी कुछ सुधर जायें।" यह कह कर वह वहाँ से चल दिया।

चलते चलते वह एक शहर में आया। वहाँ वह उसकी सड़कों पर घूम रहा था कि उसने एक छोटी बुढ़िया एक पहाड़ी सड़क पर ऊपर जाते देखी।

वह दो बड़ी भारी भारी पानी की बालटियाँ ले कर जा रही थी। उससे वे बालटियाँ उठ नहीं रहीं थीं सो वह बार बार साँस लेने के लिये रुक जाती थी।

वह उसके पास गया और बोला — "आपसे यह पानी कभी पहाड़ी के ऊपर नहीं ले जाया जायेगा माँ जी। लाइये आपकी ये बालटियाँ मैं ले चलता हूँ।"

उसने वे पानी की बालटियाँ उस बुढ़िया से ले लीं और वे बालटियाँ ले कर उसके पीछे पीछे उसके घर तक चला गया। वहाँ

[66] The Magic Ring. Tale No 42. A folktale from Italy from its Trentino area.

वह उसके घर की सीढ़ियॉ चढ़ा और वे पानी की बालटियॉ उसकी रसोई में रख दीं।

उस बुढ़िया के कमरे में बहत सारे बिल्लियॉ और कुत्ते थे। उस लड़के के अन्दर आते ही वे उसके चारों तरफ घिर गये। कोई अपनी पूॅछ हिला रहा था तो कोई अपना सिर उसके पैरों पर रगड़ रहा था।

बुढ़िया बोली — "मैं कैसे तुम्हारा धन्यवाद करूॅ बेटा?"

वह लड़का बोला — "नहीं नहीं, धन्यवाद की कोई जरूरत नहीं मॉ जी। यह तो मेरे लिये बड़ी खुशी की बात है कि मैं आपकी कुछ सहायता कर पाया।"

बुढ़िया फिर बोली — "अच्छा ज़रा रुको।"

और वह कमरे के बाहर चली गयी। कुछ पल बाद ही वह लौट आयी तो उसके हाथ में एक छोटी सी ॲगूठी थी जो बहुत ही सस्ती सी लग रही थी।

वह ॲगूठी उस बुढ़िया ने उस लड़के को पहना दी और बोली — "यह बहुत ही कीमती ॲगूठी है बेटा। इसका ख्याल रखना। जब भी कभी तुम इसको अपनी उॅगली में घुमाओगे और किसी भी चीज़ की इच्छा करोगे तो वह तुमको मिल जायेगी।

लेकिन बस इस बात का ध्यान रखना कि यह ॲगूठी खोने न पाये। क्योंकि अगर यह खो गयी तो यह तुम्हारी की गयी सब चीज़ों को बेकार कर देगी।

इस खतरे से बचने के लिये मैं तुमको अपना एक कुत्ता और एक बिल्ला दे रही हूँ जो तुम जहॉ भी जाओगे तुम्हारे पीछे पीछे जायेंगे। ये दोनों बहुत ही होशियार जानवर हैं और देर सबेर तुम्हारे लिये ये बहुत ही फायदेमन्द साबित होंगे।"

नौजवान लड़के ने उस बुढ़िया को बार बार धन्यवाद दिया और उससे ॲगूठी, कुत्ता और बिल्ली ले कर वहॉ से चल दिया।

उसने अपने मन में कहा — "हुॅह, यह तो "बूढ़ी पत्नियों की कहानियॉ" जैसी है।" उसने यह भी नहीं सोचा कि कम से कम वह उस ॲगूठी को घुमा कर वहीं यह देख ले कि उसके घुमाने से होता क्या है।

खैर, उसने उस कुत्ते और बिल्ले के साथ जो अब उसके साथ ही चल रहे थे वह शहर छोड़ दिया। उसको जानवरों से प्यार था सो इनको अपने साथ रख कर वह बहुत खुश था।

उन जानवरों के साथ दौड़ते कूदते वह एक जंगल में घुसा। वहॉ आते आते उसे रात हो गयी थी सो उसको एक पेड़ के नीचे सोना पड़ा। पर भूख के मारे उसको नींद ही नहीं आ रही थी।

तब उसको उस ॲगूठी की याद आयी जो उसको उस बुढ़िया ने दी थी और जिसको वह अभी भी पहने हुए था। उसने सोचा कि इस समय उस ॲगूठी को आजमाने में कोई हर्जा नहीं था।

सो उसने ॲगूठी घुमायी और कहा — "मुझे कुछ खाना और कुछ पीने के लिये चाहिये।"

उसके मुँह से अभी ये शब्द पूरी तरह से निकले भी नहीं थे कि उसके सामने तीन कुर्सियाँ और एक मेज प्रगट हो गयी। उस मेज पर कई किस्म के खाने पीने की चीज़ें लगी हुई थीं।

उनमें से एक कुर्सी पर वह खुद बैठ गया और एक नैपकिन अपने गले में बाँध लिया। दूसरी दो कुर्सियों पर उसने अपने कुत्ते और बिल्ले को बिठा लिया और उनके गले में भी नैपकिन बाँध दिये।

फिर तीनों ने मिल कर खाना खाया। खाना बहुत स्वदिष्ट था। इसके बाद उसको अँगूठी में विश्वास हो गया कि वह वाकई में उसकी इच्छाओं को पूरा कर देगी।

जब खाना खत्म हो गया तो वह जमीन पर लेट गया और उन सब आश्चर्यजनक कामों के बारे में सोचने लगा जो अब वह कर सकता था। बस मुश्किल यह थी कि वह क्या करे और उसे कहाँ से शुरू करे।

कुछ समय के लिये वह यह सोचता रहा कि वह उस अँगूठी से सोने चाँदी के ढेर माँगेगा। फिर वह घोड़ा गाड़ी के सपने देखने लगा। फिर वह किले और जमीन के बारे में सोचने लगा।

जितना ज़्यादा वह इन सब चीज़ों के बारे में सोचता उतना ही उसको पता नहीं चलता कि उसको क्या चाहिये।

जब वह अपने हवाई किले बनाते बनाते थक गया तो वह बोला — "ओह इस तरह से तो मेरा दिमाग ही खराब हो जायेगा।

मैंने कितनी बार सुना है कि जब लोग अमीर हो जाते हैं तो बिल्कुल ही बेवकूफ बन जाते हैं पर मैं अपनी अक्ल हमेशा अपने पास ही रखना चाहता हूँ। आज के लिये इतना काफी है अब मैं इस सबके बारे में कल सोचूँगा।"

कह कर उसने करवट बदली और सो गया। कुत्ता उसके पैरों में गठरी बन कर लेट गया और बिल्ला उसके सिर के पास बैठ कर उसका पहरा देने लगा।

जब वह सो कर उठा तो सूरज काफी ऊपर चढ़ चुका था और पेड़ों की शाखाओं में से झॉक रहा था। हवा धीरे धीरे बह रही थी और चिड़ियॉ चहचहा रही थीं। रात के आराम के बाद अब वह काफी ताजा महसूस कर रहा था।

उसने सोचा कि उस जादुई ॲगूठी से एक घोड़ा मॉगा जाये पर वह जंगल इतना सुन्दर था कि उसको उसने पैदल ही पार करने का निश्चय किया।

उसने एक बार नाश्ता मॉगने की सोची पर वहॉ पर जंगली स्ट्राबैरी इतनी अच्छी उग रही थीं कि उसने तो उनका भर पेट नाश्ते की बजाय पेट भर खाना ही खा लिया।

उसने एक बार कुछ पीने के लिये मॉगने के लिये सोचा पर फिर देखा कि वहीं पास में बहुत साफ पानी का एक नाला बह रहा था

सो उसने उसी पानी को अपने दोनों हाथों का प्याला बना कर उसमें भर कर भर पेट पी लिया।

जंगल में, खेतों में और मैदानों में घूमते हुए अब वह एक बहुत बड़े महल के पास आ पहुँचा। उस समय एक बहुत सुन्दर लड़की उस महल की खिड़की में बैठी बाहर की तरफ देख रही थी।

जैसे ही वह अपने कुत्ते बिल्ले के साथ आगे बढ़ा तो वह उस नौजवान को देख कर प्यार से मुस्कुरायी। हालाँकि उसकी अँगूठी उसके हाथ में सुरक्षित थी पर उसका दिल खो गया था।

उसने सोचा कि अब इस अँगूठी के इस्तेमाल करने का समय आ गया है। सो उसने वह अँगूठी अपनी उँगली में घुमायी और बोला — "इस महल के सामने ही एक महल बन जाये जो इससे भी ज़्यादा सुन्दर हो और इससे भी ज़्यादा आरामदेह हो।"

पलक झपकते ही उस महल के सामने एक महल खड़ा हो गया। वह महल उस लड़की के महल से बहुत बड़ा था और बहुत सुन्दर था। और वह खुद उस महल के अन्दर था जैसे कि वह वहीं रहता हो।

उसका कुत्ता एक टोकरी में सो रहा था और बिल्ला आग के पास बैठा अपने पंजे चाट रहा था। उसने अपने सामने वाली खिड़की खोली तो उसने अपने आपको उस सुन्दर लड़की की खिड़की के ठीक सामने पाया।

वे दोनों एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्कुराये, एक लम्बी साँस ली और उस नौजवान को लगा कि अब समय आ गया है जब उसको उस लड़की के पिता के पास जा कर शादी के लिये उसका हाथ माँग लेना चाहिये।

वह लड़की भी अपने माता पिता की तरह से उस नौजवान से बहुत खुश थी सो कुछ ही दिनों में उन दोनों की शादी हो गयी।

पहली बार मिलने के बाद ही उस लड़की ने उससे पूछा — "पर तुम मुझे यह तो बताओ कि तुम्हारा यह महल अचानक ही मशरूम की तरह से यहाँ कहाँ से उग आया?"

अब उस नौजवान को यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसको यह बात बताये या नहीं पर फिर उसने सोचा — "यह तो मेरी पत्नी है और मुझे इससे कोई भेद छिपाना नहीं चाहिये।" सो उसने उसको अँगूठी के बारे में सब कुछ बता दिया और फिर वे दोनों सो गये।

पर जब वे सो रहे थे तो उसकी पत्नी ने उसकी उँगली से वह अँगूठी उतार ली और उठ कर सारे नौकरों को बुला कर उनसे कहा — "तुरन्त ही यह महल छोड़ दो। हम सब मेरे माता पिता के घर जा रहे हैं।"

जब वह अपने घर पहुँच गयी तो उसने वह अँगूठी घुमायी और बोली — "मेरे पति का महल दूर किसी पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचा दो।"

और वह महल वहाँ से ऐसे गायब हो गया जैसे वह वहाँ कभी था ही नहीं। उसने पहाड़ की तरफ देखा तो वह महल उसकी चोटी पर रखा हुआ था।

सुबह जब नौजवान की आँख खुली तो उसने देखा कि उसकी पत्नी तो वहाँ थी ही नहीं। वह तो वहाँ से जा चुकी है। तुरन्त ही उसने खिड़की खोली तो देखा कि वहाँ केवल उसकी पत्नी ही नहीं बल्कि वहाँ तो चारों तरफ भी कुछ भी नहीं था।

जब उसने और ध्यान से देखा तो नीचे चारों तरफ उसको गहरी खाई दिखायी दी और चारों तरफ बरफ से ढके काले पहाड़ दिखायी दिये। उसने अपनी अँगूठी देखी तो वह भी उसके हाथ में नहीं थी।

उसने नौकरों को आवाज दी पर किसी ने भी उसकी आवाज का जवाब नहीं दिया क्योंकि वे भी वहाँ से जा चुके थे। बस केवल उसका कुत्ता और बिल्ला ही उसके पास भागे हुए आ गये।

केवल वे ही वहाँ रुके हुए थे क्योंकि उसने अपनी पत्नी को केवल अँगूठी के बारे बताया था उन दोनों जानवरों के बारे में नहीं।

पहले तो यह सब देख कर वह बहुत परेशान हुआ पर इस सच से भी उसे कोई खास तसल्ली नहीं मिली।

उसने यह देखने के लिये दरवाजा खोल कर नीचे झाँका कि वह वहाँ से बाहर निकल सकता था या नहीं पर वहाँ तो सारे दरवाजे और खिड़कियाँ खुली जगह में खुल रहे थे और नीचे गहरी खाई थी। उसके लिये तो पैर रखने की भी कहीं जगह नहीं थी।

महल में खाना केवल कुछ दिन का ही था सो उसके दिमाग में एक भयानक विचार आया कि वह तो अब मरने वाला था।

मालिक को इस तरह चिन्ता में डूबे देख कर दोनों जानवर उसके पास आये और कुत्ता बोला — "मालिक आप उम्मीद मत छोड़िये। यह बिल्ला और मैं इन पहाड़ों में से अपना रास्ता ढूँढ लेंगे और फिर आपकी अँगूठी आपको ला कर दे देंगे।"

नौजवान बोला — "मेरे प्यारे जानवरों, बस तुम ही मेरी उम्मीद हो। अगर तुम न होते तो भूखे मरने के बजाय मैं तो इस पहाड़ी से नीचे कूद जाना ही ज़्यादा पसन्द करता।"

सो कुत्ता और वह बिल्ला उस महल के ऊपर चढ़ गये और उस पहाड़ी पर से नीचे कूद गये और पहाड़ की तलहटी में आ गये। फिर वे मैदान पार कर के एक नदी के पास आये।

वहाँ आ कर कुत्ते ने बिल्ले को अपनी पीठ पर चढ़ाया और वह नदी पार कर के नदी के दूसरे किनारे पर आ गया। वहाँ से वे अपने मालिक की बेवफा पत्नी के घर आये।

जब वे वहाँ आये तो रात हो चुकी थी। सारा घर गहरी नींद में डूबा हुआ था। वे दोनों बिल्ले के घुसने के दरवाजे से धीरे से अन्दर घुस गये।

बिल्ले ने कुत्ते से कहा — "तुम यहीं ठहरो और इधर उधर का ज़रा ख्याल रखना तब तक मैं ऊपर जाता हूँ और देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

बिना कोई आवाज किये वह उस कमरे में गया जहाँ वह दुष्ट दिल वाली लड़की सो रही थी। पर क्योंकि उसके कमरे का दरवाजा बन्द था इसलिये वह अन्दर नहीं जा सका।

वह परेशान सा सोचने लगा कि अब वह क्या करे कि तभी एक चूहा वहाँ दौड़ता हुआ आ गया। बिल्ले ने उसको तुरन्त दबोच लिया। वह एक बहुत ही बड़ा और मोटा चूहा था। उसने बिल्ले से प्रार्थना की कि वह उसको छोड़ दे।

बिल्ला बोला — "मैं तुमको छोड़ तो दूँगा पर तुम मेरे लिये इस दरवाजे में एक इतना बड़ा छेद बना दो जिसमें से हो कर मैं इस कमरे में चला जाऊँ।"

चूहा अपने इस काम पर तुरन्त ही लग गया। लकड़ी काटते काटते उसका चेहरा नीला पड़ गया पर वह छेद तो अभी भी इतना छोटा था कि उसमें से बिल्ला तो क्या अभी वह चूहा खुद भी नहीं निकल सकता था।

सो बिल्ले ने उससे पूछा — "क्या तुम्हारे बच्चे भी हैं?"

"हाँ मेरे सात आठ बच्चे हैं और सब बहुत ताकतवर हैं।"

"तो जाओ और जा कर उनमें से एक को ले आओ और देखना जल्दी ही वापस आना। अगर तुम जल्दी ही वापस नहीं आये तो तुम जहाँ भी होगे मैं तुमको वहीं खा जाऊँगा।

चूहा वहाँ से तुरन्त भाग गया और एक छोटे से चूहे के साथ जल्दी ही वापस आ गया।

बिल्ला बोला — "ओ छोटे चूहे सुनो। अगर तुम होशियार होगे तो तुम अपने पिता की ज़िन्दगी बचा लोगे। तुम ऐसा करो कि इस छेद में से हो कर इस औरत के कमरे में जाओ, उसके बिस्तर में चढ़ो और उसके हाथ में जो अँगूठी हो उसको निकाल कर ले लाओ।"

वह छोटा चूहा तुरन्त अन्दर गया और जल्दी ही परेशान सा वापस आ गया। उसने आ कर बिल्ले को बताया कि उसके हाथ में तो कोई अँगूठी नहीं थी।

बिल्ले ने हिम्मत नहीं हारी। उसने सोचा तो इसका मतलब यह है कि वह उसके मुँह में होगी।

वह फिर बोला — "तुम वापस जाओ और अबकी बार जा कर उसकी नाक पर अपनी पूँछ मारना। इससे वह मुँह खोल कर छींकेगी और अँगूठी उसके मुँह से बाहर आ जायेगी। तुम उसको उठा लेना और बस जल्दी से भाग आना।"

सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा कि बिल्ले ने कहा था। बिल्ले की तरकीब काम कर गयी थी। थोड़ी ही देर में वह चूहा अँगूठी ले कर वापस आ गया। बिल्ले ने उससे वह अँगूठी ले ली और नीचे भागा।

कुत्ते ने उसको आते देखा तो पूछा — "क्या तुमको अँगूठी मिल गयी।"

"हाँ हाँ बिल्कुल मिल गयी। चलो चलते हैं।"

वे तुरन्त बाहर के दरवाजे से बाहर आ गये और जहाँ से आये थे वहीं दौड़ गये। पर कुत्ते के दिल में बिल्ले के लिये जलन थी क्योंकि अँगूठी बिल्ले के पास थी और कुत्ता सोच रहा था कि अँगूठी उसके पास होनी चाहिये थी।

सो जब वे नदी पर आये तो कुत्ता बोला — "वह अँगूठी तुम मुझे दे दो और मैं तुमको यह नदी पार करा दूँगा।" पर बिल्ले ने उसे अँगूठी देने से मना कर दिया।

इस पर दोनों में कहा सुनी होने लगी तो बिल्ले ने वह अँगूठी कुत्ते को दे दी। पर जब बिल्ला उस अँगूठी को कुत्ते को दे रहा था तो वह अँगूठी पानी में गिर गयी और एक मछली उसको निगल गयी।

कुत्ते ने बिजली की सी तेज़ी के साथ उस मछली को अपने मुँह में पकड़ लिया और इस तरह अँगूठी कुत्ते के पास आ गयी।

कुत्ते ने बिल्ले को नदी तो पार करा दी पर उनमें आपस में सुलह नहीं हुई। वे जब तक मालिक के महल नहीं पहुँचे तब तक वे आपस में झगड़ते ही रहे।

नौजवान ने उत्सुकता से पूछा — "क्या तुम दोनों मेरी अँगूठी ले आये?"

कुत्ते ने अँगूठी अपने मुँह में से निकाल कर मालिक को दे दी पर बिल्ला बोला — "इसका विश्वास मत करना। यह अँगूठी मैंने अपने आप ली है और इस कुत्ते ने इसे मुझसे चुरायी है।"

"पर अगर मैंने वह मछली नहीं पकड़ ली होती तो यह ॲगूठी हमेशा के लिये खो गयी होती।" कुत्ता बोला।

इस पर उस नौजवान ने दोनों को थपथपाया और कहा — "ठीक है ठीक है, अब तुम लोग ज़्यादा बहस मत करो। तुम दोनों ही मेरे लिये बहुत कीमती हो।"

फिर वह करीब करीब आधा घंटे तक एक हाथ से कुत्ते को और दूसरे हाथ से बिल्ले को सहलाता रहा। तब कहीं जा कर वे दोनों आपस में दोस्त बने। फिर वह उनको महल में ले गया।

उस ॲगूठी को अपनी उँगली में पहन कर उसने उसको घुमाया और बोला — "अब मेरे महल को उस जगह रख दो जहॉ मेरी उस बेरहम पत्नी का महल है और उसका महल यहॉ रख दो जहॉ मेरा महल है।"

उसके यह कहते ही दोनों महल हवा में उड़े और एक दूसरे की जगह पहुँच गये। उसका अपना महल अब मैदान के बीचोबीच खड़ा था और उसकी पत्नी का महल पहाड़ की एक नुकीली चोटी पर खड़ा था और वह उसमें से चील की तरह चीख रही थी।

नौजवान ने अपनी मॉ को बुला भेजा और उसने वहॉ अपनी ज़िन्दगी के आखिरी दिन खुशी खुशी गुजारे जैसा कि उसके बेटे ने उससे वायदा किया था।

कुत्ता और बिल्ला हमेशा उसके साथ रहे पर किसी न किसी बात पर लड़ते झगड़ते रहे पर फिर भी सब लोग आपस में प्रेम से मिल जुल कर रहे।

और ॲगूठी? उसको तो अब वह कभी कभी ही इस्तेमाल करता था, ज़्यादा नहीं। उसका इस बारे में यह सोचना था कि लोगों को कोई भी चीज़ अपनी मेहनत से लेनी चाहिये किसी से दया से नहीं।

जब वे पहाड़ के ऊपर गये तो वहॉ उसने अपनी पत्नी को ठंडा और मरा हुआ पाया। वह ठंड और भूख से मर गयी थी।

हालॉकि यह उसका बहुत ही खराब अन्त हुआ पर इससे ज़्यादा अच्छे अन्त की हकदार तो वह थी भी नहीं।

15 राजकुमारी जिसको कभी पेट भर अंजीर नहीं मिलीं[67]

एक राजा था जिसकी एक बेटी थी। उसको अंजीर बहुत पसन्द थीं। वह टोकरे के टोकरे भर कर अंजीर खा जाती थी। वह कभी भी कितनी भी अंजीर खा कर सन्तुष्ट नहीं होती थी।

सो उस राजा ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी उसकी बेटी को अंजीर दे कर सन्तुष्ट करेगा वह अपनी बेटी की शादी उसी से करेगा।

बहुत सारे लोग राजकुमारी के लिये बहुत सारी अंजीर ले कर आये पर हमेशा ही उसके लिये वे कम पड़ जाती थीं।

एक उम्मीदवार एक पूरी टोकरी भर कर उसके लिये अंजीर ले कर आया पर इससे पहले कि वह उनको उसको खाने के लिये देता उसने उन सब अंजीरों को खा कर खत्म कर दिया। और जब वे खत्म हो गयीं तो वह बोली "और"।

ऐसे ही समय में तीन लड़के एक खेत में खुदायी कर रहे थे कि सबसे बड़े लड़के ने कहा — "अब मैं खेत को और नहीं खोदना

---

[67] The King's Daughter Who could Never Get Enough Figs. Tale No 47. A folktale from Italy from its Romagna area.
[In this tale there were three boys to go to her as her suitors, the princess ate three basketful figs, the King gave him three hares, three people went to disturb him in the forest…]

चाहता। मैं तो जाऊँगा और राजा की बेटी को उसके मन भर कर अंजीर खिला कर आऊँगा और फिर उससे शादी कर लूँगा।"

वह एक बहुत बड़ी सी टोकरी ले कर एक अंजीर के पेड़ पर चढ़ गया। जब वह काफी भर गयी तो वह उस टोकरी को ले कर राजा के महल को चला।

महल के रास्ते में उसको उसका एक पड़ोसी मिला। वह उस लड़के से बोला — "तुम्हारी अंजीर बहुत अच्छी हैं मुझे एक अंजीर दो न।"

लड़का बोला — "नहीं मैं तुम्हें एक भी अंजीर नहीं दे सकता। ये अंजीर मैं राजकुमारी को खिलाने के लिये ले जा रहा हूँ और तुम्हें देने के बाद तो ये अंजीर कम हो जायेंगीं इसलिये मैं तुम्हें इनमें से एक भी अंजीर नही दे सकता।" और यह कह कर वह आगे चल दिया।

वह महल पहुँचा तो उसको राजा की बेटी के पास ले जाया गया। वहाँ पहुँच कर उसने वह अंजीर का टोकरा राजा की बेटी के सामने रख दिया।

जैसे ही उसने वह टोकरा राजा की बेटी के सामने रखा एक पल में ही उसमें से सारी अंजीरें खत्म हो गयीं। अगर उसने वहाँ से वह टोकरा न उठा लिया होता तो शायद वह राजकुमारी वह टोकरा भी खा जाती।

वह लड़का बेचारा दुखी मन से घर वापस चला गया।

अब बीच वाले भाई ने कहा — "मैंने भी काफी खुदायी कर ली अब मैं और खुदायी नहीं करना चाहता। मैं भी राजा की बेटी को उसके मन भर कर अंजीर खिला कर अपनी किस्मत आजमाऊँगा।"

कह कर वह भी पेड़ पर चढ़ा, अंजीरों से अपनी टोकरी भरी और महल की तरफ चल दिया। रास्ते में उसको भी उसका एक पड़ोसी मिला और उसने भी उस लड़के से एक अंजीर माँगी।

उस लड़के ने अपने कन्धे उचकाये और आगे बढ़ गया।

महल पहुँच कर उसने भी अपनी टोकरी राजा की बेटी के सामने रखी। पर जैसे ही उसने वह टोकरी उसके आगे रखी वह उस टोकरी की सारी अंजीरें खा गयी।

अगर वह भी अपनी खाली टोकरी उसके सामने से न उठा लेता तो शायद वह उसको भी खा जाती। वह भी उदास मन से घर वापस आ गया।

अब सबसे छोटे लड़के की बारी थी। उसने कहा कि वह भी महल जा कर अपनी किस्मत आजमाना चाहता है।

सो उसने भी अपनी टोकरी उठायी, पेड़ पर से टोकरी भर के अंजीरें तोड़ीं और राजा की बेटी को उनको पेट भर खिलाने के लिये चल दिया।

वह अपनी टोकरी लिये जा रहा था कि उसको भी अपना वही पड़ोसी मिला जो उसके दोनों भाइयों को मिला था। उसने भी इस लड़के से एक अंजीर माँगी।

लड़के ने अपनी टोकरी उसके सामने करते हुए कहा — "तुम एक ही अंजीर क्यों बल्कि तीन अंजीर भी ले सकते हो।" पर उस पड़ोसी ने उस टोकरी में से केवल एक ही अंजीर खायी।

फिर उसने उस लड़के को एक जादू की छड़ी दी और कहा — "जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो बस तुम्हें यही करना है कि इस छड़ी को जमीन पर मारना है और इसके जमीन पर मारते ही यह टोकरी जैसे ही खाली होगी फिर से भर जायेगी। और तुम्हारी अंजीरें कभी कम नहीं पड़ेंगी।"

वह लड़का यह सुन कर बहुत खुश हुआ और अपनी टोकरी ले कर महल जा पहुँचा। उसको भी और लोगों की तरह से राजा की बेटी के सामने ले जाया गया।

हमेशा की तरह से एक पल में ही राजा की बेटी ने वह अंजीरों की टोकरी खाली कर दी। पर जैसे ही वह टोकरी खाली हुई उस लड़के ने अपनी जादू की छड़ी को जमीन पर मारा और वह टोकरी फिर से अंजीरों से भर गयी।

ऐसा तीन बार हुआ। तीन टोकरी अंजीर खा कर राजा की बेटी ने अपने पिता से कहा — "पिता जी, अंजीर? उफ़ मुझे अब और अंजीर नहीं चाहिये।"

राजा उस लड़के से बोला — "तुम जीत गये हो यह तो ठीक है पर अगर तुम मेरी बेटी से शादी करना चाहते हो तो तुमको समुद्र

पार उसकी चाची को शादी में बुलाने के लिये उसके पास जाना पड़ेगा।"

यह सुन कर वह लड़का कुछ दुखी सा हो कर अपने घर चला गया। जैसे ही वह घर पहुँचा तो बाहर की सीढ़ियों पर उसका वह पड़ोसी खड़ा था जिसने उसको जादू की छड़ी दी थी। उसने उसको अपना सारा हाल बताया।

पड़ोसी ने उसको एक बिगुल[68] दिया और कहा — "तुम समुद्र के किनारे चले जाओ और वहाँ जा कर इसे बजाना। राजकुमारी की चाची जो समुद्र पार रहती है वह इसकी आवाज सुन लेगी और वहाँ आ जायेगी। तब तुम उसको राजा के पास ले जाना।"

लड़के ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और समुद्र के किनारे जा कर उस बिगुल को बजाया। उस बिगुल की आवाज सुनते ही राजा की बेटी की चाची समुद्र पार कर के उसके पास आ गयी और वह उसको राजा के पास ले गया।

चाची को महल में देख कर राजा बोला — "बहुत अच्छे। पर मेरी बेटी से शादी करने के लिये तुम्हारे पास वह सोने की ॲगूठी भी तो होनी ही चाहिये जो समुद्र की तली में पड़ी है नहीं तो तुम उसे क्या पहनाओगे।"

[68] This is simple Bigul but in English it is called Bugle.

यह सुन कर तो वह नौजवान बहुत ही नाउम्मीद हुआ और वह फिर घर वापस चल दिया। घर पहुँचने पर वह फिर अपने उसी पड़ोसी से मिला और उसको सारी बात बतायी।

उस पड़ोसी ने उससे कहा कि वह समुद्र के किनारे जाये और फिर से अपना वही बिगुल बजाये।

उसने ऐसा ही किया तो अबकी बार एक मछली अपने मुँह में एक अँगूठी दबाये समुद्र में से कूद कर बाहर आ गयी। लड़के ने वह अँगूठी उसके मुँह में से निकाल ली और उसको ले जा कर राजा को दे दिया।

राजा उस अंगूठी को देख कर आश्चर्यचकित रह गया पर फिर बोला — "देखो इस थैले में तुम्हारी शादी की दावत के लिये तीन खरगोश हैं पर वे बहुत ही दुबले पतले हैं। इनको तीन दिन और तीन रात के लिये खाना खिलाने के लिये बाहर जंगल में ले जाओ और फिर इसी थैले में रख कर उनको वापस ले आना।"

पर खरगोश को जंगल में पहले खुला छोड़ने के लिये और फिर दोबारा उनको पकड़ने के लिये किसने सुना है?

वह लड़का बेचारा फिर से अपनी समस्या ले कर उसी पड़ोसी के पास पहुँचा। पड़ोसी ने कहा — "जब अँधेरा हो जाये तब यह बिगुल बजाना तो वे खरगोश वापस इसी थैले में आ जायेंगे।"

लड़का उन खरगोशों को जंगल में ले गया और उसने उनको तीन दिन और तीन रात के लिये वहाँ छोड़ दिया।

पर तीसरे दिन राजा की बेटी की चाची वहाँ वेश बदल कर आयी और उस लड़के से पूछा — "तुम यहाँ जंगल में क्या कर रहे हो बेटा?"

"मैं खरगोशों की रखवाली कर रहा हूँ माँ जी।"

"इनमें से एक खरगोश मुझे बेच दो।"

"मैं नहीं बेच सकता।"

"तुम एक खरगोश का कितना पैसा लोगे?"

"सौ क्राउन[69]।"

चाची ने उसको सौ क्राउन दिये और उससे खरगोश ले कर चली गयी। लड़का जब तक वहीं इन्तजार करता रहा जब तक वह घर नहीं पहुँच गयी।

जैसे ही वह घर पहुँची तो उसने अपना बिगुल बजाया। वह खरगोश चाची के हाथ से फिसल कर जंगल की तरफ भागा और फिर उसके थैले में आ कर बैठ गया।

इसके बाद राजा की बेटी अपना वेश बदल कर जंगल गयी। उसने उस लड़के से पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"मैं यहाँ तीन खरगोशों की रखवाली कर रहा हूँ।"

"एक मुझे बेचोगे?"

"मैं नहीं बेच सकता।"

"तुम एक खरगोश के कितने पैसे लोगे?"

---

[69] Crown was the name of British Pound in olden days.

"तीन सौ क्राउन।"

उसने उस लड़के को तीन सौ क्राउन दिये और वहाँ से चल दी।

पर जैसे ही वह अपने घर के पास आयी उस नौजवान ने अपना बिगुल बजा दिया और वह खरगोश उस लड़की के हाथ से फिसल कर जंगल की तरफ भागा और उसके थैले में आ कर छिप गया।

अन्त में राजा खुद वेश बदल कर जंगल गया।

उसने उस लड़के से पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"मैं यहाँ तीन खरगोशों की रखवाली कर रहा हूँ।"

"एक मुझे बेचोगे?"

"तीन हजार क्राउन में।"

राजा ने उसको तीन हजार क्राउन दिये और खरगोश ले कर चल दिया।

पर इस बार भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही राजा अपने महल के पास पहुँचा उस लड़के ने बिगुल बजा दिया और वह खरगोश तुरन्त ही उसके हाथ से फिसल कर जंगल की तरफ भाग लिया और उसके थैले में आ कर बैठ गया।

तीन दिन और तीन रात खत्म हो गये थे सो वह लड़का महल लौट आया और तीनों खरगोश उसने राजा को वापस कर दिये।

राजा उसे देख कर बोला — "मेरी बेटी से शादी करने से पहले एक आखिरी इम्तिहान और। यह थैला लो। तुमको यह थैला सच से भरना है।"

हालाँकि वह लड़का यह सुन कर बहुत नाउम्मीद हुआ कि राजा की बेटी से शादी करने की केवल एक ही शर्त नहीं थी बल्कि उसकी तो शर्तें हीं खत्म नहीं हो रही थीं पर वह क्या करता।

वह लड़का बेचारा वह थैला ले कर फिर अपने घर वापस आ गया। उसका पड़ोसी अभी भी उसके घर के बाहर सीढ़ियों पर खड़ा था।

उसकी समस्या सुन कर वह बोला — "तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुमने जंगल में क्या किया था। वही तुम राजा को बता दो तो तुम्हारा थैला सच से भर जायेगा।"

वह लड़का वापस राजा के पास गया। राजा ने थैला खोला और उस लड़के ने बोलना शुरू किया — "पहले आपकी बेटी की चाची आयी और उसने सौ क्राउन में एक खरगोश खरीदा पर वह उससे बच कर भाग गया और थैले में वापस आ गया।

फिर आपकी बेटी आयी और उसने तीन सौ क्राउन में एक खरगोश खरीदा। वह भी उसके हाथ से निकल गया और वापस थैले में आ गया।

आखीर में आप आये सरकार और आपने एक खरगोश तीन हजार काउन में खरीदा। वह आपके भी हाथ से निकल कर भाग गया और मेरे थैले में वापस आ गया।"

जैसे ही वह यह कह कर चुका तो राजा ने देखा कि वह थैला तो पूरा फूला हुआ था।

आखिर राजा की समझ में आ गया कि अब उसके पास अपनी बेटी की शादी उस लड़के के साथ करने के अलावा और कोई चारा नहीं था।[70] सो उसने अपनी बेटी की शादी उस नौजवान से कर दी।

[70] My Note - This was very injustice with the boy that after putting only one condition for the marriage of his daughter, the King asked the boy to complete so many tasks before he married her to him.

16 तीन कुत्ते[71]

एक बार एक बूढ़ा किसान था जिसके दो बच्चे थे, एक बेटा और एक बेटी।

जब उसके मरने का समय आया तो उसने अपने दोनों बच्चों को अपने पास बुलाया और बोला — "मेरे बच्चों, मैं अब मरने वाला हूँ और मेरे पास तुम लोगों को देने के लिये कुछ भी नहीं है सिवाय तीन छोटी भेड़ों के जो बाड़े में हैं। तुम सब मिल कर रहना तो तुम कभी भूखे नहीं रहोगे।"

इतना कह कर वह बूढ़ा किसान मर गया। उसके मरने के बाद दोनों भाई बहिन साथ साथ रहते रहे। लड़का भेड़ चरा लाता था और लड़की घर में रह कर सूत कातती थी और खाना बनाती थी।

एक दिन जब लड़का भेड़ों को चराने के लिये जंगल गया हुआ था तो उसको एक छोटा आदमी मिला जिसके पास तीन कुत्ते थे।

वह बोला — "गुड डे[72] मेरे बच्चे।"

लड़का बोल — "गुड डे जनाब।"

आदमी बोला — "तुम्हारी भेड़ें कितनी अच्छी हैं।

लड़का बोला — "आपके कुत्ते भी बहुत अच्छे हैं।"

"क्या तुम एक कुत्ता खरीदोगे?"

---

[71] The Three Dogs. Tale No 48. A folktale from Italy from its Romogna area.

[72] A normal greeting among the western people in the day time

"कितने का है?"

"तुम मुझे अपनी एक भेड़ दे दो तो मैं तुमको अपना एक कुत्ता मुफ्त दे दूँगा।"

"पर मेरी बहिन क्या कहेगी?"

"उसको क्या कहना है। तुमको तो सच में एक कुत्ते की जरूरत है जो तुम्हारी भेड़ों की रखवाली करे।"

लड़का अपने आप ही कुछ बुड़बुड़ाया फिर उसने उस आदमी को अपनी एक भेड़ दे दी और उससे उसका एक कुत्ता ले लिया। उसने उस आदमी से उसके कुत्ते का नाम पूछा तो उस छोटे आदमी ने बताया कि उसका नाम "क्रश आयरन"[73] था।

जब घर जाने का समय आया तो वह लड़का कुछ बेचैन हो गया। उसको लगा कि उसकी बहिन उसको डॉटेगी।

और वाकई में जब वह लड़की बाड़े में भेड़ों का दूध निकालने गयी तो वहॉ उसको केवल दो भेड़ें और एक कुत्ता दिखायी दिया। वह अपने भाई पर चिल्लायी और उसने उसकी पिटायी भी की।

उसने उससे पूछा — "क्या तुम बता सकते हो कि हमारी एक भेड़ कहॉ है और यह कुत्ता हमारे किस काम का है? अगर कल तक हमारी तीनों भेड़ वापस नहीं आयीं तो तुम्हारी खैर नहीं।"

परन्तु उस लड़के को अभी भी लग रहा था कि उसको अपनी भेड़ों की देखभाल के लिये एक कुत्ते की जरूरत है।

---

[73] Crush Iron – who can crush the iron

अगली सुबह वह लड़का अपनी भेड़ चराने के लिये फिर उसी जगह गया तो उसे फिर से वही छोटा आदमी मिल गया। इस बार उसके पास एक भेड़ और दो कुत्ते थे।

वह आदमी बोला — "गुड डे, मेरे बच्चे।"

लड़का बोला — "गुड डे जनाब।"

आदमी बोला — "मेरी भेड़ बहुत अकेली है।"

लड़का बोला — "मेरा कुत्ता भी।"

आदमी बोला — "तो तुम मुझे दूसरी भेड़ दे दो और मैं तुमको दूसरा कुत्ता दे देता हूँ।"

लड़का बोला — "ओह, पता है कल मेरी बहिन मुझे एक भेड़ तुम्हें देने के लिये मारने वाली थी। ज़रा सोचो तो अगर मैंने तुमको दूसरी भेड़ भी दे दी तो वह मेरा क्या हाल करेगी।"

आदमी बोला — "देखो एक कुत्ता अकेला ठीक नहीं है। अगर दो भेड़िये आ गये तो तुम क्या करोगे?"

यह सुन कर लड़के ने दूसरी भेड़ का भी सौदा कर लिया। उसने अपनी एक भेड़ उसको दे कर उससे उसका दूसरा कुत्ता ले लिया।

फिर उसने उस आदमी से पूछा — "इस कुत्ते का क्या नाम है?"

आदमी बोला — "च्यू चेन्स[74]।"

[74] Chew Chains – who can chew iron chains

जब वह लड़का शाम को एक भेड़ और दो कुत्तों के साथ घर लौटा तो उसकी बहिन ने पूछा — "क्या तुम तीनों भेड़ें वापस ले आये?" पर उसको पता ही नहीं था कि वह उससे क्या कहे।

फिर भी वह बोला — "हॉ, पर तुमको अनाजघर में आने की कोई जरूरत नहीं है मैं उनका दूध अपने आप निकाल लूॅगा।"

पर लड़की ने उन भेड़ों को अपने आप देखने के लिये ज़ोर दिया और इसका नतीजा यह हुआ कि भाई बिना खाना खाये ही सो गया।

वह बोली — "मैं तुम्हारी जान ले लूॅगी अगर कल शाम तक मेरी तीनों भेड़ें यहॉ वापस नहीं आयीं तो।"

अगले दिन वह जब जंगल में अपने जानवर चरा रहा था तो वह छोटा आदमी उसको अपनी दोनों भेड़ों और एक कुत्ते के साथ फिर वहीं मिल गया।

वह आदमी बोला — "गुड डे, मेरे बच्चे।"

लड़का बोला — "गुड डे जनाब।"

आदमी बोला — "अब मेरा यह कुत्ता अकेलेपन से मरा जा रहा है।"

लड़का बोला — "और यह मेरी आखिरी भेड़ भी।"

आदमी बोला — "तो तुम अपनी यह भेड़ मुझे दे दो और मेरा यह कुत्ता तुम ले लो।"

लड़का बोला — "नहीं नहीं, ऐसी बात की तो तुम मुझे सलाह भी मत देना।"

आदमी बोला — "क्यों? तम्हारे पास दो कुत्ते हैं तो तुमको तीसरा कुत्ता क्यों नहीं चाहिये? इस तरह से तुम तीन बहुत बढ़िया कुत्तों के मालिक हो जाओगे।"

"इस कुत्ते का नाम क्या है?"

"कैश वौल[75]।"

"क्रश आयरन, च्यू चेन्स, कैश वौल। आओ मेरे साथ आओ।"

जब रात हुई तो उस लड़के की अपनी बहिन के पास घर जाने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। उसने सोचा मैं बाहर ही कहीं सो जाता हूॅ। सो वह अपने तीनों कुत्तों को अपने पीछे लिये लिये चल दिया।

अभी वह उनको लिये हुए कुछ ही दूर गया था कि बहुत ज़ोर से बारिश होने लगी। रात हो चुकी थी और उसको कुछ पता ही नहीं चल रहा था कि वह कहॉ जाये।

उसी समय उस घने जंगल के बीच में उसको एक बहुत सुन्दर महल दिखायी दे गया जिसमें चारों तरफ रोशनी हो रही थी और उसके चारों तरफ चहारदीवारी खड़ी थी।

उसने जा कर महल का दरवाजा खटखटाया पर किसी ने दरवाजा नहीं खोला। उसने पुकारा भी पर किसी ने कोई जवाब भी

[75] Crash wall – who can break the wall

नहीं दिया। तब उसने अपने क्रैश वौल कुत्ते को पुकारा — “क्रैश वौल मेरी सहायता करो।”

उसके मुँह से शब्द निकले भी नहीं थे कि क्रैश वौल ने अपने मजबूत पंजों से उस महल की चहारदीवारी में एक छेद बना दिया। वह लड़का और उसके तीनों कुत्ते सब उस छेद में से महल की चहारदीवारी में दाखिल हो गये।

पर उनके सामने ही एक मोटा सा लोहे का दरवाजा था। वह लड़का बोला — “क्रश आयरन, अब तुम्हारी बारी है।” क्रश आयरन ने तुरन्त ही दो बार के काटने में उस दरवाजे को तोड़ डाला।

अन्दर पहुँच कर उस लड़के ने देखा कि महल का दरवाजा तो जंजीरों से बँधा हुआ है। लड़के ने पुकारा — “च्यू चेन।” और एक ही बार में उस कुत्ते ने वह जंजीरें तोड़ डालीं और दरवाजा खुल गया।

कुत्ते अन्दर घुस गये और सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गये। लड़का उनके पीछे पीछे था। उस महल में कोई भी दिखायी नहीं दे रहा था। सारा महल खाली पड़ा था।

आग जलाने की जगह आग जल रही थी और पास में ही एक बड़ी सी मेज पर बहुत सारा खाना लगा हुआ था। वह तुरन्त ही खाना खाने बैठ गया। उस मेज के नीचे सूप के तीन कटोरे कुत्तों के लिये रखे हुए थे। कुत्ते उन सूप के कटोरों में से सूप पीने बैठ गये।

जब उन सबने अपना अपना खाना खा लिया तो वह दूसरे कमरे में घुसा। वहॉ उसके रात के सोने के लिये एक बिस्तर लगा हुआ था और तीन बिस्तर उसके कुत्तों के लिये लगे थे। सो वे चारों वहॉ सो गये।

सुबह सवेरे जब वह उठा तो शिकार के लिये वहॉ एक बन्दूक और एक घोड़ा भी तैयार था। उनको ले कर वह शिकार के लिये चला गया।

जब वह दोपहर को घर वापस आया तो फिर से उस मेज पर खाना सजा हुआ था, बिस्तर लगा हुआ था और सारा घर साफ और अच्छे तरीके से लगा हुआ था।

यह दो दिन तक लगातार चलता रहा पर उसको कहीं भी कोई भी दिखायी नहीं दिया। ऐसा लग रहा था जैसे वह वहॉ छुट्टियॉ बिताने आया हो।

फिर उसको अपनी बहिन की याद आयी। उसको यह अन्दाजा ही नहीं हुआ कि जब वह घर नहीं पहुॅचा होगा तो उस बेचारी को कितनी परेशानी हुई होगी पर उसने सोचा कि अब वह उसको रहने के लिये यहॉ ले आयेगा।

अब तो मैं खूब अमीर हो गया हॅू तो अब तो मुझे वह घर में भेड़ें न लाने के लिये सपने में भी डॉटने की नहीं सोचेगी।

अगले दिन उसने अपने कुत्तों को बुलाया, एक भले आदमी के कपड़े पहन कर घोड़े पर चढ़ा और अपनी बहिन के पास चल दिया।

उसकी बहिन घर के बाहर बैठी सूत कात रही थी। उसने दूर से एक आदमी को आते देखा तो सोचा — "यह सुन्दर सा नौजवान कौन हो सकता है जो मेरे घर की तरफ चला आ रहा है।"

पर जब उसने अपने भाई को पहचाना जो अभी भी तीन भेड़ों की बजाय तीन कुत्तों के साथ आ रहा था तो उसने उसको फिर डॉट लगायी।

उसका भाई बोला — "रुको रुको। तुम मेरे ऊपर चिल्ला क्यों रही हो। अब तो मैं एक बहुत ही भला आदमी बन गया हूँ और अब मैं तुमको अपने साथ रहने के लिये यहाँ से ले जाने के लिये आया हूँ। अब हमको उन भेड़ों की क्या जरूरत है?"

कह कर उसने अपनी बहिन को अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल वापस आया जहाँ वह रानी बन गयी। वहाँ उसकी छोटी से छोटी इच्छा भी तुरन्त ही पूरी हो जाती।

पर वह अभी भी हमेशा उन कुत्तों से नफरत करती और जब भी उसका भाई घर आता वह उससे उनकी शिकायत करती।

एक दिन जब उसका भाई अपने तीनों कुत्तों के साथ शिकार पर गया हुआ था तो वह बागीचे में घूमने चली गयी। वहाँ उसने बागीचे के आखीर में

एक पेड़ पर एक बहत ही सुन्दर सन्तरा लगा देखा। वह उसको तोड़ने गयी तो जैसे ही उसने उसको शाख से तोड़ा तो एक राक्षस उसको खाने को दौड़ा।

वह यह कहते हुए एकदम से रो पड़ी कि उस महल का असली मालिक तो उसका बड़ा भाई था वह नहीं। और अगर उस राक्षस को किसी को खाना ही है तो उसे उसके भाई को खाना चाहिये उसे नहीं।

वह राक्षस बोला कि वह उसके भाई को नहीं खा सकता था क्योंकि वह हमेशा उन तीन कुत्तों को अपने साथ रखता है।

लड़की ने कहा कि अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये वह उसके लिये अपने भाई के मारने का इन्तजाम कर देगी अगर वह उसको यह बता दे कि उसको करना क्या है।

राक्षस बोला — "तुम उसके कुत्तों को बागीचे की दीवार के बाहर जंजीर से बॅधवा दो फिर मैं देख लूॅगा।" लड़की ने यह करने का वायदा किया और उस राक्षस ने उसको छोड़ दिया।

जब वह लड़का घर आया तो उसकी बहिन ने उससे फिर से कुत्तों की शिकायतें करनी शुरू कीं। उसने कहा कि उसको खाने के समय वे कुत्ते नहीं चाहिये क्योंकि उनमें बदबू आती थी।

उसका भाई हमेशा उसकी बात मानता था सो वह बिना किसी हील हुज्जत के उन तीनों कुत्तों को बाहर ले गया और उसी तरह से

उनको बॉध दिया जैसे उसकी बहिन ने उससे बॉधने के लिये कहा था।

उसके बाद उसने अपने भाई को उस बागीचे के आखीर में लगे पेड़ से सन्तरा तोड़ने के लिये कहा। वह वहॉ गया। पर वह भी जब वह सन्तरा तोड़ रहा था तो वहॉ से वह राक्षस निकल पड़ा।

उसको पता चल गया कि उसकी बहिन ने उसको धोखा दिया है सो वह चिल्लाया — "क्रश आयरन, च्यू चेन्स, क्रैश वौल।"

यह सुनते ही च्यू चेन्स ने जंजीर तोड़ दी, क्रश आयरन ने दरवाजे की लोहे की सलाखें तोड़ दीं और क्रैश वौल ने दीवार तोड़ दी और तीनों ने मिल कर उस राक्षस के टुकड़े टकड़े कर दिये।

वह लड़का अपनी बहिन के पास लौटा और बोला — "तुम क्या मेरे बारे में यही सोचती हो? क्या तुम यह चाहती हो कि वह राक्षस मुझे खा ले? मैं अब तुम्हारे साथ एक मिनट भी और नहीं रह सकता। मैं जा रहा हूँ।" कह कर वह अपने घोड़े पर चढ़ा और वहॉ से चला गया। उसके पीछे उसके कुत्ते भी चले गये।

चलते चलते वह एक राजा के राज्य में आया। उस राजा के एक अकेली बेटी थी जिसको एक राक्षस खाने वाला था। वह राजा के पास गया और शादी के लिये उसकी बेटी का हाथ मॉगा।

राजा बोला — "मैं तुमको अपनी बेटी नहीं दे सकता क्योंकि उसको एक बहुत ही भयानक जंगली जानवर खाने वाला है। पर हॉ

अगर तुम उसको उससे आजाद कर दो तो यकीनन वह तुम्हारी हो जायेगी।"

"बहुत ठीक है राजा साहब। आप यह सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दें। मैं देखता हूँ।"

उसने उस राक्षस को ढूँढा और उसके कुत्तों ने उसको फाड़ कर खा डाला। जब वह राक्षस को मार कर लौटा तो राजा ने अपनी बेटी की शादी उसके साथ पक्की कर दी।

जब शादी का दिन आया तो दुलहे ने अपनी बहिन के पुराने बर्ताव को भूल कर उसको भी अपनी शादी में बुला भेजा पर उसकी बहिन की शिकायतें अभी भी उतनी ही ज़ोर पर थीं जितनी पहले थीं।

उसकी बहिन ने शादी के बाद यह घोषणा की — "आज की रात अपने भाई का बिस्तर मैं सजाऊँगी।"

इसको बहिन का प्यार समझ कर सभी लोग उसकी इस बात को मान गये कि उसी को अपने भाई का बिस्तर बनाना भी चाहिये।

लेकिन उसने किया क्या? उसने दुलहे के बिस्तर की चादर के नीचे एक तेज़ आरी छिपा दी। उस रात जब उसका भाई उस पर लेटा तो उसके दो टुकड़े हो गये।

रोने चिल्लाने के बीच उसको चर्च ले जाया गया। तीनों कुत्ते उसके ताबूत के पीछे पीछे चल रहे थे।

बाद में चर्च का दरवाजा बन्द कर दिया गया और उन कुत्तों को वहीं चर्च के अन्दर उस ताबूत के पहरे पर छोड़ दिया गया – एक को उसके दॉयी तरफ, एक को उसके बॉयी तरफ और एक को उसके सिर की तरफ।

जब कुत्तों ने देखा कि सब लोग चले गये तो उनमें से एक कुत्ता बोला — "मैं जाता हूँ और उसको ले कर आता हूँ।"

दूसरा कुत्ता बोला — "मैं उसको उठाऊँगा।"

और तीसरा कुत्ता बोला — "मैं उसको लगाऊँगा।"

उनमें से दो कुत्ते चले गये और मरहम की एक बोतल ले कर लौटे।

उस कुत्ते ने जो पहरे के लिये पीछे रह गया था उस लड़के के घावों को मरहम से चिकना किया और वह लड़का फिर से ज़िन्दा हो गया। राजा और राजकुमारी उसको ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए।

राजा ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे पता लगायें कि वह आरी उसके बिस्तर में किसने छिपायी थी। जब यह पता चला कि उसे उसकी बहिन ने ही वह आरी उसके बिस्तर में छिपायी थी तो उसको मौत की सजा दे दी गयी।

उधर उस लड़के की राजा की लड़की से खुशी खुशी शादी हो गयी। यह खुशी इसलिये भी ज़्यादा थी क्योंकि राजा अब बहुत बूढ़ा हो चला था। उसने अपना राज्य अपने दामाद[76] को दे दिया।

पर एक बात उस लड़के की खुशी को काटती रही और वह थी कि उसको ज़िन्दा करने के बाद से उसके तीनों कुत्ते कहीं गायब हो गये थे। उनका उसके राज्य में कहीं पता नहीं था। वह बेचारा उनके लिये बहुत रोया पर क्या करता। उसको सब्र करना पड़ा।

एक सुबह उसका एक दूत एक खबर ले कर आया कि उसके राज्य में तीन जहाजों ने लंगर डाला है। उन जहाजों पर तीन बड़े आदमी हैं जो उसको अपनी पुरानी दोस्ती की याद दिलाना चाहते हैं।

वह नौजवान राजा मुस्कुराया क्योंकि वह तो हमेशा से ही एक सादा से गाँव का गरीब लड़का रहा था। वह तो किसी बहुत बड़े आदमी को जानता ही नहीं था फिर ये कौन तीन बड़े आदमी उससे पुरानी दोस्ती को याद दिलाने के लिये कह रहे हैं।

पर फिर भी वह अपने दूत के साथ उन लोगों से मिलने के लिये गया जो अपने आपको उसका दोस्त कहते थे। वहाँ उसको दो राजा और एक बादशाह मिला जो उससे बड़े तपाक से मिले।

उनमें से बादशाह बोला — "क्यों? तुमने हमको पहचाना नहीं?"

---

[76] Son-in-law

वह लड़का बोला — “शायद आप गलती कर रहे हैं। मैं तो कभी आपसे मिला भी नहीं।”

बादशाह मुस्कुराते हुए बोला — “हमको नहीं पता था कि तुम अपने तीनों वफादार कुत्तों को इतनी जल्दी भूल जाओगे।”

“क्या? क्रश आयरन, च्यू चेन्स और क्रैश वौल? इस रूप में?”

तब बादशाह ने उसको बताया कि एक जादूगर ने हम तीनों को कुत्तों के रूप में बदल दिया था और हम तब तक अपने असली रूप में नहीं आ सकते थे जब तक कि उस गॉव का कोई लड़का राज गद्दी पर न बैठ जाये।

जैसे हमने तुम्हारी इस राज गद्दी पर बैठने में सहायता की उसी तरह से तुमने भी हमारी उस शाप से छूटने में सहायता की। आज से हम पक्के दोस्त हैं। चाहे कुछ भी हो जाये पर तुम इन दोनों राजाओं और इस बादशाह पर पूरा भरोसा कर सकते हो।

वे लोग उस शहर में आनन्द मनाते हुए कुछ दिन तक रहे। जब उनके जाने का समय आया तो वे लोग एक दूसरे के लिये शुभ कामना करते हुए अलग हो गये। उसके बाद वे सब बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

17 चाचा भेड़िया[77]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बहुत ही लालची लड़की थी। एक बार ऐसा हुआ कि मेले[78] के समय उसके स्कूल की मास्टरनी जी ने बच्चों से कहा — "अगर तुम लोग ठीक से रहोगे और अपनी बुनाई समय से खत्म कर लोगे तो मैं तुमको खाने के लिये पैनकेक[79] दूँगी।"

पर यह छोटी लड़की तो बुनना जानती नहीं थी सो उसने उस मास्टरनी से टौयलेट जाने की इजाज़त माँगी और वहाँ जा कर वह बैठ गयी और सो गयी।

जब वह अपनी कक्षा में वापस आयी तो दूसरी लड़कियों ने अपने अपने पैनकेक खा कर खत्म भी कर दिये थे। वह रोती रोती घर चली गयी और जा कर माँ को सब कुछ बताया कि उस दिन स्कूल में क्या हुआ था।

माँ बोली — "बेटी अच्छी बच्ची बन। मैं तेरे लिये बहुत सारे पैनकेक बना दूँगी।"

---

[77] Uncle Wolf. Tale No 49. A folktale from Italy from its Bologna area.

[78] Carnival time

[79] Pancakes are typically made of white flour solution like very thick, 1/2" thick South Indian Dosa, but in very small size – in about 6" diameter and is normally eaten in breakfast with syrup or butter etc. See their picture above.

पर उसकी मॉ इतनी गरीब थी कि उसके पास तो तवा भी नहीं था जो वह उसके लिये पैनकेक बना सकती। सो एक दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "जा चाचा भेड़िया के पास जाना और जा कर ज़रा उनसे तवा उधार मॉग ला तो मैं तेरे लिये पैनकेक बना दॅूगी।"

वह छोटी लड़की चाचा भेड़िया के घर चल दी और उसके घर पहॅुच कर उसने उसका दरवाजा खटखटाया।

"कौन है?"

"मैं हॅू।"

"कितने साल हो गये हैं इतने दिनों में किसी ने इस घर का दरवाजा नहीं खटखटाया। तुम्हें क्या चाहिये।"

"मॉ ने मुझे यहॉ इसलिये भेजा है कि अगर आप हमें पैनकेक बनाने के लिये अपना तवा उधार दे सकें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

"एक मिनट। ज़रा मैं अपनी कमीज पहन लॅू।"

"खट खट खट।"

"एक मिनट। ज़रा मैं अपना जॉघिया पहन लॅू।"

"खट खट खट।"

"एक मिनट। ज़रा मैं अपनी पैन्ट पहन लॅू।"

"खट खट खट"

"एक मिनट। ज़रा मैं अपना बड़ा वाला कोट पहन लॅू।"

यह सब करने के बाद चाचा भेड़िये ने दरवाजा खोला और उस लड़की को तवा दे कर बोला — "यह तवा मैं तुमको दे तो रहा हूँ पर अपनी माँ को बोलना कि वह यह तवा मुझे पैनकेक से भर कर वापस करेगी। और हाँ इसके साथ में एक गोल डबल रोटी और एक बोतल शराब भी।"

"हाँ, हाँ, मैं आपके लिये सब कुछ ले कर आऊँगी।" कह कर वह लड़की वह तवा ले कर चली गयी।

जब वह घर पहुँची तो उसकी माँ ने उसके लिये बहुत सारे पैनकेक बनाये और उसके चाचा के लिये भी।

रात होने से पहले उसने बच्ची से कहा — "ये पैनकेक, यह गोल डबल रोटी और यह शराब की बोतल तुम अपने चाचा भेड़िये के लिये ले जाओ।"

जब वह रास्ते में जा रही थी तो उसको पैनकेक की बहुत ज़ोर की खुशबू आ रही थी। उसने सोचा "ओह कितनी अच्छी खुशबू है। मैं उनमें से एक खा लूँ।"

सो उसने उनमें से एक पैनकेक खा लिया। पर फिर दूसरा, और फिर तीसरा और फिर चौथा.... और बहुत जल्दी ही वह सारे पैनकेक खा गयी और इस तरह वे सब पैनकेक खत्म हो गये।

अब उसके बाद नम्बर आया डबल रोटी का और फिर शराब का। वह भी सब खत्म हो गये। अब उस तवे को भरने के लिये उसने गधे का लीद उठा ली और वह शराब की बोतल गन्दे पानी से

भर ली। डबल रोटी की जगह उसने चूने का एक गोला रख लिया जो उसने वहीं रास्ते में से एक मकान बनाने वाले की जगह से उठा लिया था।

जब वह चाचा भेड़िया के घर पहुँची तो उसने यह सब गन्दी चीज़ें उसको दे दीं।

चाचा भेड़िया ने पैनकेक का एक कौर खाया तो उसको तुरन्त थूक कर बोला — "अरे यह तो गधे की लीद है।"

तुरन्त ही उसने अपना मुँह साफ करने के लिये शराब की बोतल खोली तो उसके स्वाद से भी उसका मुँह खराब हो गया।

फिर उसने डबल रोटी खायी तो चिल्लाया — "अरे यह तो चूना है।"

उसने बच्ची को घूर कर देखा और बोला — "तूने मुझे धोखा दिया? आज की रात मैं तुझे खा जाऊँगा।"

बच्ची दौड़ कर घर गयी और अपनी माँ से बोली — "माँ, आज की रात चाचा भेड़िया मुझे खाने आ रहे हैं।"

उसकी माँ बेचारी घर के सारे दरवाजे खिड़कियाँ बन्द करने लग गयी। फिर उसने घर के सारे छेद बन्द किये ताकि चाचा भेड़िया घर में न घुस सके। पर वह घर की चिमनी बन्द करना भूल गयी।

जब रात हो गयी और बच्ची सोने चली गयी तो घर के बाहर चाचा भेड़िये की आवाज सुनायी पड़ी — "मैं अब तुम्हें खाऊँगा। मैं यहीं बाहर हूँ। मैं आ रहा हूँ।"

और फिर उसके बाद छत पर पॉवों की आवाज सुनायी पड़ी — "मैं अब तुम्हें खाऊॅगा। मैं यहॉ छत पर हूॅ।"

और फिर चिमनी में से आवाज आयी — "मैं अब तुम्हें खाऊॅगा। मैं यहॉ चिमनी के ऊपर हूॅ।"

"मॉ मॉ, भेड़िया आ रहा है।"

मॉ बोली — "चादर के अन्दर छिप जा।"

"मैं अब तुम्हें खाऊॅगा। मैं अब चिमनी से नीचे आ गया हूॅ।"

वह बच्ची तो थर थर कॉपने लगी और डर के मारे बहुत छोटी सी सुकड़ कर अपने बिस्तर के एक तरफ को हो गयी।

"मैं अब तुम्हें खाऊॅगा। अब मैं यहीं कमरे में हूॅ।"

छोटी लड़की ने अपनी सॉस रोक ली।

"मैं अब तुम्हें खाऊॅगा। मैं अब तुम्हारे बिस्तर के पास हूॅ।" और यह कह कर वह उसको खा गया।

और इस तरह चाचा भेड़िया हर लालची लड़की को खा जाता है। लालच करना अच्छी बात नहीं है।
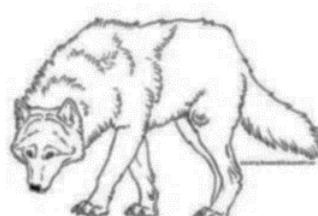
18 जानवरों का राजा[80]

एक बार एक आदमी था जिसकी पत्नी मर गयी थी। उसके एक बेटी थी जो बहुत सुन्दर थी पर कोई उस बेचारी की देखभाल करने वाला नहीं था सो उसने तय किया कि वह दूसरी शादी करेगा।

पर जब उसने दूसरी शादी की तो उसकी दूसरी पत्नी तो बहुत ही खराब थी और वह अपने पति की बेटी स्टैलीना[81] को बहुत ही बुरे ढंग से रखती थी।

एक दिन स्टैलीना ने अपने पिता से कहा — "पिता जी, यहाँ रहने और और हमेशा दुख सहते रहने की बजाय मैं गाँव में रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी। मैं गाँव जा रही हूँ।"

पिता बोला — "बेटी, थोड़ी देर धीरज रखो।"

पर एक दिन उसकी सौतेली माँ ने एक कटोरा तोड़ने पर उसको एक चाँटा मारा तो स्टैलीना से और सहन नहीं हुआ और वह घर छोड़ कर चली गयी।

वह पहाड़ों में चली गयी। वहाँ उसकी एक बुआ रहती थी। वह एक परी की तरह थी पर वह बहुत गरीब थी। वह स्टैलीना को देख कर बोली — "बेटी, मैं बहुत गरीब हूँ। मुझे तुझे भेड़ों को

[80] The King of the Animals. Tale No 52. A folktale from Italy from its Bologna area.
[81] Stellina – the name of the daughter

चराने के लिये भेजना पड़ेगा पर मैं तुझको एक बहुत ही कीमती चीज़ दे रही हूँ।"

कह कर उसने स्टैलीना को एक ॲगूठी दी और कहा — "बेटी, तू अगर कभी भी किसी भी परेशानी में हो तो इस अंगूठी को अपने हाथ में पकड़ लेना और अपनी परेशानी बोलना तो तू उस परेशानी से बाहर निकल आयेगी।"

एक सुबह जब स्टैलीना घास के मैदान में अपनी भेड़ें चरा रही थी तो उसने एक सुन्दर नौजवान को अपनी तरफ आते देखा। वह उसके पास आ कर बोला — "तुम भेड़ चराने के लिये बहुत ज़्यादा सुन्दर हो। चलो तुम मेरे साथ चलो मैं तुमसे शादी कर लूँगा और फिर तुम एक राजकुमारी की तरह रहोगी।"

यह सुन कर स्टैलीना का चेहरा लाल हो गया और वह तुरन्त ही उसको कोई जवाब नहीं दे पायी। पर बाद में उस नौजवान ने उसको अपने साथ जाने पर मना लिया।

वे लोग पास में खड़ी एक गाड़ी में चढ़े और वह गाड़ी बिजली की सी तेज़ी से वहाँ से चल दी। वे करीब करीब सारा दिन चलते रहे। शाम को वे एक बहुत ही सुन्दर महल के सामने आ कर रुक गये।

वह नौजवान बोला — "आओ, अन्दर आ जाओ।" कह कर वह उसको महल के अन्दर ले गया और महल दिखाता हुआ बोला — "आज से यह महल तुम्हारा है। तुमको जो चाहिये वह तुम माँग

लेना वह तुमको मिल जायेगा। अब मैं अपना काम देखने जाता हूँ। अब हम कल सुबह मिलेंगे।" यह कह कर वह चला गया।

आश्चर्य से भरी स्टैलीना के मुँह से कोई आवाज ही नहीं निकली। तभी उसको महसूस हुआ कि कोई उसको हाथ पकड़ कर कहीं ले जा रहा है पर वहाँ उसको दिखायी कोई नहीं दिया।

वह ले जाने वाला उसको एक बहुत ही बढ़िया सजे कमरे में ले गया जहाँ उसके पहनने के लिये कपड़े और गहने रखे थे। वहाँ उसके पुराने कपड़े उतारे गये और उसको नये कपड़े और गहने पहनाये गये और उसको एक कुलीन स्त्री की तरह सजाया गया।

फिर वे उसको एक और कमरे में ले गये जहाँ गरमागरम खाना उसका इन्तजार कर रहा था। वह वहाँ मेज पर बैठ गयी और खाना खाने लगी। उसकी प्लेटें बदलती जाती थीं और नया नया खाना आता जाता था पर वहाँ भी उसको उन प्लेटों को लाने वाला कोई दिखायी कोई नहीं दे रहा था।

जब वह खाना खा चुकी तो उसको महल दिखाने ले जाया गया। कुछ कमरे वहाँ पीले रंग में सजे थे और कुछ लाल रंग में। उनमें दीवान लगे थे, कुर्सियाँ थीं और बहुत सारी सुन्दर सुन्दर सजाने वाली चीज़ें रखी थीं।

महल के पीछे एक बहुत सुन्दर बागीचा था। उसमें बहुत सारे किस्म के जानवर थे – कुत्ता, बिल्ली, गधा, मुर्गी ही नहीं बल्कि वहाँ

बड़े बड़े मेंढक भी थे। स्टैलीना को वे सब आदमियों के एक समूह की तरह लगे जो एक साथ बातें कर रहे हों।

स्टैलीना तो यह सब देखती की देखती ही रह गयी। वह उन सबको तब तक देखती रही जब तक ॲधेरा नहीं हो गया। फिर वह सोने चली गयी।

उसको एक ऐसे कमरे में ले जाया गया जो राजकुमारियों के सोने के लायक सजा हुआ था। वहॉ एक बहुत ही बढ़िया पलंग पड़ा था।

वहॉ उसको किसी ने कपड़े बदलने में सहायता की। उसके लिये रात के सोने के कपड़े पहनने के साथ साथ एक लैम्प भी लाया गया और एक जोड़ी स्लिपर भी लाये गये।

वह बिस्तर पर लेट गयी और बस फिर सब कुछ शान्त हो गया। वह सो गयी और जब वह उठी तो सुबह हो गयी थी। उसने सोचा कि मैं घंटी बजाती हूँ और देखती हूँ कि कोई आता है कि नहीं।

पर जैसे ही उसने घंटी बजाने के लिये घंटी को छुआ तो एक चॉदी की ट्रे वहॉ आ गयी जिसमें कौफी और केक रखी हुई थी। उसने कौफी पी और उठ गयी। उसने कपड़े पहने तो किसी ने उसके बाल सॅवार दिये। इस तरह उसकी एक राजकुमारी की तरह सेवा हो रही थी।

बाद में वह नौजवान आया और उसने उससे पूछा — "क्या तुम ठीक से सोयीं? क्या तुम खुश हो?"

स्टैलीना बोली — "हॉ, मैं ठीक से सोयी।"

नौजवान ने स्टैलीना का हाथ पकड़ा और कुछ पल बाद कहा "गुड बाई" और चला गया।

यह उस नौजवान का रोज का तरीका था और स्टैलीना उसको दिन में एक बार बस इसी समय देखती थी।

दो महीने बाद वह ऐसे तरीके से तंग आ गयी। एक सुबह जब वह नौजवान चला गया तो स्टैलीना ने सोचा कि मैं आज थोड़ा बाहर घूम कर आती हूँ।

उसके मुँह से ये शब्द निकले भी नहीं थे कि किसी ने उसको एक टोपी, एक पंखा और एक छाता[82] ला कर दे दिया।

उसने सोचा "इसका मतलब है कि हर समय मेरे साथ कोई न कोई रहता है जो कुछ भी मैं कहूँ सुनता रहता है। एक बार मुझे तुम्हें देखने दो बस।" पर इसके जवाब में उसे कोई जवाब नहीं मिला और न ही उसे कोई दिखायी दिया।

उसी पल स्टैलीना ने अपनी बुआ की दी हुई अंगूठी को याद किया। अभी तक तो उसको उसने इस्तेमाल करने की सोचा ही नहीं था क्योंकि उसे उसको इस्तेमाल करने की जरूरत ही नहीं पड़ी थी।

[82] Translated for the word "Parasol". See its picture above.

वह वहाँ से वापस गयी और अपनी ड्रैसिंग टेबिल की ड्रौअर से वह अंगूठी निकाल लायी।

एक बार वह अंगूठी उसके हाथ में आ गयी तो उसने उस अँगूठी से कहा — "मैं देखना चाहती हूँ कि मेरी सेवा कौन कर रहा है?"

तुरन्त ही उसके सामने एक दासी आ कर खड़ी हो गयी। उसको देख कर तो स्टैलीना बहुत ही खुश हो गयी। उसके मुँह से निकला — "कम से कम अब मैं किसी के साथ बात तो कर सकती हूँ।"

दासी बोली — "धन्यवाद धन्यवाद। आपने मुझे आखिर दिखायी देने लायक बना ही दिया। मैं अब तक जादू के ज़ोर की वजह से किसी को दिखायी ही नहीं देती थी और न ही बोल सकती थी।"

वे दोनों आपस में बहुत अच्छी दोस्त हो गयीं और उन्होंने साथ साथ उस जगह के भेद का पता लगाने का निश्चय किया कि वहाँ क्या चल रहा था। वे बाहर चली गयीं और एक पगडंडी पर चलने लगीं।

वे काफी दूर तक उस पगडंडी पर चलती चली गयीं कि एक जगह वह पगडंडी दो खम्भों के बीच से गुजरती थी। उन दो खम्भों में से एक खम्भे पर लिखा था "पूछो" और दूसरे खम्भे पर लिखा था "और तुमको पता चल जायेगा"।

जिस खम्भे पर "पूछो" लिखा था उसके सामने खड़ी हो कर स्टैलीना बोली — "मुझे यह मालूम करना है कि मैं कहाँ हूँ।"

इस पर दूसरा खम्भा जिस पर लिखा था "और तुमको पता चल जायेगा" बोला — "तुम एक ऐसी जगह हो जहाँ तुम ठीक रहोगी लेकिन ..."

स्टैलीना ने पहले वाले खम्भे से पूछा — "लेकिन क्या?"

पर दूसरे वाले खम्भे ने इसका कोई जवाब नहीं दिया।

दोनों दोस्तों ने सोचा कि यह "लेकिन" तो ठीक नहीं है और वे कुछ चिन्ता करती हुई आगे बढ़ गयीं। चलते चलते वे बागीचे के आखीर तक पहुँच गयीं। आखीर में बागीचे के चारों तरफ चहारदीवारी लगी थी। उस चहारदीवारी के दूसरी तरफ जमीन पर एक नाइट[83] बैठा था।

जब उसने इन दोनों को आते देखा तो उठ कर खड़ा हो गया और उन दोनों से पूछा — "तुम लोग यहाँ कैसे आयीं? सावधान रहना तुम लोग एक बहुत बड़े खतरे में हो। तुम लोग जानवरों के राजा के कब्जे में हो। वह हर किसी को जिस किसी को भी पकड़ लेता है यहाँ ले आता है और एक एक कर के मार देता है।"

यह सुन कर स्टैलीना तो बहुत डर गयी तुरन्त बोली — "तो हम यहाँ से कैसे बच सकते हैं?"

[83] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

वह नाइट बोला — "मैं तुमको यहाँ से बाहर ले जा सकता हूँ। मैं भारत के राजा का बेटा हूँ और दुनियाँ घूम कर अपना समय गुजार रहा हूँ।

जैसे ही मैंने तुम्हें देखा तो मुझे तुमसे प्यार हो गया इसी लिये मैं यहाँ आ कर बैठ गया कि कभी तो तुम इधर आओगी। मैं तुमको अपने पिता के पास ले चलूँगा। वह तुम्हारा और तुम्हारी दासी दोनों का ठीक से स्वागत करेंगे।"

स्टैलीना बोली — "ठीक है। मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।"

दासी बोली — "पर अगर यह महल खजाने से भरा है तो इसको इस तरह से छोड़ कर जाना तो बेवकूफी है। जब वह जानवरों का राजा घर में न हो तब हमको यह खजाना अपने हाथों में ले लेना चाहिये और उसके बाद ही यहाँ से भागना चाहिये। कल हम लोग यहीं मिलेंगे और फिर यहाँ से भाग चलेंगे।"

स्टैलीना बोली — "हाँ यह ठीक है। मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ।"

राजकुमार ने पूछा — "और मैं यहाँ खुले में रात कैसे गुजारूँगा यहाँ तो कोई झोंपड़ी भी नहीं है।"

स्टैलीना बोली — "मैं देखती हूँ।" उसने अपने छोटे से बटुए में से वह जादू की अँगूठी निकाली, मुट्ठी में दबायी और बोली — "मुझे यहाँ पर एक बड़ा सा एक मकान चाहिये, तुरन्त। नौकरों, गाड़ियों, खाने पीने और सोने की सुविधाओं के साथ।"

बस उसका यह कहना था कि उसके सामने वाले घास के मैदान में एक बड़ा सा मकान खड़ा हो गया। मकान बहुत सुन्दर था। राजकुमार ने दोनों लड़कियों को गुड बाई कहा और उस घर में चला गया।

स्टेलीना और उसकी दासी दोनों महल में लौट आयीं। खजाना ढूँढने के लिये उन्होंने उस सारे महल को ऊपर से ले कर नीचे तक छान मारा। फिर उनको तहखाने में जा कर एक कमरा मिला जिसमें बहुत सारे बक्से रखे थे।

स्टैलीना बोली — "यह क्या है। यह तो तहखाने की बजाय एक भंडारघर ज़्यादा लग रहा है। देखते है कि इन बक्सों में क्या है।" उन्होंने उन बक्सों के ढक्कन खोल कर देखा तो उन सबमें तो सोना चॉदी हीरे जवाहरात पैसा आदि बहुतायत से भरा पड़ा था।

स्टैलीना ने उस अंगूठी को अपनी मुट्ठी में फिर से दबाया और कहा — "ये सब बक्से भारत के राजकुमार के मकान में पहुॅचा दो।"

उसके यह कहते ही वह सारा तहखाना खाली हो गया। सारे बक्से वहॉ से हट कर भारत के राजकुमार के मकान में पहुॅच चुके थे।

स्टैलीना और उसकी दासी फिर से उस महल में घूमने लगे कि उनको ऊपर जाती हुई एक छिपी हुई सीढ़ी मिली। वे उससे ऊपर चढ़े तो एक ॲधेरी जगह में आ गये।

वहाँ एक आवाज बार बार कह रही थी — "ओह मैं क्या करूँ? ओह मैं क्या करूँ?"

स्टैलीना उस आवाज को सुन कर काँप गयी उसने फिर से अपनी अंगूठी को याद करते हुए उसी आवाज की दिशा में अपने कदम बढ़ाये जहाँ से वह आवाज आ रही थी।

अबकी बार वे एक बड़े कमरे में आ गये। वहाँ एक बड़ी मेज पर बहुत सारे सिर, हाथ, पैर आदि पड़े हुए थे और शरीर के दूसरे हिस्से कुर्सियों और दीवारों पर लगे हुए थे।

वे सिर बोल रहे थे "ओह मैं क्या करूँ? ओह मैं क्या करूँ?"

ये सब देख कर दोनों लड़कियाँ बहुत डर गयीं। उनको लगा कि यह जानवरों के राजा का छिपा हुआ घर था।

फिर वहाँ उन्होंने वहाँ भूसे, मक्का, ओट्स[84] आदि से भरा एक भंडारघर देखा तो उन्होंने सोचा कि यह शायद उन जानवरों के खाने के लिये होगा जो उन्होंने बागीचे में देखे थे।

उनको लगा कि शायद वे सब वे ही जानवर होंगे जिनको जानवरों के राजा ने जानवर बना कर रख लिया होगा। यकीनन वह इन जानवरों को भी खा जायेगा।

[84] Oats is a kind of grain. See its picture above.

उस रात स्टैलीना को रात भर नींद नहीं आयी। सुबह सवेरे हमेशा की तरह जानवरों का राजा उससे मिलने आया तो उसने रोज की तरह उससे पूछा — "क्या तुम ठीक से सोयीं?"

स्टैलीना ने आज भी उसको वैसी ही नम्रता से जवाब दिया जैसे वह उसको रोज देती थी — "हॉ, बहुत अच्छे से सोयी।"।

वह भी रोज की तरह से बोला — "ठीक है स्टैलीना, गुड बाई, खुश रहो। मैं कल सुबह तुमसे फिर मिलता हूँ।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

उसके जाने के बाद स्टैलीना और उसकी दासी दोनों ऊपर के भंडारघर में गयीं। वहॉ उन्होंने उस भंडारघर की खिड़की खोली और भूसा, मक्का, ओट्स सभी कुछ जो कुछ वहॉ था उस खिड़की से बाहर बागीचे में फेंक दिया जहॉ जानवर घूम रहे थे ताकि वे खाने में लगे रहें और उनके उस महल को छोड़ने के बारे में अपने मालिक को बताने न जा सकें।

जब वे जानवर खा रहे थे तो स्टैलीना और उसकी दासी दोनों ने अपना कुछ सामान लिया और बागीचे की तरफ चल दीं।

जब वे उन दोनों खम्भों के पास आयीं जिन पर लिखा हुआ था "पूछो" और "और तुमको पता चल जायेगा" तो स्टैलीना ने अपनी अंगूठी अपनी मुट्ठी में दबायी और बोली — "मैं तुम्हें हुक्म देती हूँ कि तुम मुझे यह बतलाओ कि तुम्हारे उस दिन के "लेकिन" का क्या मतलब था।"

खम्भा बोला — "उस लेकिन का मतलब यह था कि तुम यहाँ से तब तक नहीं भाग सकतीं जब तक कि उस जानवरों के राजा को तुम मार न दो।"

स्टैलीना बोली — "लेकिन यह मैं कैसे करूँ?"

खम्भा फिर बोला — "तुम राजा के कमरे में जाओ। वहाँ उसकी एक आराम कुर्सी रखी है। उसकी गद्दी के नीचे एक अखरोट रखा है। तुम उस अखरोट को निकाल लो। तुम्हारे उस अखरोट को वहाँ से निकालते ही वह राजा मर जायेगा।" और यह कहते ही वह खम्भा टूट कर गिर पड़ा।

स्टैलीना तुरन्त वापस महल में गयी और राजा की आराम कुर्सी पर रखी गद्दी के नीचे रखा अखरोट निकाला। जैसे ही उसने वह अखरोट निकाला जानवरों का राजा चिल्लाता हुआ महल की तरफ भागा — "स्टैलीना, तुमने मुझे धोखा दिया। स्टैलीना, तुमने मुझे धोखा दिया।" और वह मर कर नीचे गिर पड़ा।

जैसे ही वह मर कर नीचे गिरा सारे जानवर आदमियों और औरतों में बदल गये। उन सबके ऊपर डाला हुआ जादू टूट चुका था।

वे सब राजा, रानी और राजकुमार थे और उस जानवरों के राजा का डाला हुआ जादू टूटते ही राजा रानी और राजकुमार बन गये थे। उन्होंने सबने स्टैलीना को धन्यवाद दिया।

वे सब उसको अपना राज्य देना चाहते थे और उससे शादी भी करना चाहते थे पर वह बोली — “मुझे अफसोस है कि मैंने अपना दुलहा पहले से ही चुन रखा है और वह मेरा इन्तजार कर रहा है।”

कह कर स्टैलीना और उसकी दासी दोनों उस महल से बाहर निकल गयीं। उनके बाहर निकलते ही सारा महल जल कर खाक हो गया।

राजा, रानी राजकुमार आदि सब अपने अपने घर चले गये। स्टैलीना और उसकी दासी भारत चले गये। वहाँ जा कर स्टैलीना ने भारत के राजकुमार से शादी कर ली और फिर वह सारी ज़िन्दगी खुशी खुशी रही।

19 नमक की तरह प्यारा[85]

एक बार एक राजा था जिसके तीन बेटियाँ थीं। एक कत्थई बालों वाली, एक लाल बालों वाली और एक सफेद बालों वाली[86]।

उसकी पहली बेटी बहुत घरेलू किस्म की थी, दूसरी ठीक थी और तीसरी का दिल बहुत अच्छा था और वह उन सबमें सुन्दर भी थी। सो दोनों बड़ी बेटियाँ अपनी सबसे छोटी बहिन से बहुत जलती थीं।

राजा के पास तीन राज गद्दियाँ थीं – एक सफेद, एक लाल और एक काली। जब वह खुश होता था तो वह सफेद राज गद्दी पर बैठता था। जब वह ठीक सा होता था तो वह अपनी लाल राज गद्दी पर बैठता था और जब गुस्सा होता था तो काली राज गद्दी पर बैठता था।

एक दिन वह अपनी काली राज गद्दी पर बैठा हुआ था क्योंकि वह अपनी दोनों बड़ी बेटियों से नाराज था सो वे उसके पास उसको मनाने के लिये गयीं।

---

[85] Dear as Salt. Tale No 54. A folktale from Italy from its Bologna area.
[My Note: The King has three daughters, three thrones, and tastes the food only three times at the wedding feast of his daughter… in this story]

[86] Translated for the word "Blond or blonde". Blond means who have some off white or fair color hair.

बड़ी वाली बेटी ने पूछा — "पिता जी, क्या आपको रात को नींद ठीक से आयी? आज आप काली राज गद्दी पर बैठे हैं इससे यह पता चलता है कि आप मुझसे गुस्सा हैं। है न?"

"यकीनन मैं तुमसे बहुत गुस्सा हूँ।"

"पर क्यों पिता जी?"

"क्योंकि तुम मुझको बिल्कुल प्यार नहीं करतीं।"

"पर पिता जी मैं तो आपको बहुत प्यार करती हूँ। आप मुझे बहुत प्यारे हैं।

"अच्छा तो फिर बताओ मैं तुम्हें कितना प्यारा हूँ?"

"इतने प्यारे हैं जितनी कि किसी आदमी को रोटी प्यारी होती है।"

राजा ने मुस्कुरा कर बस हामी भरी पर पर कहा कुछ नहीं। वह लड़की के जवाब से बहुत खुश था।

उसके बाद उसकी बीच वाली बेटी आयी और उसने भी जब अपने पिता को काले रंग की राज गद्दी पर बैठे देखा तो उससे पूछा — "पिता जी, क्या आप कल रात ठीक से सोये? आज आप अपनी काले रंग की राज गद्दी पर क्यों बैठे हैं? आप मुझसे नाराज तो नहीं हैं न?"

"यकीनन मैं तुम्हीं से नाराज हूँ।"

"पर क्यों पिता जी? मैंने ऐसा क्या किया?"

“क्योंकि तुम मुझको बिल्कुल प्यार नहीं करतीं।”

“पर पिता जी मैं तो आपको बहुत प्यार करती हूँ। आप मुझे बहुत बहुत बहुत प्यारे हैं।”

“अच्छा बताओ तो कितना प्यारा हूँ मैं तुमको?”

“जितनी प्यारी शराब होती है पिता जी, उतने प्यारे।”

राजा फिर कुछ बुड़बुड़ाया पर वह अपनी उस बीच वाली बेटी के जवाब से भी बहुत खुश था।

कुछ ही देर में हँसती खेलती उसकी छोटी बेटी आ गयी। वह भी अपने पिता को काले रंग की राज गद्दी पर बैठे देख कर पिता से बोली — “पिता जी, कल रात आप ठीक से तो सोये न? आज आप इस काले रंग की राज गद्दी पर क्यों बैठे हैं? क्या आप मुझसे नाराज हैं?”

“हाँ बिल्कुल, मैं तुमसे बहुत नाराज हूँ क्योंकि तुम मुझसे बिल्कुल प्यार नहीं करतीं।”

“पर पिता जी मैं तो आपको बहुत बहुत बहुत प्यार करती हूँ।”

“अच्छा बताओ कितना बहुत प्यार करती हो मुझको?”

“इतना प्यार पिता जी जितना कि कोई नमक को करता है।”

यह सुन कर राजा कुछ गुस्सा सा हो गया। वह बोला — “क्या कहा नमक जितना? नमक? ओ नीच हट जा मेरी आँखों के सामने

से। मैं तेरी शक्ल भी नहीं देखना चाहता।" और उसने अपनी उस बेटी को जंगल ले जा कर मार डालने का हुक्म दे दिया।

जब उसकी माँ ने, यानी रानी माँ ने जो अपनी उस बेटी को बहुत प्यार करती थी, अपनी इस बेटी के लिये राजा का यह हुक्म सुना तो उसने उसको बचाने के लिये कोई तरकीब सोचनी शुरू कर दी।

राज महल में एक मोमबत्ती थी जो इतनी बड़ी थी जितनी कि उसकी वह बेटी ज़िज़ोला[87]। सो उसने ज़िज़ोला को उसके नीचे वाले हिस्से में घुस जाने के लिये कहा और इस तरह उसको उस मोमबत्ती में छिपा लिया।

फिर उसने अपने एक बहुत ही भरोसे वाले नौकर को बुलाया और उससे उस मोमबत्ती को बेचने के लिये कहा।

उसने अपने उस नौकर से यह भी कहा कि अगर कोई उसके दाम पूछे कि वह मोमबत्ती कितने की है तो अगर वह कोई गरीब हो तो उसको कहना कि उसका दाम है "खुशकिस्मती"।

और अगर वह कोई अमीर या ठीक से खाते पीते घर का हो तो उससे कहना कि वह उसे एक गीत के बदले में ले सकता है। पर ध्यान रखना कि यह मोमबत्ती उसको मिल जाये।"

---

[87] Zizola – name of the youngest daughter

रानी ने अपनी बेटी को अलग होने पर जो सलाह दी जाती हैं वे सब सलाह उसको दी, एक डिब्बा भर कर अंजीर, चौकलेट और बिस्किट दिये। फिर उसको चूमा और विदा कहा।

नौकर वह मोमबत्ती ले कर वहॉ से शहर के चौराहे पर चला गया और उसको बेचने के लिये खड़ा हो गया।

उस मोमबत्ती की कीमत पूछने बहुत लोग आये। जो लोग उसकी कीमत जानना चाहते थे पर जो लोग उसको देखने में अच्छे नहीं लगे उनको उसने उस मोमबत्ती की बहुत बड़ी कीमत बता दी और इस तरह से वे चले गये।

आखीर में हाइटौवर[88] के राजा का लड़का उधर आ निकला। उसने उस मोमबत्ती को देखा तो उस नौकर से उसकी कीमत पूछी तो नौकर ने उसको उसकी कुछ ज़्यादा ही कम कीमत बतायी।

राजकुमार ने वह मोमबत्ती खरीद ली और उसको अपने महल में ले गया। वहॉ उसने वह अपने खाने के कमरे में रख दी। अब जो भी उस कमरे में खाना खाने आता वह उस मोमबत्ती को देखता तो उसकी तारीफ करता।

शाम को राजकुमार अक्सर ही कुछ लोगों से मिलता जुलता रहता था सो घर आने में उसको देर हो जाती थी। और क्योंकि घर पर उसका इन्तजार करने वाला कोई था नहीं तो नौकर ही उसका

[88] The son of Hightower

रात का खाना मेज पर लगाया करते थे और लगा कर सोने चले जाते थे।

उस दिन भी ऐसा ही हुआ। राजकुमार लोगों से मिलने चला गया और नौकर लोग उसका रात का खाना मेज पर लगा कर अपने अपने घर चले गये।

जब ज़िज़ोला ने देखा कि उस कमरे में कोई नहीं है तो वह मोमबत्ती में से बाहर निकल कर आयी और जो कुछ भी मेज पर रखा था वह सब खा गयी और फिर उस मोमबत्ती में जा कर छिप गयी।

राजकुमार घर आया तो उसको खाने के लिये खाने की मेज पर कुछ भी नहीं मिला। उसने घर की सारी घंटियाँ बजायीं तो उसके सारे नौकर दौड़े आये।

उसने सारे नौकरों को गालियाँ दीं पर उन्होंने कसम खा कर कहा कि उन्होंने उसका रात का खाना वहाँ रखा था पर लगता है कि कोई बिल्ली या कुत्ता उसे खा गया।

राजकुमार ने गुस्से में कहा — "अगर ऐसा फिर से हुआ तो मैं तुम सबको बाहर निकाल दूँगा।" फिर उसने दूसरा खाना मँगवाया, खाया और खा कर सोने चला गया।

अगली शाम हालाँकि सब कुछ बन्द था पर फिर भी वैसा ही हुआ।

एक बार को तो सबको ऐसा लगा जैसे राजकुमार चिल्ला चिल्ला कर सारा घर सिर पर उठा लेगा पर ऐसा नहीं हुआ। अबकी बार वह बोला — "ठीक है कल शाम को फिर देखते हैं कि क्या होता है।"

जब अगली रात आयी तब बच्चों तुम क्या सोचते हो कि उसने क्या किया होगा?

वह खाने की मेज के नीचे छिप गया। मेज के ऊपर एक ऐसा मेजपोश पड़ा हुआ था जो जमीन को छू रहा था सो उसको कोई नहीं देख सकता था।

नौकर आये, उन्होंने मेज पर खाना लगाया, फिर कुत्ते और बिल्ली को बाहर निकाला और दरवाजा बन्द कर के बाहर चले गये।

जैसे ही सब बाहर चले गये, मोमबत्ती खुली और उसमें से ज़िज़ोला बाहर निकली। वह मेज की तरफ गयी और उसने पेट भर कर खाना खाया

खा पी कर वह फिर से अपनी मोमबत्ती में घुसने के लिये चली कि तभी मेज के नीचे से राजकुमार निकल आया और उसने उसका हाथ पकड़ लिया। ज़िज़ोला ने उसकी पकड़ से छूटना चाहा पर उसने भी उसका हाथ कस कर पकड़ रखा था।

सो ज़िज़ोला नीचे बैठ गयी और उसको शुरू से आखीर तक अपनी सारी कहानी कह सुनायी। राजकुमार तो उसको देखते ही प्यार करने लगा था।

उसने उसको तसल्ली दी और कहा — "तुम यह समझ लो कि तुम ही मेरी दुलहिन बनोगी पर अभी तुम अपनी इस मोमबत्ती में ही वापस चली जाओ।"

कह कर राजकुमार भी सोने चला गया पर वह रात भर अपनी ऑखें ही बन्द नहीं कर सका। वह ज़िज़ोला के बारे में ही सोचता रहा।

सुबह को उसने उस मोमबत्ती को अपने कमरे में मॅगवा लिया। वह मोमबत्ती इतनी सुन्दर थी कि वह रात को भी उसको अपने पास ही रखना चाहता था।

दूसरा काम उसने यह किया कि अब उसने अपना खाना अपने कमरे में ही मॅगवाना शुरू कर दिया – दो आदमियों का खाना, क्योंकि वह बहुत भूखा था।

अगले दिन वे उसके लिये कौफी ले कर आये, फिर गर्म नाश्ता ले कर आये, फिर दोपहर का खाना और फिर शाम का खाना – मगर सब दोहरा दोहरा।

जैसे ही वे नौकर खाना रख कर चले जाते वह कमरे का दरवाजा बन्द कर लेता, ज़िज़ोला को बुलाता और फिर दोनों आपस में नाश्ता खाते, खाना खाते और खूब बातें करते।

रानी जिसको कि अपना खाना इन दिनों खाने वाले कमरे में अकेले ही खाना ही पड़ रहा था अब बहुत दुखी रहती थी – "मेरे बेटे को मेरी तरफ से ऐसी क्या नाराजगी है कि वह अब मेरे साथ खाना भी नहीं खाता? मैंने उसके साथ क्या बुरा किया है?"[89]

बार बार राजकुमार ने उसको थोड़ा धीरज रखने के लिये कहा और कहा कि उसको अपने लिये थोड़ा समय चाहिये। फिर एक दिन उसने अपनी माँ को बताया – "माँ मैं शादी कर रहा हूँ।"

रानी खुश हो कर बोली "और वह दुलहिन कौन है?"

राजकुमार ने बताया कि वह एक मोमबत्ती से शादी करेगा।

रानी अपनी आँखों पर हाथ रख कर बोली – "हे भगवान लगता है कि मेरे बेटे का दिमाग खराब हो गया है।" पर राजकुमार तो यही चाहता था।

राजकुमार की माँ ने उसको याद दिलाया कि वह इस बात की उसको कम से कम वजह तो बताये क्योंकि लोग सवाल पूछेंगे पर राजकुमार तो अपनी जिद से टस से मस ही नहीं हुआ। उसने शादी के सारे इन्तजाम एक हफ्ते में कर लिये।

शादी वाले दिन बहुत सारी गाड़ियाँ महल से चलीं। पहली गाड़ी में राजकुमार खुद था और उसके साथ रखी थी उसकी मोमबत्ती। वे

---

[89] Here there is some discrepancy. Before it is said that "there was nobody who waited for the king at home to eat dinner with him that is why the servants put his food on his dining table and went away; and here they say that his mother was there and waited for him to eat food with him.

सब चर्च पहुँच गये और लोग उस मोमबत्ती को चर्च के अन्दर ले गये।

सही समय पर मोमबत्ती खुली और उसमें से ज़िज़ोला ब्रोकेड की पोशाक पहने निकली। गले और कानों में उसने बहुत सारे रत्न पहन रखे थे जो बहुत चमक रहे थे।

शादी के बाद वे महल लौट आये और वहाँ रानी ने उसकी सारी कहानी सुनी। रानी बहुत होशियार थी वह ज़िज़ोला से बोली — "तुम सब मेरे ऊपर छोड़ दो। मैं तुम्हारे उस पिता को अच्छा सबक सिखाऊँगी।"

जब उनकी शादी की दावत हुई तो रानी ने पास के सारे राजाओं को उस दावत में बुलाया। उन राजाओं में ज़िज़ोला के पिता भी शामिल थे।

उनके लिये रानी ने खास खाना बनवाया था। उनके खाने में नमक बिल्कुल भी नहीं था। सब मेहमानों को कह दिया गया कि दुलहिन की तबियत ठीक नहीं थी इसलिये वह दावत में शामिल नहीं हो सकती थी।

सो सब लोगों ने खाना शुरू कर दिया पर दुलहिन का पिता राजा जिसको बिना नमक का बेस्वाद सूप मिला था अपने आप ही कुछ बड़बड़ाने लगा — "रसोइया लगता है सूप में नमक डालना भूल गया दिखता है।" पर वह क्या करता उसने वह सूप छोड़ दिया।

बाकी खाना जो आया वह भी सब बिना नमक का था। राजा ने अपना कॉटा नीचे रख दिया।

“राजा साहब, आप खाना नहीं खा रहे, क्या बात है? खाना अच्छा नहीं लग रहा है?”

“नहीं नहीं, बहुत स्वाद है।”

“फिर आप खा क्यों नहीं रहे?”

“अचानक ही मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है।” उसने फिर एक कॉटा भर कर मॉस अपने मुँह में रखा और उसे कितना भी चबा कर खाना चाहा पर वह उसके गले से नीचे ही नहीं उतरा।

तब उसको याद आयी अपनी सबसे छोटी बेटी की कि एक दिन उसने उससे कहा था कि वह उसको नमक की तरह प्यार करती थी।

उसको उसकी यही बात सोच कर रोना आ गया और वह रो पड़ा — “ओह, मैंने कितना गलत किया था।”

रानी जानना चाहती थी कि क्या मामला था जो राजा खाना नहीं खा रहा था और रो रहा था। तब राजा ने उसे अपनी सबसे छोटी बेटी ज़िज़ोला के बारे में सब कुछ बता दिया।

इस पर रानी उठी और उसने अन्दर से ज़िज़ोला को बुलवाया। ज़िज़ोला को देख कर राजा बहुत खुश हुआ। उसने उसको गले से लगा लिया और और ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा।

उसने उससे पूछा कि वह वहाँ क्या कर रही थी जैसे कि वह मरी से जी गयी हो। तब उसने पिता को अपना सारा हाल बताया।

फिर उन लोगों ने उसकी माँ को भी वहीं बुलवा लिया और फिर वहाँ नये तरीके से खुशियाँ मनायीं जाने लगीं।

20 सोने के तीन पहाड़ों की रानी[90]

एक बार एक बहुत ही गरीब आदमी था जिसके तीन बेटे थे। यह आदमी बहुत बीमार था और बहुत दर्द में था।

एक दिन उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और बोला — “मेरे बेटों, तुम खुद देख रहे हो कि मैं बहुत बीमार हूँ और मरने वाला हूँ। मुझे बहुत अफसोस है कि मेरे पास तुम लोगों को देने के लिये कुछ भी नहीं है।

मैं बस तुम लोगों से इतना कहना चाहता हूँ कि तुम लोग अच्छे इन्सान बन कर रहना और ऐसे ही काम करना जैसे मैं करता रहा हूँ। भगवान तुम्हारी सहायता जरूर करेंगे।” और इतना कह कर वह आदमी मर गया।

सबसे बड़े लड़के ने कहा — “चलो बाहर चल कर कहीं काम ढूँढते हैं जैसा कि पिता जी ने कहा है।” सो वे तीनों दुनियाँ में अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये बाहर निकल गये।

चलते चलते जब रात हुई तो उन्होंने देखा कि वे एक बहुत सुन्दर महल के पास खड़े हैं। सो रात को सोने के लिये उन्होंने उस महल का दरवाजा खटखटाया।

उन्होंने आवाज भी लगायी और चारों तरफ देखा भी पर वहाँ उनको कोई दिखायी नहीं दिया। सो वे अन्दर चले गये। उन्होंने

[90] The Queen of the Three Mountains of Gold. Tale No 55. A folktale from Italy from its Bologna area.

अन्दर जा कर देखा तो अन्दर एक मेज पर बहुत अच्छे अच्छे खाने सजे हुए थे।

उन खानों को देख कर वे भौंचक्के रह गये पर फिर सबसे बड़ा बेटा बोला — "क्योंकि घर में कोई भी नहीं है तो चलो बैठ कर खाना खाते हैं। अगर कोई आयेगा भी है तो हम उससे इजाज़त माँग लेंगे।"

सो वे तीनों खाना खाने बैठ गये। उन्होंने पेट भर खाना खाया और मन भर कर पिया। खा पी कर वे महल देखने के लिये निकले।

घूमते घूमते वे एक कमरे में आये जिसमें एक पलंग बिछा हुआ था और उसके ऊपर फूलों की माला पड़ी हुई थी। फिर वे एक दूसरे कमरे में आये। उसमें भी एक पलंग था और उसके ऊपर सोने की पत्तियों का सिरहाना लगा हुआ था।

लड़कों ने आपस में कहा — "ऐसा लगता है कि ये पलंग हमारे लिये ही लगे हैं सो इन पर सोया जाये।" उन्होंने अपने अपने सोने के लिये एक एक कमरा चुन लिया।

सबसे बड़े लड़के ने कहा — "ध्यान रखना कि तुम लोग यहाँ से जाने के लिये सुबह सवेरे जल्दी ही उठ जाना। मैं यहाँ से जाने के लिये किसी का इन्तजार नहीं करूँगा।"

सुबह को सबसे बड़ा लड़का काफी जल्दी उठ गया और किसी से बिना कुछ कहे ही वहॉ से चला गया। हालॉकि यह उसके लिये कुछ अजीब सी बात थी क्योंकि वह ऐसा कभी करता नहीं था।

जब बीच वाला लड़का उठा तो वह अपने बड़े भाई के कमरे में उसको देखने के लिये गया। वहॉ जा कर उसने देखा तो वह तो वहॉ था नहीं। वह वहॉ से चला गया था सो वह भी तैयार हुआ और वह भी घर छोड़ कर चला गया।

सबसे छोटा भाई काफी देर तक सोता रहा। जब वह उठा तो उसने देखा कि उसके दोनों भाई तो पहले ही जा चुके हैं।

फिर उसने देखा कि मेज पर नाश्ता लगा हुआ है सो उसने नाश्ता किया और बाहर देखने के लिये खिड़की पर जा खड़ा हुआ। उसके सामने बहुत सुन्दर बागीचा था। उसको लगा कि उसे उस बागीचे को जा कर देखना चाहिये।

सबसे छोटा भाई जिसका नाम सैन्ड्रीनो[91] था एक बहुत ही सुन्दर नौजवान था। जब वह बागीचे में घूम रहा था तो उस रास्ते के आखीर में जिस पर वह चल रहा था उसको एक बड़ा सा तालाब दिखायी दे गया।

उस तालाब में पानी की सतह के ऊपर गर्दन तक एक सुन्दर लड़की का सिर निकला हुआ था जो बिल्कुल भी नहीं हिल रहा था।

[91] Sandrino – the name of the third and the youngest brother

सैन्ड्रीनो आश्चर्य से बोला — "मैम, आप यहाँ क्या कर रही हैं?"

लड़की ने जवाब दिया — "तुम तो भगवान के भेजे हुए नौजवान लग रहे हो। मैं सोने के तीन पहाड़ों की रानी हूँ।

मेरे ऊपर जादू डाल दिया गया था कि मैं तब तक यहीं इसी पानी में रहूँ जब तक कि मैं किसी ऐसे आदमी से न मिलूँ जो कि इतनी हिम्मतवाला हो जो इस महल में तीन रात लगातार सो सके।"

सैन्ड्रीनो ने जवाब दिया — "अगर तुम्हारा जादू तोड़ने के लिये यही कुछ करना है तो मैं खुद यहाँ लगातार तीन दिन तक सोऊँगा। तुम बिल्कुल चिन्ता न करो।"

लड़की बोली — "जो भी यहाँ लगातार तीन दिनों तक सोयेगा मैं उस आदमी से शादी कर लूँगी। जब तुम यहाँ सोओगे तो तुमको अगर कुछ सुनायी दे या जंगली जानवर अपने कमरे में आते दिखायी दें तो तुम डरना नहीं।

अगर तुम जहाँ होगे वहीं रहोगे तो वे तुमको छुऐंगे भी नहीं और तुम्हारे पास से चले जायेंगे।"

"तुम चिन्ता न करो मैं बिल्कुल नहीं डरूँगा और मैं वैसा ही करूँगा जैसा तुमने कहा है।"

रात को सैन्ड्रीनो सोने के लिये चला गया। जैसे ही रात के बारह बजे उसे कुछ आवाजें सुनायी दीं तो उसको लगा कि वह तो जंगली जानवरों के चिल्लाने की आवाजें थीं।[92]

सैन्ड्रीनो ने सोचा कि अब वह देखेगा कि वहाँ क्या होता है।

इतने में उसके कमरे में भेड़िये, भालू, चीलें, साँप और अनगिनत दूसरे किस्म के जंगली और बहुत भयानक जानवर आ कर उसके पलंग के चारों तरफ इकट्ठा हो गये। पर सैन्ड्रीनो बिल्कुल भी नहीं डरा।

कुछ पल में ही वे सब जानवर वहाँ से बाहर चले गये, और बस उनके जाने के बाद सब कुछ शान्त हो गया। सुबह होने पर वह लड़का तालाब पर वापस आया।

उसने देखा कि रानी अब पानी से कमर तक बाहर निकल आयी है। वह बहुत खुश थी और उसकी बहुत तारीफ कर रही थी।

अगली रात को सैन्ड्रीनो के कमरे में और ज़्यादा जानवरों का संगीत गूँज उठा पर उस रात भी सैन्ड्रीनो डरा नहीं और चुपचाप वहीं लेटा रहा।

अगली सुबह जब वह तालाब पर आया तो रानी केवल आधी टाँगों तक ही पानी में थी। उस दिन तो रानी ने उसकी तारीफ में

---

[92] [My Note : It is very strange that when these princes slept the previous night those animals did not appear there, and they appeared only just after talking to the princess.]

आसमान तक पुल बाँध दिये। सैन्ड्रीनो मुस्कुराता हुआ नाश्ते के लिये चला गया।

आज उसके वहाँ सोने की आखिरी रात थी। उस रात जानवर बहुत ज़ोर से चिल्लाये और उसके पलंग के बहुत पास भी आ गये। पर उस दिन भी सैन्ड्रीनो डरा नहीं और वे उसे ऐसा का ऐसा ही छोड़ कर चले गये।

अगले दिन सुबह जब वह तालाब पर गया तो रानी के केवल पैर ही पानी में थे। उसने रानी का हाथ पकड़ा और उसको तालाब से बाहर निकाल लिया।

रानी की दासियाँ भी वहाँ आ गयीं और फिर सब लोग नाश्ते के लिये चले गये। तीन दिन के बाद की उनकी शादी की तारीख भी पक्की हो गयी।

शादी के दिन सुबह रानी ने सैन्ड्रीनो से कहा — "शादी से पहले मैं तुमको एक बहुत ही जरूरी बात बता देना चाहती हूँ। जब तुम चर्च में प्रार्थना वाली बैन्च पर अपने घुटने टेकोगे तब तुम सो नहीं जाना क्योंकि अगर तुम सो गये तो मैं वहाँ से भाग जाऊँगी और फिर तुमको मैं कहीं दिखायी नहीं दूँगी।"

सैन्ड्रीनो हँस कर बोला — "अरे बस यही बताना था? मैं वहाँ उस जगह सो भी कैसे सकता हूँ?"

उसके बाद वे दोनों चर्च चले गये। जैसे ही वह वहाँ प्रार्थना वाली बैन्च पर घुटनों के बल बैठा तो उसको इतनी ज़ोर की नींद

आयी कि वह तो पल भर में ही सो गया। उसको तो पता ही नहीं चला कि कब उसकी ऑख लग गयी। उसके सोते ही रानी वहॉ से भाग गयी।

कुछ मिनट बाद ही सैन्ड्रीना की ऑख खुल गयी। उसने देखा तो रानी तो वहॉ पर नहीं थी। उसने कई बार उफ़ उफ़ कहा। फिर वह महल वापस आ गया। वहॉ भी उसने रानी को ढूँढा पर वह वहॉ भी नहीं थी। अब उसकी समझ में आया कि वह रानी उससे क्या कहना चाह रही थी।

उसने वहॉ से पैसों का एक थैला उठाया और रानी को ढूँढने चल दिया।

सारा दिन चलने के बाद रात को वह एक सराय में आया। वहॉ उसने उस सराय वाले से पूछा कि क्या उसने सोने के तीन पहाड़ों की रानी को कहीं देखा है।

वह बोला — "मैंने खुद तो उसको नहीं देखा पर क्योंकि मैं दुनियॉ के सारे जानवरों का मालिक हूँ इसलिये मैं उनसे पूछूँगा अगर उन्होंने उसे कहीं देखा हो तो।"

उसने एक सीटी बजायी और तुरन्त ही कुत्ते, बिल्ले, चीते, शेर, बन्दर और बहुत सारे और जानवर वहॉ आ गये। सराय के मालिक ने उन सबसे पूछा — "क्या तुम लोगों में से किसी ने सोने के तीन पहाड़ों की रानी को देखा है?"

जानवर बोले — "नहीं। हमने नहीं देखा।"

यह सुन कर सराय के मालिक ने सब जानवरों को वापस भेज दिया। फिर वह सैन्ड्रीनो से बोला — "कल सुबह मैं तुमको अपने भाई के पास भेजूँगा। वह सारी मछलियों का मालिक है। वहाँ जा कर उससे पूछना कि उसकी मछलियाँ क्या कहती हैं।"

अगली सुबह सैन्ड्रीनो ने सराय के मालिक को पैसों का एक थैला दिया और उसके भाई के घर चला गया। जब सराय के मालिक के भाई ने सुना कि सैन्ड्रीनो को उसके भाई ने भेजा है तो उसने उसको अपनी सराय में बुलाया और उससे कहा कि अगर वह वहाँ थोड़ा सा रुके तो वह अभी अपनी सारी मछलियों को बुलाता है और उनसे पूछता है कि अगर उनमें से किसी ने उसे देखा हो तो।

उसने भी एक सीटी बजायी और सब तरह की मछलियाँ वहाँ आ पहुँची। पूछने पर कि क्या उन्होंने सोने के तीन पहाड़ों की रानी को देखा है उन सबने भी एक आवाज में कहा कि उन्होंने तो उसको नहीं देखा।

यह सुन कर उसने उन सब मछलियों को वापस भेज दिया और सैन्ड्रीनो से कहा — "कल तुमको मैं अपने दूसरे भाई को पास भेजूँगा। वह चिड़ियों का मालिक है। शायद उसकी किसी चिड़िया ने उसे देखा हो।"

सैन्ड्रीनो अगले दिन का बड़ी बेसब्री से इन्तजार करने लगा। जैसे ही सुबह हुई उसने उस भाई को भी पैसों का एक थैला दिया और वहाँ से चल दिया। चलते चलते वह तीसरी सराय में पहुँचा।

वहाँ के मालिक ने कहा मैं अभी तुम्हारा काम करता हूँ। कह कर उसने भी एक बार सीटी बजायी तो दुनियाँ भर की सारी चिड़ियें वहाँ आ गयीं। बस उनमें एक चिड़िया एक गरुड़[93] गायब था।

सराय के मालिक ने दूसरी सीटी बजायी तब वह आया और बोला — "अफसोस मुझे थोड़ी सी देर हो गयी। मैं राजा मरोन[94] के दरबार में एक दावत में गया हुआ था। वहाँ वह सोने के तीन पहाड़ों की रानी के साथ शादी कर रहे हैं।"

यह सुन कर तो सैन्ड्रीनो की सब उम्मीदें खत्म हो गयीं पर तब सब चिड़ियों के मालिक ने उससे कहा — "तुम दुखी न हो। हम इसका भी कोई न कोई रास्ता जरूर निकालेंगे।"

उसने गरुड़ से पूछा — "क्या तुम इस नौजवान को राजा मरोन के दरबार में ले जा सकते हो?"

गरुड़ बोला — "मैं इसको अभी ले जाता हूँ। पर मेरी एक शर्त है कि जब भी मैं पानी माँगू तो यह मुझे पानी दे। जब भी मैं रोटी माँगू तो यह मुझे रोटी दे। और जब भी मैं माँस माँगू तो यह मुझे माँस दे। नहीं तो मैं इसको समुद्र में फेंक दूँगा।"

उस नौजवान ने दो टोकरी भर कर रोटी रखीं। दो डिब्बे भर कर पानी रखा। और दो पौंड माँस रखा। सैन्ड्रीनो और यह सब ले

---

[93] Translated for the word "Eagle". See its oicture above.

[94] King Marone

कर वह गरुड़ हवा में उड़ चला। रास्ते में गरुड़ की हर चीज़ की मॉग तुरन्त ही पूरी कर दी गयी।

पर मॉस खत्म हो चुका था और उनको तो अभी समुद्र पार करना था। सो अगली बार गरुड़ ने जब मॉस मॉगा तो सैन्ड्रीनो कुछ और तो सोच नहीं सका उसने अपनी टॉग का मॉस काट कर उसको खिला दिया।

रानी ने उसको पहले से ही जादू का एक मरहम दे रखा था। मॉस काटने के बाद उसने वह मरहम अपनी टॉग पर लगा लिया तो उस मरहम से उसकी टॉग तुरन्त ही ठीक हो गयी।

गरुड़ उसको सीधे रानी के कमरे में ले गया। जैसे ही उन दो्नों ने एक दूसरे को देखा वे एक दूसरे से खुशी के मारे लिपट गये। फिर दोनों ने एक दूसरे से अपनी अपनी कहानी कही।

रानी सैन्ड्रीनो को राजा के पास ले गयी और उसको अपना बचाने वाला और दुलहा कह कर उसका परिचय कराया।

राजा ने भी सोचा कि यह नौजवान तो उसकी लड़की के लिये बिल्कुल ठीक दुलहा है सो उसने उन दोनों की शादी की घोषणा कर दी और शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयीं।

दोनों की शादी हो गयी। शादी की ये तैयारियॉ और खुशियॉ एक महीना और एक हफ्ते तक चलीं। शादी के बाद वे दोनों खुशी खुशी रहे।

Names of Jesus' 12 Apostles –

1. Simon Peter (brother of Andrew) - He was active in bringing people to Jesus – Bible writer
2. James (son of Zebedee and other brother of John) also called James the Greater
3. John (son of Zebedee and brother of James) – Bible writer
4. Andrew (brother of Simon Peter) – He was active in bringing people to Jesus
5. Philip od Bethsaida
6. Thomas (Didymus)
7. Bartholomew (Nathaniel) – He was one of the disciples to whom Jesus appeared at the Sea of Tiberias after his Resurrection. He was witness of the Ascension
8. Matthew (Levi) of the Capernaum
9. James (son of Alphaeus), also called "James the Lesser" Bible writer
10. Simon the Zealot (the Canaanite)
11. Thaddaeus-Judas (Lebbaeus) – brother of James the Lesser and brother of Matthew (Levi) of the Capernaum
12. Judas Iscariot who also betrayed him

The New Testament says the end of only two Apostles – Judas who betrayed Jesus and then killed himself; and James the son of Zebedee who was executed by Herod.

List of Stories of “Folktales of Italy-1”

1. Dauntless Little John
2. The Ship With Three Decks
3. The Man Who Came Out Only at Night
4. And Seven
5. Body Without Soul
6. Money Can Do Everything
7. The Little Shepherd
8. The Little Girl Sold With the Pears
9. The Snake
10. Three Castles
11. The Prince Who Married a Frog
12. The Parrot
13. Twelve Bulls
14. Crack and Crook
15. The Canary Prince
16. King Krin
17. Those Stubborn Souls
18. The Pot of Marjoram
19. The Billiard's Player
20. Animal Speech

List of Stories of “Folktales of Italy-2”

1. The Three Cottages
2. The Peasant Astrologer
3. The Wolf and the Three Girls
4. The Land Where One Never Dies
5. The Devotee of St Joseph
6. Three Crones
7. The Crab Prince
8. Silent For Seven Years
9. Pome and Peel
10. Cloven Youth
11. The Happy Man's Shirt
12. One Night in Paradise
13. Jesus and Saint Peterin Friuli
14. The Magic Ring
15. The King's Daughter Who Could Never Get Figs
16. The Three Dogs
17. Uncle Wolf

18. The King of Animals
19. Dear As Salt
20. The Queen of the Three Mountains of Gold

List of Stories of "Folktales of Italy-3"

1. The Dragon With Seven Heads
2. The Sleeping Queen
3. The Son of the Merchant from Milan
4. Salmanna Grapes
5. Enchanted Castle
6. The Old Woman's Hide
7. Olive
8. Catherine Sly Country Lass
9. The Daughter of the Sun
10. The Golden Ball
11. The Milkmaid Queen

List of Stories of "Folktales of Italy-4"

1. The North Wind's Gifts
2. The Sorceror's Head
3. Apple Girl
4. The Palace of the Doomed Queen
5. Fourteen
6. Crystal Rooster
7. A Boat For Land and Water
8. Louse Hide
9. The Love of the Three Pomegranates
10. The Mangy One
11. Three Blind Queens
12. One Eye
13. False Grandmother
14. Shining Fish
15. Miss North Wind and Mr Zephir
16. The Palace Mouse and the Field Mouse
17. Crack, Crook and Hook
18. First Sword and the Last Broom
19. Mrs Fox and Mr Wolf
20. The Five Scapegraces
21. The Tale of the Cats
22. Chick

List of Stories of "Folktales of Italy-5"

1. The Princesses Wed to the First Passer By
2. The Thirteen Bandits
3. Three Orphans
4. Sleeping Beauty and Her Children
5. Three Chicory Gatherers
6. Beauty With the Seven Dresses
7. Serpent King
8. The Crab With the Golden Eggs
9. Nick Fish
10. Misfortune
11. Pippina Serpent
12. Catherine the Wise
13. Ismailian merchant
14. The Dove
15. Dealer in Peas and Beans
16. The Sultan With the Itch

List of Stories of "Folktales of Italy-6"

1. The Wife Who Lived on Wind
2. Wormwood
3. The King of Spain and the Engkish Milird
4. The Bejeweled Boot
5. Lame Devil
6. Three Tales by Three Sons of Three Merchants
7. The Dove Girl
8. Jesus and St Peter in Sicily
9. The Barber's Timepiece
10. The Marriage of a Queen and a Bandit
11. The Seven Lamb Heads
12. The Two Sea Merchants
13. A Boat Loded With…
14. The King's Son in Henhouse
15. The Mincing Princess
16. Animal Talk and the Nosy Wife
17. The Calf With the Golden Horns
18. The Captain and The General

List of Stories of “Folktales of Italy-7”

1. The Peacock Feather
2. The Garden Witch
3. The Mouse With the Long Tail
4. The Two Cousins
5. The Two Muleteers
6. Giovannuza Fox
7. The Child Who Fed the Crucifix
8. Steward Truth
9. The Foppish King
10. The Princess With Horns
11. Giufa
12. Fra Ignazio
13. Solomon's Advice
14. The Man Who Robbed the Robbers
15. The Lion's Grass
16. The Convent of Nuns and the Monastery of Monks
17. St Anthony's Gift
18. March and the Shepherd
19. John Balento
20. Jump into My Sack

Some Other Books of Italian Folktales in Hindi

1353 **Il Decamerone.** By Giovanni Boccaccio. 3 vols
1550 **Nights of Straparola** By Giovanni Francesco Straparola. 2 vols.
1634 **Il Pentamerone.** By Giambattista Basile. 50 tales. 3 vols
1885 **Italian Popular Tales.** By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 vols

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आगयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022